हज़रत लुक़मान रज़ि०

लुक़मान

लुक़मान या हकीम लुक़मान अरबों की एक मशहूर शख़्सियत हैं, लेकिन उनके हालात और ज़िंदगी से मुताल्लिक़ तफ़्सीलात से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इतना ही इत्तिफ़ाक़ है कि वह एक बहुत बड़े दाना (हकीम) थे और उनकी हिक्मत भरी बातें 'सहीफ़ा लुक़मान' के नाम से उनके बीच मशहूर व मारूफ़ थे और उनसे मुताल्लिक़ दूसरे मामलों में आपस में टकराने वाली राएं पाई जाती हैं।

क़ुरआन और हज़रत लुक़मान

हज़रत लुक़मान का ज़िक्र क़ुरआन ने भी किया है और क़ुरआन की एक सूरः का नाम भी इसी वजह से 'सूरः लुक़मान' है और अगरचे उसने अपने सामने के मक़्सद के लिए उनके नसब और ख़ानदान की बहस में जाना पसन्द नहीं किया, फिर भी उनकी हिक्मत भरी बातों का जिस ढंग से ज़िक्र किया है, उससे लुक़मान की शख़्सियत पर एक हद तक ज़रूर रोशनी पड़ती है। इसलिए मुनासिब है कि उसको बयान करने के बाद यह फ़ैसला किया जाए कि ऊपर लिखी हर दो रायों में कौन-सी सही या क़ियास के क़रीब है।

तर्जुमा– *'और बेशक हमने लुक़मान को हिक्मत अ़ता की (और कहा कि) अल्लाह का शुक्र अदा करो। पस जो आदमी उसका शुक्र अदा करता है, वह अपने नफ़्स के फ़ायदे के लिए करता है और जो कुफ़्र करता है तो अल्लाह बे-परवाह है, तमाम तारीफ़ों का मालिक है और जिस वक़्त लुक़मान ने अपने बेटे से नसीहत करते हुए कहा, ऐ मेरे बेटे! अल्लाह का शरीक न ठहरा, बेशक शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है और हमने हुक्म किया इंसान को, उसके मां-बाप के बारे में कि उठाती है उसको उसकी मां तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ झेल कर और दो वर्ष के अन्दर दूध पिलाते रहना, यह कि मेरा शुक्रगुज़ार बन और अपने मां-बाप का शुक्रगुज़ार हो। आख़िर मेरी ही तरफ़ लौटना है और अगर तेरे मां-बाप तुझ पर सख़्ती करें इस बारे में कि मेरा शरीक ठहरा कि जिसके बारे*

Copyright OfflineDeeniApp

में वे नादानी और जिहालत में हैं, तो उसमें उन दोनों की पैरवी न कर और दुनिया की ज़िंदगी में उनके साथ अच्छा बर्ताव कर और पैरवी उस आदमी की कर कि जो सिर्फ़ मेरी तरफ़ रुजू करता है, फिर मेरी ही तरफ़ तुम सबको लौटना है। पस मैं उस वक़्त तुमको तुम्हारे किए की ख़बर दूंगा। ऐ मेरे बेटे! बिला शुबहा अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज़ छोटी होती है और वह पत्थर के अन्दर या आसमानों या ज़मीनों में कहीं भी हो, अल्लाह उसको ले आता है। बेशक अल्लाह बारीकी से देखने वाला ख़बरदार है। ऐ मेरे बेटे! क़ायम कर नमाज़ को और हुक्म कर भलाई का और बुराई से मना कर और जो तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर। बेशक ये अ़ज़ीमत की बातें हैं और तू अपने गालों को लोगों से (घमंड की वजह से) न फेर और ज़मीन पर इतरा कर न चल। बेशक अल्लाह किसी तकब्बुर और शेख़ी करने वाले को दोस्त नहीं रखता और चाल में बीच का रास्ता अपना और अपनी आवाज़ को नरम और पस्त कर। बेशक गधे की अवाज़ बहुत ही नापसन्दीदा आवाज़ है।'

(31 : 14-19)

इन आयतों में लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की हैं और हिक्मत व दानाई की जो बातें बताई हैं, उनमें इन बातों पर ज़ोर दिया है कि–

1. लोगों के साथ अच्छे व्यवहार से पेश आना चाहिए, यह न हो कि घमंड की वजह से मुंह मोड़ लिया जाए।

2. और न अल्लाह की ज़मीन में अकड़ कर चलो। यह मैं इसलिए कह रहा हूं कि अल्लाह घमंडी और अकड़ने वाले को पसन्द नहीं करता।

3. हमेशा चाल चलने में बीच का रास्ता अख़्तियार करना चाहिए।

4. और आवाज़ को बात-चीत में नर्म रखो, इसलिए कि चीख़ना-चिल्लाना इंसानों का काम नहीं है। अगर कड़ी और बेवजह बुलन्द आवाज़ पसन्दीदा चीज़ होती, तो गधे की आवाज़ तारीफ़ के क़ाबिल समझी जाती। उसकी आवाज़ सबसे बुरी आवाज़ समझी जाती है।

नुबूवत या हिक्मत

अगरचे एक रिवायत में यह कहा गया है कि हज़रत लुक़मान ﷺ एक

Copyright OfflineDeeniApp

नबी थे, लेकिन क़ुरआन के बयान का अन्दाज़ इसका साथ नहीं देता और किसी एक जुम्ले में भी इसका इशारा नहीं पाया जाता कि जो उनकी 'नुबूवत' के लिए दलील बनता हो। इसीलिए जम्हूर की राय यह है कि लुक़मान रह० अल्लाह के वली और हकीम व दाना थे।

कुछ अहम तफ़्सीरी नुक्ते

1. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को सबसे पहले जो अहम नसीहत की वह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराने से बचना और ख़ुदा को मानना है। उन्होंने शिर्क को बड़ा भारी ज़ुल्म (ज़ुल्मे अ़ज़ीम) फ़रमाया। असल में दीन हक़ में यही वह हक़ीक़त है जो 'हनीफ़' को मुश्रिक से अलग करती है और शिर्क ही ऐसा गुनाह है जो किसी हाल में बख़्शिश के क़ाबिल नहीं, मगर यह कि उससे तौबा कर ले।

2. *सूरः लुक़मान में 'व इज़ क़ा-ल लुक़मानु लि इब्निही' से 'लज़ुल्मुन अज़ीम' तक और फिर 'या बनी-य' से 'ल-सौतुल हमीर' तक हज़रत लुक़मान* ﷺ *की बातें बयान की गई हैं और बीच में 'वस्सैनलइंसानु' से 'उनब्बिउकुम बिमा कुन्तुम तामलून'* तक अल्लाह का अलग से इशादि मुबारक है, तो इसके लिए मुनासिब वजह यह है कि जब क़ुरआन ने ऐसे एक वाक़िए का ज़िक्र किया है, जिसमें बाप ने बेटे को नसीहतें की हैं, तो अल्लाह ने उम्मते मुस्लिमा को यह नसीहत करना ज़रूरी समझा कि जब बाप और मां की मुहब्बत का यह आ़लम है, तो दुनिया और आख़िरत किसी मामले में भी औलाद के लिए बिल्कुल ज़रूरी है कि वह अल्लाह की सही और हक़ीक़ी मारफ़त के बाद सबसे ज़्यादा मां-बाप की ख़िदमत और उनकी रज़ा हासिल करने को मुक़द्दम समझे। यहां तक कि अगर मां-बाप काफ़िर व मुश्रिक हों तब भी उसका फ़र्ज़ है उनकी ख़िदमत और उनके साथ अच्छा व्यवहार, नर्मी और नियाज़मन्दी को हाथ से न जाने दे, अलबत्ता अगर वह दीने हक़ से एराज़ और शिर्क के अख़्तियार पर ज़िद करें तो उसको क़ुबूल न करे। इसलिए कि अल्लाह की नाफ़रमानी में किसी की इताअ़त भी दुरुस्त नहीं है, चुनांचे इशादि नबवी है—

'ला ता-अ-तलि मिख़्लूक़िन फ़ी मासियतिल ख़ालिक़'

Copyright OfflineDeeniApp

लेकिन इस मुकालमे में भी अपने इंकार के वक़्त नर्मी और ढंग से बात करना न छोड़िए और सख़्त ज़ुबान इस्तेमाल न करे।

3. सूरः लुक़मान में जिन नसीहतों का ज़िक्र किया गया है उनमें अच्छे अख़्लाक़ और नर्मी पर उभारा गया है और घमंड, शेख़ी और बुरे अख़्लाक़ को बुरा बताया गया है। हज़रत लुक़मान ने भलाइयों का जो हुक्म दिया है और बुराइयों से जो रोका है, इन बातों का ख़ास तौर से इसलिए इंतिख़ाब फ़रमाया है कि कायनात में जितनी भी भलाई और बुराई पेश आती है, उन सबकी जड़ व बुनियाद यही होते हैं। चुनांचे नबी अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने भी मुसलमानों को इन बातों की अहमियत पर बहुत ज़्यादा तवज्जोह दिलायी है।

4. हज़रत लुक़मान ﷺ ने कड़ी और तेज़ आवाज़ से बात-चीत करने को भी मना फ़रमाया है, इसलिए कि नर्म बात-चीत अच्छे अख़्लाक़ का शोबा और कड़ी और तेज़ आवाज़ बुरे अख़्लाक़ का हिस्सा है और इसी बुनियाद पर बात करने के इस तरीक़े को 'गधे की आवाज़' का नाम दिया गया है।

5. हज़रत लुक़मान ने अपने बेटे को जो नसीहतें की हैं, उनमें यह भी कहा है कि ज़मीन पर अकड़ कर न चलो। इस मज़्मून को क़ुरआन मजीद ने सूरः बनी इसराईल की एक आयत में अजीब अन्दाज़ से बयान किया है—

'और ज़मीन में इतराता हुआ न चल, तू अपनी इस चाल से न ज़मीन को फाड़ सकेगा और न पहाड़ों की चोटियों तक लम्बा हो जाएगा।'

और इसके ख़िलाफ़ नर्म और अख़्लाक़ वाले इंसानों की यह कैफ़ियत है कि—

तर्जुमा—*'और जो रहमान के बन्दे (यानी हुक्मबरदार बन्दे) हैं, वे ज़मीन पर वक़ार और तवाज़ो के साथ चलते हैं और जब उनसे जाहिल लोग मुख़ातब होते हैं, तो वे (जिहालत से बचने के लिए) सलाम कहकर अलग हो जाते हैं।*

(25 : 63)

हज़रत लुक़मान की हिक्मत

पीछे की लाइनों में यह ज़िक्र आ चुका है कि अरब में लुक़मान की

Copyright OfflineDeeniApp

हिक्मत का फ़ाक़ा पड़ा था और वे अक्सर मज्लिसों में उनकी हिक्मत भरी बातों को नक़ल करते रहते थे, चुनांचे ताबिईन, सहाबा, बल्कि नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से भी इस सिलसिले के क़ौल नक़ल किए गए हैं और उनमें से कुछ नीचे दिए जाते हैं–

1. हिक्मत व समझदारी ग़रीब को बादशाह बना देती है।

2. जब किसी मज्लिस में दाख़िल हो तो पहले सलाम करो। फिर एक तरफ़ बैठ जाओ और जब तक मज्लिस वालों की बातें न सुन लो, ख़ुद बात शुरू न करो, पस अगर वे अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल हों, तो तुम भी उसमें से अपना हिस्सा ले लो और अगर वे फ़िज़ूल कामों में मश्ग़ूल हों तो वहां से अलग हो जाओ और दूसरी किसी अच्छी मज्लिस को हासिल करो।

3. अल्लाह तआ़ला जब किसी को अमानतदार बनाए, तो अमानत रखने वाले का फ़र्ज़ है कि उस अमानत की हिफ़ाज़त करे।

4. ऐ बेटे! अल्लाह से डर और दिखावे के तौर पर अल्लाह से डरने का मुज़ाहरा न कर कि लोग इस वजह से तेरी इज़्ज़त करें और तेरा दिल हक़ीक़त में गुनाहगार है।

5. ऐ बेटे! जाहिल से दोस्ती न कर कि वह यह समझने लगे कि तुझको उसकी जिहालत भरी बातें पसन्द हैं और दाना (समझदार आदमी) के ग़ुस्से को बेपरवाही में न टाल कि कहीं वह तुझसे जुदाई न अख़्तियार कर ले।

6. वाज़ेह रहे कि दानाओं की ज़ुबान में अल्लाह की ताक़त होती है, उनमें से कोई कुछ नहीं बोलता, मगर यह कि इस बात को अल्लाह तआ़ला इसी तरह करना चाहता हो।

7. ऐ बेटे! ख़ामोशी में कभी नदामत नहीं उठानी पड़ती और अगर कलाम चांदी है तो सुकूत सोना है।

8. बेटा! ग़ैज़ व ग़ज़ब से बचो, इसलिए कि ग़ज़ब की शिद्दत दाना के क़ल्ब को मुर्दा बना देती है।

9. बेटा! ख़ुश कलाम बनो, ख़ुश मिज़ाजी अख़्तियार करो, तब तुम लोगों की नज़रों में उस आदमी से भी ज़्यादा महबूब हो जाओगे जो हर वक़्त उसको दाद व दहिश करता रहता है।

Copyright OfflineDeeniApp

10. नर्मी दानाई (सूझ-बूझ) की जड़ है।

11. जो बोओगे, वही काटोगे।

12. अपने और अपने वालिद के दोस्त को महबूब रखो।

13. किसी ने लुक़मान रज़ि० से पूछा, सबसे ज़्यादा सब्र करने वाला आदमी कौन है? कहा, जिसके सब्र के पीछे ईज़ा (पीड़ा) न हो। फिर पूछा सबसे बड़ा आलिम कौन है? जवाब दिया जो दूसरों के इल्म के ज़रिए अपने इल्म में बढ़ौतरी करता रहे।

14. फिर सवाल किया, सबसे बेहतर आदमी कौन सा है? फ़रमाया, ग़नी। पूछने वाले ने फिर पूछा, ग़नी से मालदार मुराद है? जवाब में कहा, नहीं, बल्कि ग़नी वह है जो अपने अन्दर ख़ैर को तलाश करे तो मौजूद पाए, वरना ख़ुद को दूसरों से बेनियाज़ बनाए रखे।

15. किसी ने पूछा, सबसे बुरा आदमी कौन-सा है? फ़रमाया जो इसकी परवाह न करे कि लोग उसको बुराई करता देखकर बुरा समझेंगे।

16. बेटा! तेरे दस्तरख़्वान पर हमेशा नेकों का इज्तिमा रहे तो बेहतर है और मश्विरा सिर्फ़ उलेमा-ए-हक़ से लेना।

नसीहत और सबक़

1. इंसान अगर मासूम नबी व पैग़म्बर भी न हो, मगर हिक्मत व दानाई वाला हो, तब भी अल्लाह के नज़दीक उसका दर्जा बहुत बड़ा है। इसीलिए हज़रत लुक़मान को यह इज़्ज़त मिली कि अल्लाह ने क़ुरआन में उनकी तारीफ़ फ़रमाई और उम्मत के लिए उनकी कुछ उन नसीहतों और वसीयतों को नक़ल फ़रमाया जो उन्होंने अपने बेटे को की थीं, यहां तक कि क़ुरआन में एक सूरः उनके नाम से जोड़ दी गई।

2. अल्लाह के साथ शिर्क तमाम भलाइयों को मिटाकर इंसान को अल्लाह के सामने ख़ाली हाथ ले जाता है, इसलिए हमेशा उससे परहेज़ ज़रूरी है।

खुले शिर्क की तरह छिपा शिर्क भी इंसानी आमाल को उसी तरह खा लेता है, जिस तरह आग लकड़ी को खा लेती है और छिपे शिर्क में दिखावा, नुमाइश और शोहरत पाने का जज़्बा ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र है।

Copyright OfflineDeeniApp

3. मां-बाप के साथ अच्छा व्यवहार और उनके बड़प्पन को इस्लाम में इस दर्जा अहमियत हासिल है कि उनको मजाज़ी रब कहा है और उनकी ख़िदमत और उनके सामने सरे नियाज़ झुका देने को मां-बाप के इस्लाम व कुफ़्र दोनों हालतों में ज़रूरी क़रार दिया है और इसी अहमियत को देखते हुए जगह-जगह अपने हक़ यानी एक अल्लाह को मानने के साथ-साथ मां-बाप का ज़िक्र किया और उनको तमाम हक़ों पर मुक़द्दम रखा। (सूरः बनी इसराईल की आयतें 23-24) और मां-बाप के साथ अच्छे व्यवहार से मुताल्लिक़ हदीसें तो बहुत ज़्यादा मौजूद हैं, यहां तक कि यह कहा गया है कि–

'जन्नत मां के क़दमों के नीचे है।' (नसई)

अस्हाबे सब्त (सनीचर वाले)

सब्त और उसकी हुर्मत

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपनी उम्मत में अल्लाह की इबादत के लिए हफ़्ते के सात दिनों में से जुमा का दिन मुक़र्रर फ़रमाया था। हज़रत मूसा ﷺ को ज़माने में यहूदी बनी इसराईल ने अपनी रिवायती टेढ़ की बुनियाद पर हज़रत मूसा ﷺ से यह इसरार किया कि उनके लिए हफ़्ते (सनीचर) का दिन इबादत व बरकत का दिन मुक़र्रर कर दिया जाए।

हज़रत मूसा ﷺ ने पहले तो उनको हिदायत फ़रमाई कि वे अपनी ग़लत ढिठाई से बाज़ आ जाएं और इब्राहीमी मिल्लत के इस इम्तियाज़ को जो अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा और मक़्बूल है, हाथ से बर्बाद न होने दें। लेकिन जब उनका इसरार हद से आगे निकल गया तो अल्लाह की वह्य ने मूसा को यह इत्तिला दी कि अल्लाह तआ़ला ने उनकी बेजा ज़िद के नतीजे में जुमा की सआ़दत व बरकत को उनसे वापस ले लिया और उनकी मांग को मंज़ूर करते हुए उनके लिए हफ़्ता (सनीचर) को जुमा का क़ायम-मक़ाम बनवाए देता है, इसलिए आप उनको बता दें कि वे अपने इस मांगे हुए दिन की अज़्मत का अदब व एहतराम करें और इसकी हुर्मत क़ायम रखें। हम इस

Copyright OfflineDeeniApp

दिन में इनके लिए ख़रीदना-बेचना, खेती, तिजारत और शिकार को हराम करते और उसको सिर्फ़ इबादत के लिए ख़ास किए देते हैं।

कुरआन ने भी मुख़्तसर लफ़्ज़ों में इस इख़्तिलाफ़ का ज़िक्र किया है जो उन्होंने हफ़्ते में इबादत के लिए एक दिन ख़ास करने के बारे में अपने पैग़म्बर (मूसा ﷺ) के साथ किया था–

तर्जुमा–*'बेशक सब्त का दिन उन लोगों के लिए (इबादत का दिन) मुक़र्रर किया गया जो उसके मुताल्लिक़ झगड़ा करते थे और यक़ीनन तेरा रब ज़रूर क़ियामत के दिन उनके दर्मियान फ़ैसला कर देगा कि जिसके बारे में वे इख़्तिलाफ़ करते थे, उसमें हक़ क्या था, बातिल क्या था।'* (16 : 124)

चुनांचे मूसा ﷺ ने सब्त की तक़र्ररी के बारे में बनी इसराईल से पक्का अह्द लिया–

तर्जुमा–*'और हमने उन (बनी इसराईल) से कहा, सब्त (हफ़्ता) के बारे में हद से न गुज़रना और ख़िलाफ़वर्ज़ी न करना और हमने उनसे उनके बारे में बहुत सख़्त क़िस्म का वायदा लिया।* (4 : 154)

वाक़िया क्या था?

हज़रत मूसा ﷺ के मुबारक अह्द से 'एक लम्बे अर्से तक के बाद बनी इसराईल की एक जमाअ़त लाल सागर के किनारे आबाद हो गई थी। मछली उनका क़ुदरती शिकार था और महबूब मश्ग़ला बनी। वे उसके ख़रीदने-बेचने का कारोबार करते थे। ये लोग हफ़्ते के छः दिन मछली का शिकार खेलते और सब्त का दिन अल्लाह की इबादत में लगाते। इसलिए क़ुदरती तौर पर मछलियां छः दिन जान बचाने के लिए पानी की तह में छिपी रहतीं और सब्त के दिन पानी की सतह पर तैरती नज़र आती थीं। साथ ही अल्लाह तआ़ला ने इस तरीक़े से उनको आज़माया और उनकी ईमानी क़ूवत का इम्तिहान लिया, यहां तक कि सब्त के अलावा हफ़्ते के बाक़ी दिनों में मछलियों का हासिल होना बहुत मुश्किल हो गया और छः दिन यह कैफ़ियत रहने लगी कि गोया लाल सागर में मछली का नाम व निशान बाक़ी नहीं रहा, मगर सब्त के दिन वे इस बड़ी तायदाद में पानी पर तैरती नज़र आतीं कि जाल और कांटे

Copyright OfflineDeeniApp

के बग़ैर होता तो आसानी से पकड़ में आ सकती थीं।

कुछ दिनों तक तो यहूदी इस हालत को सब्र करते हुए देखते रहे, आख़िर न रह सके और उनमें से कुछ ने तो ख़ुफ़िया तरीक़े से ऐस-ऐसे हीले ईजाद कर लिए कि जिससे यह भी ज़ाहिर न हो सके कि वे सब्त के हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी कर रहे हैं और सब्त के दिन मछलियों की कसरत से आने से भी फ़ायदा उठा लें।

चुनांचे कुछ तो यह करते कि जुमा की शाम को लाल सागर के क़रीब गढ़े खोद लेते और नदी से इन गढ़ों तक नहर की तरह एक गोल नहर निकाल लेते और जब सब्त के दिन पानी की सतह पर मछलियां तैरने लगतीं तो वे दरिया के पानी को खोल देते ताकि पानी गढ़ों में चला जाए और इस तरह मछलियां भी पानी के बहाव से उनमें चली जाएं और जब सब्त का दिन गुज़र जाता तो इतवार की सुबह को इन मछलियों को गढ़े में से निकाल कर काम में लाते।

और कुछ यह करते कि जुमा के दिन नदी में जाल और कांटे लगा आते, ताकि सब्त के दिन उनमें मछलियां धंस जाएं और इतवार की सुबह को इन जालों और कांटों में गिरफ़्तार मछलियों को पकड़ लाते और ये सब अपनी इन चालों पर बेहद ख़ुश नज़र आते थे, चुनांचे जब उनके उलेमा-ए-हक़ और उम्मत के मुख़्लिस लोगों ने उनको इस हरकत से रोका, तो उन्होंने एतराज़ करने वालों को यह जवाब दिया कि अल्लाह का हुक्म यह है कि सब्त के दिन शिकार न करो, इसलिए हम इसकी तामील में सब्त के दिन शिकार नहीं करते, बल्कि इतवार के दिन करते हैं, बाक़ी ये तरकीबें मना नहीं हैं और अगरचे उनका दिल और ज़मीर मलामत करता था, मगर उनकी टेढ़ उनको यह जवाब देकर के मुतमइन कर देती थी कि हमारा यह हीला अल्लाह के यहां ज़रूर चल जाएगा।

असल बात यह थी कि वे दीन के हुक्मों पर सदाक़त व सच्चाई के साथ अमल नहीं करते थे और इसीलिए शरई हीले निकाल कर उनकी शक्ल से बचना चाहते थे, गोया अपने आप धोखे में पड़े हुए थे और दूसरों को भी गुमराह करते थे, चुनांचे नतीजा यह निकला कि इन कुछ हीला ढूंढ़ने वाले

Copyright OfflineDeeniApp

इंसानों की इन हरकतों का इल्म दूसरे हीला ढूंढने वालों को भी हुआ और उन्होंने भी इसकी तक़्लीद शुरू कर दी और आख़िरकार बस्ती की एक बड़ी जमाअ़त एलानिया इन हीलों की आड़ में सब्त की हुर्मत की ख़िलाफ़वर्ज़ी करने लगी।

इस जमाअ़त की ये ज़लील हरकतें देखकर बस्ती ही में एक सआ़दतमंद जमाअ़त ने हिम्मत की और उनके मुक़ाबले में आकर उनको इस बदअ़मली से बाज़ रखने की कोशिश की और नेकी फैलाने और बुराई को मिटाने के फ़रीज़े को अदा किया, मगर उन्होंने कुछ परवाह नहीं की और अपनी हरकत पर क़ायम रहे, तब सआ़दतमंद जमाअ़त के दो हिस्से हो गए। एक ने दूसरे से कहा कि इन लोगों को नसीहत करना और समझाना बेकार है। ये बाज़ आने वाले नहीं, क्योंकि ये इस काम को अगर गुनाह समझ कर करते, तो यह उम्मीद थी कि शायद किसी वक़्त बाज़ आकर तौबा कर लें। लेकिन जबकि ये शरई हीले तलाश कर अपनी बदअ़मली पर नेकी का परदा डालना चाहते हैं, तो हमको यक़ीन होता जाता है कि इस जमाअ़त पर बहुत जल्द अल्लाह का अ़ज़ाब आने वाला है या ये हलाक कर दिए जाएंगे या किसी सख़्त अ़ज़ाब में डाल दिए जाएंगे, इसलिए अब इनसे कोई छेड़ख़ानी न करो।

यह सुनकर सआ़दतमंद जमाअ़त के दूसरे हिस्से ने कहा कि हम इसलिए ऐसा करते हैं कि उनको यह उज़्र पेश कर सकें कि हमने आख़िर वक़्त तक उनको समझाया और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा अदा किया, लेकिन उन्होंने किसी तरह नहीं माना, साथ ही हम मायूस नहीं हैं, बल्कि उम्मीद रखते हैं कि अजब नहीं उनको तौफ़ीक़ मिल जाए और ये अपनी बदअ़मली से बाज़ आ जाएं।

बहरहाल हीला तलाश करने वाली जमाअ़त अपने हीलों पर क़ायम रही और सब्त की हुरमत और उस दिन में शिकार के मना करने का इंकार करके, और हुक्मों से बिल्कुल ग़ाफ़िल और बेपरवाह होकर निडर और बेबाक हो गई, तब अचानक हक़ की ग़ैरत को हरकत हुई और मोहलत के क़ानून ने पकड़ की शक्ल अख़्तियार कर ली, यानी अल्लाह तआ़ला का हुक्म हो गया कि जिस तरह तुमने मेरे क़ानून की असल शक्ल व सूरत को हीलों के ज़रिए मस्ख़ कर दिया, अ़मल के बदले के क़ानून के मुताबिक़ उसी तरह तुम्हारी शक्ल व

Copyright OfflineDeeniApp

सूरत भी मस्ख़ कर दी जाती है। ताकि 'पादाशे अ़मल अज़ जिंसे अ़मल' (अ़मल का बदला अ़मल के जिंस से है) के मुज़ाहरे से दूसरे लोग भी सबक़ व नसीहत हासिल करें, चुनांचे अल्लाह जल्ल शानुहू ने 'कुन' के इशारे से उनको बन्दरों और सुअरों की शक्ल में मस्ख़ कर दिया और वह इंसानी शरफ़ से महरूम होकर ज़लील व ख़्वार हैवानों में तब्दील हो गए।

तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि सआ़दतमंद जमाअ़त का जो हिस्सा नेकी का हुक्म और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा अदा करता रहा, उसने जब यह देखा कि ढीठ और सरकश जमाअ़त किसी तरह हक़ पर कान नहीं धरती तो मजबूर होकर उसने इनकी मदद करना छोड़ दिया और खाना-पीना और लेना-देना, ग़रज़ हर क़िस्म का मेल-जोल ख़त्म कर दिया, यहां तक कि अपने मकानों के दरवाज़ों तक को उन पर बन्द कर दिए, ताकि किसी क़िस्म का ताल्लुक़ बाक़ी न रहे, चुनांचे जिस दिन बद-किरदारों पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल हुआ, तो उनके मामले की इस जमाअ़त को घंटों ख़बर न हुई, लेकिन जब काफ़ी वक़्त गुज़र गया और इस तरफ़ से किसी इंसान की नक़्ल व हरकत महसूस न हुई, तब उनको ख़्याल हुआ कि मामला गड़बड़ है, इसलिए वहां जाकर देखा तो सूरतेहाल इस दर्जा अजीब थी कि जिसे वे सोच भी नहीं सकते थे यानी वहां इंसानों की जगह बन्दर और ख़िंज़ीर थे जो अपने इन रिश्तेदारों को देखकर क़दमों में लोटते और अपनी इस ख़राब हालत को इशारों से ज़ाहिर करते थे। सआ़दतमन्द जमाअ़त ने हसरत व यास के साथ उनसे कहा कि क्या हम तुमको बार-बार इस ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब से नहीं डराते थे? उन्होंने यह सुना तो हैवानों की तरह सर हिलाकर इक़रार किया और आंखों से आंसू बहाते हुए अपनी ज़िल्लत व रुसवाई का दर्दनाक नज़ारा पेश किया।

तर्जुमा– *'और (ऐ यहूदियो!) तुम बेशक (अपने आगे चलने वालों में से) उन लोगों को अच्छी तरह जानते हो जो सब्त के बारे में अल्लाह के हुक्मों की हदें पार कर गए थे और हमने उनके लिए कह दिया, तुम ज़लील बन्दर हो जाओ, पस हमने उस बस्ती के उन बदबख़्त लोगों को गिर्द व पेश के लोगों के लिए सबक़ और ख़ुदा से डरने वालों के लिए नसीहत बना दिया।'*

(2 : 65-66)

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा–'और (ऐ पैग़म्बर!) बनी इसराईल से उस शहर के बारे में पूछो जो समुन्दर के किनारे वाक़े था और जहां सब्त के दिन लोग ख़ुदा की ठहराई हुई हद से बाहर हो जाते थे। सब्त के दिन उनकी चाही मछलियां पानी पर तैरती हुई उनके पास आ जातीं, मगर जिस दिन सब्त न मनाते, न आतीं, इस तरह हम उन्हें आज़माइश में डालते थे। नाफ़रमानी की वजह से जो वे किया करते थे और जब उस शहर के बाशिंदों में से एक गिरोह ने (उन लोगों से जो नाफ़रमानों को वाज़ व नसीहत करते थे) कहा, तुम ऐसे लोगों को (बेकार) नसीहतें क्यों करते हो, जिन्हें (उनकी शक़ावत की वजह से) या तो अल्लाह हलाक कर देगा या निहायत सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा। उन्होंने कहा, इसलिए करते हैं ताकि तुम्हारे परवरदिगार के हुज़ूर माज़रत कर सकें (कि हमने अपना फ़र्ज़ अदा कर दिया) और इसलिए भी कि शायद ये लोग बाज़ आ जाएं। फिर जब ऐसा हुआ कि उन लोगों ने वे तमाम नसीहतें भुला दीं जो उन्होंने कही थीं, तो हमारी पकड़ ज़ाहिर हो गई। हमने उन लोगों को तो बचा लिया जो बुराई से रोकते थे मगर शरारत करने वालों को एक ऐसे अ़ज़ाब में डाला कि जो महरूमी और नामुरादी में मुब्तला करने वाला अ़ज़ाब था, उन नाफ़रमानियों की वजह से, जो वे किया करते थे। फिर जब वे इस बात में हद से ज़्यादा सरकश हो गए, जिससे उन्हें रोका गया था, तो हमने कहा बन्दर हो जाओ ज़िल्लत व ख़्वारी से ठुकराए हुए।' (7 : 163-165)

तर्जुमा–(ऐ पैग़म्बर!) कह दीजिए, क्या मैं तुमको बताऊं कि क़ियामत के दिन अल्लाह के नज़दीक जज़ा (बदले) के एतबार से कौन सबसे बुरा होगा? वह आदमी होगा जिस पर अल्लाह ने लानत की और उस पर ग़ज़बनाक हुआ और वे जिनमें से उसने बन्दर और ख़िंज़ीर की शक्ल में मस्ख़ कर दिए और जिसने उनमें से शैतान (या बुत) की पूजा की। यही हैं सबसे बुरे दर्जे वाले और सीधे रास्ते से बहुत दूर भटके हुए (यानी ऐ बनी इसराईल! हम सबसे बुरी जज़ा के हक़दार नहीं हैं, बल्कि तुम हो जिनके ये कुछ आ़माल व अतवार हैं।)'

तर्जुमा–ऐ अह्ले किताब! तुम उस किताब पर ईमान ले आओ जो हमने तुम पर उतारी है, जो उसकी तस्दीक़ करने वाली है जो तुम्हारे पास है (यानी

Copyright OfflineDeeniApp

तौरात), इससे पहले ईमान लाओ कि हम चेहरों को मिटा डालें और उनकी पीठ पर उनको लगा दें या हम उन पर लानत करें जिस तरह हमने सब्त वालों पर लानत की और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहने वाला है। (4 : 47)

वह जगह

जिस बस्ती पर यह हादसा गुज़रा, उसका नाम क्या है? क़ुरआन सूरः आराफ़ में सिर्फ़ यह बयान करता है कि वह समुन्दर के साहिल पर वाक़े थी—'अल-क़रयतुल्लती कानत हाज़िरतल बह्र', मगर तफ़्सीर लिखने वालों ने उसके तै करने में कई नाम लिए हैं। एक क़ौल यह है कि उस बस्ती का नाम ऐला था और यह लाल सागर के साहिल पर वाक़े थी। अरब जुग़राफ़िया (Geography) के माहिर करते हैं कि जब कोई आदमी तूरे सीना से गुज़रकर मिस्र को रवाना हो तो तूरे सीना की तरफ़ समुन्दर के साहिल पर यह बस्ती मिलती थी या यों कह लीजिए कि मिस्र का बाशिंदा अगर मक्का का सफ़र करे तो रास्ते में यह शहर पड़ता था।

(मौलाना मुहम्मद हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने इसी क़ौल को तर्जीह दी है)

हादसे का ज़माना

क़ुरआन के बयान के अन्दाज़ और महान तफ़्सीर लिखने वालों की शरह व तफ़्सील से यह साबित होता है कि अस्हाबे सब्त का यह वाक़िया हज़रत मूसा ﷺ और हज़रत दाऊद ﷺ के दर्मियानी ज़माने (लगभग 1100 क़ब्ल मसीह) में किसी ऐसे वक़्त पेश आया कि अब ऐला में कोई नबी मौजूद नहीं थे। इसलिए क़ुरआन ने सिर्फ़ उन्हीं का ज़िक्र किया और किसी नबी या पैग़म्बर का ज़िक्र नहीं किया और मारूफ़ का हुक्म देने और बुराई से रोकने का फ़रीज़ा वहां के उलेमा के सुपुर्द था।

कुछ अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें

सूरः बक़रः में 'सब्त' वालों के तज़्क़रे में आयत 2 : 60 में गिर्द व पेश

Copyright OfflineDeeniApp

के 'लोगों' से क्या मुराद है? इसके जवाब में तफ़्सीर लिखने वालों के कई क़ौल हैं–

1. बेहतर क़ौल हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया है, यानी इनसे वे बस्तियां मुराद हैं जो ऐला के आस-पास आबाद थीं।

2. सूरः माइदा में आयत 5 : 60 में 'बन्दर और ख़िंज़ीर की शक्ल में मस्ख़ कर दिए।' हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस गिरोह पर अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ, उसके नौजवान बन्दर की शक्ल में बिगाड़ दिए गए और बूढ़े ख़िंज़ीर की शक्ल में बिगाड़ दिए गए।

बिगाड़ने की हक़ीक़त

इंसान के बन्दर और ख़िंज़ीर हो जाने के क्या मानी हैं? जम्हूर की राय यह है कि इससे मस्ख़ हक़ीक़ी मुराद है यानी वे लोग जिन पर अ़ज़ाब मुसल्लत हुआ सूरत-शक्ल के एतबार से बन्दर और ख़िंज़ीर बना दिए गए।

मस्ख़ की गई क़ौमों का अंजाम

चुनांचे यही वजह है कि सही हदीसों (मुस्नद अहमद) में खोल कर लिखा गया है कि जो क़ौमें जानवरों की शक्ल में मस्ख़ हुई हैं, वे तीन दिन से ज़्यादा ज़िंदा नहीं रहीं, यानी मस्ख़ का अ़ज़ाब उनके अन्दर और ज़ाहिर को इस दर्जा फ़ासिद और गन्दा कर देता है कि वे फ़िर ज़िंदा नहीं हो सकतीं और जल्द ही मौत की गोद में चली जाती हैं।

नतीजे और सबक़

1. 'नेकियों का हुक्म देना और बुराई से रोकना' शानदार फ़रीज़ा (ज़िम्मेदारी) है नबियों की बेसत का बड़ा मक़्सद भी इस फ़र्ज़ को पूरा करना है जब किसी क़ौम और उम्मत में कोई नबी या रसूल मौजूद न हो तो फिर उम्मत के उलेमा के ज़िम्मे वाजिब है कि वे इस फ़र्ज़ को अंजाम दें, चुनांचे क़ुरआन और सहीह हदीसों ने इस फ़र्ज़ की तरफ़ बहुत ज़्यादा अहमियत के साथ तवज्जोह दिलाई है और तामील करने वाले के अज्र व सवाब की बशारत

Copyright OnlineDeenApp

और तर्क करने वाले को सज़ा की हक़दार क़रार देता है।

2. इंसान की अलग-अलग गुमराहियों में से बहुत बड़ी गुमराही यह भी है कि अल्लाह के हुक्मों से बचने के लिए हीले-बहाने तलाश कर हराम को हलाल और हलाल को हराम बनाने की कोशिश करे। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उम्मते मुस्लिमा को सख़्त ताकीद फ़रमाई है कि वे ऐसी गुमराही की ओर हरगिज़ क़दम न उठाएं और अपने अ़मल का दामन उससे बचाए रखें।

3. फ़र्ज़ के अदा करने में इसकी परवाह नहीं करनी चाहिए कि जिनके मुक़ाबले में फ़रीज़ा अंजाम दिया जा रहा है, वे इसको क़ुबूल करते हैं या नहीं।

अस्हाबुर्रस्स

(लगभग 630 क़ब्ल मसीह या नामालूम मुद्दत)

रस्स

डिक्शनरी में 'रस्स' के मानी पुराने कुएं के हैं, इसलिए 'अस्हाबुर्रस्स' के मानी हुए कुएं वाले। क़ुरआन ने इस निस्बत के साथ एक क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी के बदले में उसकी हलाकत व बर्बादी का ज़िक्र किया है।

क़ुरआन और अस्हाबुर्रस्स

क़ुरआन ने सूरः फ़ुर्क़ान और सूरः क़ाफ़ में इनका ज़िक्र किया है और जिन क़ौमों ने नबियों ﷺ के झुठलाने और उनकी खिल्ली उड़ाने की वजह से हलाकत व तबाही मोल ली, उनकी लिस्ट में उनका नाम सिर्फ़ बयान कर दिया है और हालात व वाक़िए से कोई छेड़ नहीं की।

तर्जुमा–*'और आ़द, समूद और अस्हाबुर्रस्स को और उनके दर्मियानी ज़माने की बहुत-सी (क़ौमों) को (हमने हलाक कर दिया) और हमने हर एक के वास्ते मिसालें बयान कीं और हमने इन सबको हलाक कर दिया।'*

(25 : 38-39)

तर्जुमा–*'इनसे पहले भी नूह की क़ौम ने और कुएं वालों ने और समूद,*

Copyright OfflineDeeniApp

आद, फ़िरऔन, 'बिरादराने लूत' 'अस्हाबे ऐकः' 'तुब्बअ़' की क़ौम के रसूलों को झुठलाया। इनमें से हर एक ने रसूलों को झुंठलाया, पस उन पर अ़ज़ाब लाज़िम हुआ।' (50 : 12-14)

अस्हाबुर्रस्स

इनको अस्हाबुर्रस्स क्यों कहते हैं? इसके जवाब में तफ़्सीर लिखने वाले उलेमा के क़ौल इतने अलग-अलग हैं कि सही हक़ीक़त खुलने के बजाए और ज़्यादा छुप गई हैं। इन क़ौलों में से एक तस्क़ीक़ मिस्र के आज के मशहूर आलिम फ़रजुल्लाह ज़की कुर्दी की है। वह कहते हैं कि लफ़्ज़ रस्स 'अरस' का छोटा रूप है और यह उस मशहूर शहर क नाम है जो क़फ़क़ाज़ के इलाक़े में वाक़े है। अल्लामा ज़की के इस क़ौल की ताईद इब्ने कसीर के उस बयान से होती है कि कुछ तफ़्सीर लिखने वाले कहते हैं कि आज़रबाईजान में एक पुराना कुंवा 'रस्स' था। इस घाटी में रहने वाले इसी वजह से 'अस्हाबुर्रस्स' (रस्स वाले) कहलाते थे।

सही बात

इस मसले में क़ुरआन का ज़ाहिर यह साबित करता है कि यह वाक़िया यक़ीनन हज़रत मसीह से पहले हो गुज़रा है। अब रही यह बात कि यह हज़रत मूसा और ईसा ﷺ के दर्मियान के ज़माने की किसी क़ौम का ज़िक्र है या किसी पुरानी क़ौम का तो क़ुरआन ने इसे छेड़ा नहीं और ऊपर दी गई तफ़्सीरी रिवायतों से इसका क़तई फ़ैसला नामुम्किन है, अलबत्ता मेरा ज़ेहन आख़िरी क़ौल (ऊपर ज़िक्र किए गए) को तर्जीह देता है।

बहरहाल, क़ुरआन का जो मक़्सद सबक़ और नसीहत है, वह अपनी जगह साफ़ और वाज़ेह है और ये तारीख़ी बहसें और तै की गई चीज़ें इसको रोक नहीं रही हैं, बल्कि एक सबक़ लेने वाली निगाह के लिए यह काफ़ी व शाफ़ी है कि जो क़ौमें इस दुनिया में अल्लाह के पैग़ामे हक़ को ठुकराती और उसके ख़िलाफ़ बग़ावत और सरकशी का झंडा ऊपर किए रहती हैं और बराबर मोहलत और ढील देने के बावजूद वे अपने घमंड और फ़साद भरी ज़िंदगी को

Copyright OfflineDeeniApp

छोड़ कर के भला और पाक ज़िंदगी बसर करने के लिए तैयार नहीं होतीं, तो फिर उन पर अल्लाह तआ़ला की कड़ी पकड़ *'बत्शे शदीद'* आ जाती है और वह बे-यार व मददगार हलाक व बर्बाद कर दी जाती हैं।

सबक़ और नसीहत

1. इंसानी कायनात के पास जिस वक़्त से अपनी तारीख़ का भंडार मौजूद है, वह इस हक़ीक़त को ख़ूब अच्छी तरह जानती है कि दुनिया की जिस क़ौम ने भी अल्लाह के पैग़ामे हक़ को मज़ाक़ उड़ाने का मामला किया और अल्लाह के पैग़म्बरों और हादियों के साथ सरकशी और शरारत को जायज़ रखा, उनकी ज़बरदस्त ताक़त व शौकत और शानदार तमद्दुन के बावजूद क़ुदरत के हाथों ने हलाक व बर्बाद करके उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और आसमानी या ज़मीनी सबक़ भरे हुए अ़ज़ाब ने दुनिया से मिटाकर रख दिया, मगर यह अजीब बात है कि अपने पहलों के दर्दनाक अंजाम को देखने और सुनने के बाद भी उनकी वारिस क़ौमों ने तारीख़ को दोहराया और उसी क़िस्म की हरकतों को अख़्तियार किया, जिनके अंजाम में उनके अगलों को बुरे दिन देखने पड़े थे। 'इन-न हाज़ा ल शैउन अजीब'

2. अगर इंसान इस ज़िंदगी में इन दो सच्चाइयों को जान-समझ ले, तो हमेशा वाली ज़िंदगी में भी नाकाम नहीं रह सकता और ज़िंदगी के यही वे राज़ हैं जिन पर चलकर क़ौमें *'अस्हाबुलजन्नः'* कहलाईं और इनसे ग़ाफ़िल रहकर *'अस्हाबुन्नार'* कहलाने की हक़दार हुईं।

बैतुलमक़्दिस और यहूद

(604 क़ब्ल मसीह से 561 क़ब्ल मसीह तक और 70 ई. से 18 हि. यानी 639 ई. तक)

तम्हीद—पिछले पन्नों में यह बात साफ़ की जा चुकी है कि क़ुरआन पिछली क़ौमों के तारीख़ी वाक़ियों यानी उनके रुश्द व हिदयत के क़बूल व इंकार और नेक व बद नतीजों के हालात सामने लाने और सबक़ और नसीहत हासिल करने की जगह-जगह तर्ग़ीब देता और ख़ुद भी इसीलिए पिछली क़ौमों

Copyright OfflineDeeniApp

के इन वाक़ियों को ज़्यादा से ज़्यादा बयान करता है। पिछली क़ौमों के इन हालात व वाक़ियात में से जो बदकिरदार और नेक किरदार इंसानों के दर्मियान फ़र्क़ पैदा करते और क़ौमों की इंफ़िरादी और इज्तिमाई इस्लाह व इंक़िलाब के सबक़ व नसीहत का सरमाया साबित होते हैं, एक अहम वाक़िया वह भी है जो यहूदी इसराईल की लगातार शरारतों और फ़सादों के कामों की वजह से दो बार मुक़द्दस हैकल और यरूशलम व बैतुल मक़्दिस की तबाही व बर्बादी और ख़ुद उनकी ग़ुलामी और रुसवाई की शक्ल में ज़ाहिर हुआ और जिसने उनकी क़ौमी ज़िल्लत और इज्तिमाई हलाकत पर हमेशा के लिए मुहर लगा दी।

बैतुल मक़्दिस

बैतुल मक़्दिस की तामीर का वाक़िया हज़रत सुलैमान ﷺ के वाक़ियों के ज़िम्न में तफ़्सील के साथ बयान हो चुका है। यह पाक जगह अपने हैकल (मस्जिद) की वजह से बनी इसराईल का क़िब्ला रही है और यह मुक़द्दस मक़ाम बनी इसराईल के बेशुमार नबियों के दफ़न होने की जगह है और इसकी अज़्मत न सिर्फ़ यहूदियों और ईसाइयों ही की निगाह में है, बल्कि इसको मुसलमान भी मुक़द्दस जगह मानते और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मेराज के वाक़िए ने इसके तक़द्दुस को और भी चार चांद लगा दिए हैं। जब भी कोई मुसलमान सूरः इसरा की तिलावत करता है, उसके दिल में इस जगह का तक़द्दुस व जलाल असर किए बग़ैर नहीं रहता।

तर्जुमा– *'पाकी है उस ज़ात के लिए जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल०) को रातों रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा तक सैर कराई, वह मस्जिदे अक़्सा जिसके हर तरफ़ हमने बड़ी बरकत दी है और इसलिए सैर कराई कि अपनी निशानियां दिखाएं। बेशक वही ज़ात है जो सुनने वाली, देखने वाली है।'* (17 : 1)

बनी इसराईल को तंबीह (चेतावनी)

क़ुरआन कहता है कि हमने किताब (सुहुफ़े अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम) में

Copyright OfflineDeeniApp

पहले से बनी इसराइल को आगाह कर दिया था कि तुम दो बार सख़्त फ़िला व फ़साद और सरकशी व बग़ावत करोगे और उनके इस मुक़द्दस जगह पर फ़ित्ने पैदा करोगे और उसके बदले में दोनों बार तुमको ज़िल्लत व हलाकत का मुंह देखना पड़ेगा और जिस सरज़मीन को तुम बहुत ज़्यादा महबूब रखते हो, वह भी दो बार ज़ालिमों के हाथों तबाह व बर्बाद होगी।

इसके बाद हम फिर एक बार तुम पर रहम करेंगे और सआ़दत व फ़लाह की तरफ़ दावत देंगे, पस अगर तुमने पिछले वाक़ियों से इबरत व मौअ़ज़त हासिल करके हक़ की उस दावत को लब्बैक कहा और उसको ख़ुशदिली से कुबूल किया, तो दुनिया की कोई ताक़त तुम्हारी इस सआ़दत को नहीं छीन सकती और अगर तुम्हारी तारीख़ी टेढ़ और सरकशी और हक़ के साथ बग़ावत और मुख़ालफ़त ने तुम्हारा साथ न छोड़ा और गुज़रे हुए वाक़ियों की तरह इस बार भी तुमने फ़साद व गुमराही को अपनाया, तो हमारी ओर से भी अ़मल के बदले का क़ानून उसी तरह फिर दोहराया जाएगा और इसके बाद तुम पर हमेशा के लिए ज़िल्लत व रुसवाई की मुहर लगा दी जाएगी और यह सब कुछ तो दुनिया का मामला है और ऐसे सरकशों के लिए आख़िरत में बहुत बुरा ठिकाना जहन्नम ही है।

तर्जुमा–*'और हमने किताब (सुहुफ़े अंबिया) में बनी इसराईल को इस फ़ैसले की ख़बर दे दी थी कि तुम ज़रूर मुल्क में शर व फ़साद फैलाओगे और बहुत ही सख़्त दर्जे की सरकशी करोगे, फिर जब दो वक़्तों में से पहला वक़्त आ गया, तो ऐ बनी इसराईल! हमने तुम पर अपने ऐसे बन्दे भेज दिए जो बड़े ही ख़ौफ़नाक थे, पस वे तुम्हारी आबादियों के अन्दर फैल गए और अल्लाह का वायदा तो इसीलिए था कि पूरा होकर रहे, फिर (देखो) हमने ज़माने की गर्दिश तुम्हारे दुश्मनों के ख़िलाफ़ और तुम्हारे मुवाफ़िक़ कर दी और माल व दौलत और औलाद के ज़्यादा होने से तुम्हारी मदद की और तुम्हें फिर ऐसा बना दिया कि बड़े जत्थे वाले हो गए। अगर तुमने भलाई के काम किए तो अपने ही लिए किए और अगर बुराइयां कीं तो भी अपने ही लिए कीं। फिर जब दूसरे वायदे का वक़्त आ गया (तो हमने अपने दूसरे) बन्दों को भेज दिया' था कि तुम्हारे चेहरों पर रोशनाई की कालिख फेर दें और उसी तरह*

Copyright OfflineDeeniApp

(हैकल) मस्जिद में दाख़िल हो जाए, जिस तरह पहली बार हमलावर घुसे थे और जो कुछ पाएं, तोड़-फोड़ कर बर्बाद कर डालें। कुछ अजब नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार तुम पर रहम फ़रमाए, (अगर अब भी बाज़ आ जाओ), लेकिन अगर तुम फिर सरकशी-फ़साद की तरफ़ लौट आओगे तो हमारी तरफ़ से अ़मल का बदला लौट आएगा और हमने हक़ के इंकारियों के लिए जहन्नम का क़ैदख़ाना तैयार कर रखा है।' (17-814)

यहां 'अल-किताब' से मुराद बनी इसराईल के नबियों के वे सहीफ़े हैं जिनमें यहूदियों के दो बार सख़्त फ़साद और सरकशी करने और उसकी बदौलत बैतुल मक़्दिस की बर्बादी और उनके हलाक और ग़ुलाम बनकर ज़लील व रुसवा होने के बारे में वे पेशेनगोइयां की गई थीं, जो इलहाम व वह्य के ज़रिए उनको अल्लाह की जानिब से मालूम हुई थीं। चुनांचे मौजूदा तौरात में यसइयाहु हिज़क़ील, यरमियाह और ज़करीया के सहीफ़ों में उनका अब भी ज़िक्र किया गया है और इन सहीफ़ों के बड़े हिस्से में इस क़िस्म की पेशीनगोइयां पाई जाती हैं और इन तीनों सहीफ़ों में दो बार के इन फ़सादों और फ़सादों से मुताल्लिक़ अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से सख़्त सज़ा का जिस तफ़्सील के साथ ज़िक्र है उसके एक-एक हर्फ़ से क़ुरआन के इर्शाद की तस्दीक़ होती है। इसलिए अब सवाल यह पैदा होता है कि ये पेशेनगोइयां किस-किस ज़माने में और किस तरह ज़ाहिर हुईं, इस बारे में तफ़्सीर लिखने वालों की राएं अलग-अलग हैं।

एक राय यह है कि यहूद की पहली शरारत और उसके बदले का मामला बख़्त नस्र (Nebuchadenzzar) के बैतुलमक़्दिस के हमले से ताल्लुक़ रखता है और दूसरी बार का मामला तितूस (Titus) रूमी के हमले से मुताल्लिक़ है और यही राय सही और क़ुरआन की आयतों और तारीख़ी नक़्लों के मुताबिक़ है यह इसलिए कि क़ुरआन ने इस मामले से मुताल्लिक़ जो कुछ कहा है उससे नीचे लिखी जा रही बातें ख़ास तौर से ज़ाहिर होती हैं–

1. 'अल-किताब' में यह ख़बर दे दी गई थी कि यहूदी दो बार सख़्त तौर पर शर्र फैलाएंगे और फ़साद करेंगे।

2. जब उन्होंने पहली बार शर्र व फ़साद किया तो हमने उन पर ऐसी

Copyright OfflineDeeniApp

ज़बरदस्त ताक़त मुसल्लत कर दी कि उसने उसके घरों में घुसकर उनको और उनके घरों को तबाह व बर्बाद कर डाला।

3. इस तबाही के बाद (उनकी तौबा और गिड़गिड़ाहट पर) हमने उनको पहले की तरह फिर हुकूमत और ताक़त बख़्शी और माल व मताअ् की बहुतात से भी फ़ैज़ पहुंचाया।

4. और उनको यह भी बता दिया कि सरकशी और फ़साद से परहेज़ और अम्न व आश्ती और अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी क़ुबूल करने पर हमको कोई फ़ायदा या नुक़्सान नहीं पहुंचता, बल्कि उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी में तुम्हारा अपना ही नुक़्सान और उसकी इताअ़त से तुम ही को फ़ायदा पहुंचता है।

5. मगर उन्होंने दूसरी बार फिर बद अह्दी की, तो हमने पहले की तरह उन पर एक ज़ालिम ताक़त को मुसल्लत कर दिया, जिसने पिछले ज़ालिम हुक्मरां की तरह दोबारा बैतुलमक़्दिस और उसके हैकल (मस्जिद) को भी बर्बाद कर दिया और उनको भी ज़लील व रुसवा करके उनकी सरकशी का सर कुचल दिया।

और अगरचे यहूदियों की यह तबाही देखने में भले ही अबदी (सदा-सर्वदा) की हो, लेकिन अल्लाह तआ़ला की यह रहमत तीसरी बार और मौक़ा देगी कि वे इ़ज़्ज़त और सरबुलन्दी हासिल करें, लेकिन अगर उन्होंने उसको भी ठुकरा दिया तो बेशक फिर उसका क़ानून 'अ़मल का बदला' भी ज़रूर उनको सज़ा देगा और फिर यक़ीनन रहती दुनिया तक ज़लील व ख़्वार रहेंगे और आख़िरत के घर में तो जहन्नम ऐसे ही तकब्बुर (घमंड) करने वालों के लिए तैयार की गई है।

इन तफ़्सीलों से यह ज़ाहिर होता है कि यहूद की शरारतों पर सज़ा और अ़ज़ाब कि शक्ल जिन जाबिर व क़ाहिर बादशाहों पर मुसल्लत की गई, उन्होंने दोनों बार बैतुलमक़्दिस (Jerusalem) को ज़रूर तबाह व बर्बाद किया और तौरात (नबियों के सहीफ़ों) और सीरत और तारीख़ की नक़्लों के एक राय होने पर यह साबित होता है कि फ़लस्तीन और यहूदाह की सरज़मीन की तबाही और हैकल की बर्बादी सिर्फ़ दो बादशाहों के हाथों हुई है और न सिर्फ़ शहरों की बर्बादी बल्कि यहूदी क़ौमियत की वह तबाही और बर्बादी, जो

Copyright OfflineDeeniApp

दुनिया के इंक़िलाबों की तारीख़ में अहम जगह रखती है, एक बाबिल के क़ाहिर बादशाह बनू कद नज़्र (बख़्त नस्र) के हाथ से यह लगभग 104 क़ब्ल मसीह का वाक़िया है और दूसरी तैतूस रोमी के हाथों से और यह वाक़िया मसीह ﷺ के उठाए जाने से लगभग सत्तर साल बाद पेश आया और इन ही दो वाक़ियों में यहूद और यहूदी क़ौमियत और यहूदी मज़हब पर वह कुछ हो गुज़रा जिसकी इत्तिला पहले तौरेत (नबियों के सहीफ़ों) में दे दी गई थी और जिसकी तस्दीक़ के लिए क़ुरआन भी गवाही दे रहा है।

इसलिए रद्द किए जाने के ख़ौफ़ के बग़ैर यह कहना सही है कि यहूद की बद-किरदारियों के नतीजे में जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के हाथों उनकी तबाही व बर्बादी के जो दो सानहे पेश आए और जिनका ज़िक्र सूरः इसरा (बनी इसराईल) में है, वह बेशक बख़्त नस्र और तैतूस (Tatus) ही से ताल्लुक़ रखते हैं तो अब बिल्कुल ज़रूरी है कि इन हर दो वाक़ियों की तफ़्सील बयान करके यह दिखाया जाए कि उस ज़माने में यहूद की शरारतें और फ़साद भरी कारगुज़ारियां इस हद तक बढ़ गई थीं कि उन दोनों तबाह कर देने वाले हादसों में उन पर जो कुछ गुज़रा, वह उनकी बदआमालियों ही का नतीजा था और अ़मल के नतीजे ही ने इन दो ताक़तों की शक्लों में अपने को ज़ाहिर किया था।

यहूद की शरारत का पहला दौर

अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए क़ुदरती क़ानून का हमेशा से यह अटल फ़ैसला रहा है कि जब बद-अख़्लाक़ी, फ़ित्ना व फ़साद, ख़ूरेज़ी, जब्र व ज़ुल्म और हक़ के मुक़ाबले में बुग़्ज़ व हसद किसी जमाअ़त का क़ौमी मिजाज़ बन जाते हैं और कुछ लोगों में नहीं, बल्कि पूरी क़ौम के अन्दर ये बातें जड़ पकड़ लेती हैं तो फिर हक़ क़ुबूल करने की सही सलाहियत उनसे छीन ली जाती है और वे इस दर्जा बे-ख़ौफ़ और बेबाक हो जाते हैं कि अगर उनके पास अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हक़ की दावत देने और अल्लाह का पैग़ाम सुनाने आते हैं तो वे सिर्फ़ उस दावत से मुंह ही नहीं मोड़ लेते हैं बल्कि उन रसूलों और नबियों को क़त्ल तक कर देने से नहीं झिझकते और शिर्क व तुग़यान को

Copyright OfflineDeeniApp

राहे अ़मल बनाकर रहमान के औलिया की जगह शैतान के औलिया बन जाते हैं। जब उनकी हालत इस दर्जे तक पहुंच जाती है तो अब अल्लाह का क़ानून 'अ़मल का बदला' सामने आ जाता है और आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब के अलावा दुनिया ही में उनको ऐसी हलाकत व बर्बादी से दोचार कर देता है कि उस क़ौम का तमाम किब्र व ग़रूर, शर व फ़साद के शोलों में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ ख़ाक कर दी जाती हैं और उनकी क़ौमी ज़िंदगी को ज़िल्लत के गढ़े में झोंक दिया जाता है, ताकि उनकी आंखें देख लें और सबक़ लेने वाले दिल भी यह समझ लें कि हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त व सरबुलन्दी के मालिक तुम नहीं हो और ज़िल्लत व इ़ज़्ज़त तुम्हारे हाथ में नहीं है, बल्कि उस क़ादिरे मुतलक़ हस्ती के क़ब्ज़े में है जो पूरी कायनात का पैदा करने वाला और मालिक है और जिसका यह एलान है कि बदकारों के लिए अंजामेकार ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा और कुछ नहीं है और हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त नेक लोगों के लिए ही है और वही इस हक़ीक़त को सामने रखकर जिसको चाहता है इ़ज़्ज़त बख़्शता है और जिसको चाहता है ज़िल्लत देता है।

पस जब हम फ़ितरत के इस क़ानून को नज़रों में रखकर बनी इसराईल के यहूदियों के उस अ़ह्द की तारीख़ पढ़ते हैं जो ऊपर दर्ज किए गए वाक़ियों से मुताल्लिक़ हैं तो यह बात चमकते दिन की तरह साफ़ नज़र आती है कि उनकी क़ौमी ज़िंदगी का क़िवाम ऊपर लिखी बद-अख़्लाक़ियों से ही बना था और उन्हें अपनी इस ज़िंदगी पर घमंड भी था, चुनांचे हज़रत दाऊद व सुलैमान ﷺ के बाद उनकी मज़हबी और अख़्लाक़ी पस्ती का यह हाल था कि झूठ, फ़रेब, ज़ुल्म व सरकशी और फ़साद व फ़ितना उनका तरीक़ा बन गया था, यहां तक कि शिर्क व बुतपरस्ती तक उनमें रच गई थी, लेकिन इसके बावजूद एक लम्बी मुद्दत तक अल्लाह के 'मोहलत के क़ानून' ने उनको मोहलत दी कि वे अपनी हालत की इस्लाह करें और उसकी सिफ़त 'रहमत' ने उनसे मुंह नहीं मोड़ा, बल्कि उनकी रुश्द व हिदायत और इस्लाहे अख़्लाक व आमाल के लिए नबियों और पैग़म्बरों का सिलसिला क़ायम रख, जो बराबर उनको नेक कामों पर उभारते और बदकारी से बचने को कहते रहते थे, ताकि उनको दीन व दुनिया की सरबुलन्दी हासिल हो और वे नबियों और रसूलों की औलाद होने

Copyright OfflineDeeniApp

की हैसियत से दूसरों के लिए बेहतरीन नमूना बन सकें, मगर यहूदियों पर उनके इर्शाद व तब्लीग़ का क़तई कोई असर न हुआ और उनकी सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती गई और उनके उलेमा व अह्बार ने सोने-चांदी के लिए अल्लाह तआ़ला के हुक्मों में घट-बढ़ शुरू कर दी और हलाल को हराम और हराम को हलाल बनाने में निडर हो गए और आम लोगों ने किताबे इलाही को पीठ पीछे डालकर गुमराही को अपना इमाम बना लिया और बेबाकी के साथ हर क़िस्म की बदअख़्लाक़ी को अपना लिया और आख़िरकार उसके ख़ास व आम इस इंतिहाई शक़ावत व बदबख़्ती पर उतर आए कि अल्लाह के मासूम पैग़म्बरों को क़त्ल करना शुरू कर दिया और उनको झुठला करके उनके ख़ूने नाहक़ पर फ़ख्र व मुबाहात करने लगे।

बख़्त नस्र

सातवीं सदी क़ब्ल मसीह के आख़िरी दौर में बाबिल (इराक़) की हुकूमत के तख़्त पर एक ज़बरदस्त बहादुर और ज़ालिम व जाबिर बादशाह बैठा। उसका नाम बनू कद नज़्र या बनू कदज़ार (Nebuchadenzzar) था। अरब उसको बख़्ते नस्र कहते थे। बनू कद नज़्र अगरचे एक शानदार बादशाह था, पर उसकी नज़रें शाम व फ़लस्तीन पर पड़ने लगीं। चुनांचे वह उस इलाक़े की ओर बढ़ा। नतीजा यह निकला कि वह फ़लस्तीन व शाम के शहरों और आबादियों को तबाह करता हुआ यरूशलम के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। बादशाह, सरदारों और अमीरों (बड़ों) को क़ैद कर लिया। शहर की ईंट से ईंट बजा दी, हैकल की तमाम चीज़ों को लूट लिया गया। तौरात के तमाम नुस्ख़ों (प्रतियों) को जलाकर ख़ाक कर दिया गया और रिवायत में इख़्तिलाफ़ के साथ एक लाख से ज़्यादा यहूदियों को भेड़-बकरियों की तरह हंकाता हुआ पैदल बाबिल ले गया और सबको लौंडी-ग़ुलाम बना लिया। उसने दमिश्क़ में भी अनगिनत यहूदियों को जान से मार दिया, यहां तक कि ख़ुद यहूदियों की ज़ुबान पर यह था कि नबियों के नाहक़ ख़ून की सज़ा है, जो हमको बाबुल के बादशाह की खुली तलवार के ज़रिए दी जा रही है।

Copyright OfflineDeeniApp

गुलामी से निजात

बाबिल की ग़ुलामी के उस ज़माने में यहूदियों के लिए उम्मीद की एक झलक यसइियाह और यर्मियाह (अ़लैहिमुस्सलाम) की उन पेशेनगोइयों में देखी जा सकती है जिनकी सच्चाई का वे तजुर्बा कर चुके थे और जिनमें यह ख़बर भी दी गई थी कि यहूदी बाबिल में सत्तर वर्ष गुलाम रहेंगे और यह मुद्दत गुज़रने के बाद फ़ारस से एक बादशाह ज़ाहिर होगा, जो अल्लाह का मसीह और उसका चरवाहा कहलाएगा और वह यहूदियों और यरूशलम का निजात दिलाने वाला होगा और उसका नाम ख़ोरस होगा। यह पेशेनगोई हज़रत यसइयाह (Isiah) के वाक़िए से लगभग एक सौ साठ वर्ष और हज़रत यर्मियाह (Jeremia) ने साठ साल पहले यहूदाह को उनकी उनकी तबाही व बर्बादी की पेशेनगोई के साथ-साथ सुना दी थी, यहां तक कि बाबिल के क़ियाम के दौरान में पेशेनगोई ज़ाहिर होने से थोड़ा पहले दानियाल (Daniel) ने अपने ख़्वाब में फ़ारस के उस बादशाह को एक ऐसे मेंढ़े की शक्ल में देखा था जिसके दो सींग हैं और जिब्रील ने उससे यह नतीजा बताया है कि इससे मुराद यह है कि वह बादशाह मादा (मीडिया) और फ़ारस दो बादशाहियों को मिला करइ बादशाही करेगा और इसी ख़्वाब में उन्होंने यह भी देखा कि एक और बकरा है जिसके माथे पर सिर्फ़ एक सींग है और उसने दो सींग वाले मेंढे को मग़्लूब कर दिया और फिर जिब्रील ने उसकी ताबीर यह दी कि यह एक ऐसा ज़बरदस्त बादशाह होगा जो ईरान की उस शहनशाही का ख़ात्मा करके उस पर क़ाबिज़ हो जाएगा (यानी सिकन्दर यूनानी Alexander)।

तौरात के बयान और तारीख़

तारीख़ से पता चलता है कि 559 क़ब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में अचानक मीडिया के रईस कम्बूचा के जानशीं अरश (ख़ोरस) ग़ैरमामूली हालात के तहत ज़ाहिर हुआ और कुछ ही दिनों में मीडिया (ईरान का उत्तरी-पश्चिमी हिस्सा) और फ़ारस (ईरान का दक्खिनी हिस्सा) की रियासतों ने अपनी ख़ुशी से उसको अपना अकेला शहंशाह मान लिया और वह एक ज़बरदस्त और ख़ुद मुख़्तार

Copyright OfflineDeeniApp

बादशाह हो गया (फ़ारस वाले उसको अरश और गोरख कहते हैं लेकिन यह यूनानी में साइरस और इब्रानी में ख़ोरस और अरबी में ख़ुसरो के नामों से मशहूर है) यह वह वक़्त था कि बाबिल की सल्तनत बनू कद नज़र (बख़्त नस्र) के एक जानशीं बेल शाज़ार (Belteshazzar) के हाथ में थी। यह बादशाह अगरचे बख़्त नस्र की तरह बहादुर और वीर नहीं था, मगर ज़ुल्म और ऐयाशी में उससे भी आगे था, यहां तक कि ख़ुद उसकी अपनी प्रजा (रियाया) उसके बुरे कामों से परेशान और उसके ज़ुल्म से आजिज़ और हर वक़्त इन्क़लाब चाहने वाली रहती थी, चुनांचे बाबिल की रियाया ने कुछ अफ़सरों को इस बात पर तैयार किया कि वे ख़ोरस के पास जाएं और उसको दावत दें कि आप हमको बेलशाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिला कर अपनी रियाया बना लीजिए। ख़ोरस के पास यह वफ़्द उस वक़्त पहुंचा जबकि वह पूरब की मुहिम सर करने में लगा हुआ था। उसने वफ़्द की दरख़्वास्त को सुना और क़ुबूल किया और पूर्वी मुहिम से फ़ारिग़ होकर बाबिल पहुंचा और उसकी मज़बूत और न तस्ख़ीर होने वाली दोहरी शहर पनाह को गिराकर बाबिल की हुकूमत का ख़ात्मा कर दिया और तमाम रियाया को अमन देकर उनको बेलशाज़ार के ज़ुल्म से नजात दिलाई जिसका, बाबिल की रियाया ने बेहद शुक्रिया अदा किया और ख़ुशी से उसकी इताअ़त क़ुबूल कर ली।

जब ख़ोरस बाबिल के शहर में फ़त्ह करने वाले की शक्ल में दाख़िल हुआ तो दानियाल ने उसको तौरात (नबियों के सहीफ़े) की वे पेशीनगोइयां दिखाईं जो हज़रत यसईयाह और हज़रत यर्मियाह ने यहूदियों को ग़ुलामी से निजात दिलाने वाली हस्ती के बारे में की थीं। ख़ोरस उनको देखकर बेहद मुतास्सिर हुआ और उसने एलान कर दिया कि तमाम यहूदी आज़ाद हैं कि वे शाम व फ़लस्तीन मुल्क को वापस चले जाएं और वहां जाकर अल्लाह के मुक़द्दस घर यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) और उसके हैकल (मस्जिद) को दोबारा तामीर करें और इस सिलसिले के तमाम ख़र्चे सरकारी ख़ज़ाने से अदा किए जाएं। यह भी एलान किया कि यही दीन 'दीने हक़' है और यरूशलम का ख़ुदा ही सच्चा ख़ुदा है।

'अज़रा की किताब' में है कि अगरचे ख़ोरस की बदौलत यहूदियों को

Copyright OfflineDeeniApp

दोबारा आज़ादी और ख़ुशहाली नसीब हुई और हैकल की तामीर भी शाही ख़ज़ाने से शुरू हो गई, मगर अभी काम पूरा नहीं हुआ था कि ख़ोरस का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा केक़बाद (कम्बूचा) भी जल्द मर गया, तब आठ साल के अन्दर ही दारा जो ख़ोरस का चचेरा भाई था, उसका जानशीं हुआ और जल्द ही इस तामीर को मुकम्मल करा दिया।

बनी इसराईल यहूदियों को अब फिर एक बार अम्न व इत्मीनान नसीब हुआ, उन्होंने अपनी हुकूमत को दोबारा जमाया और चूंकि शाहे बाबिल ने तौरेत के तमाम नुस्ख़ों को जलाकर ख़ाक कर दिया था, इसलिए उनके बार-बार कहने पर हज़रत उज़ैर (अज़रा) ﷺ ने अपनी याददाश्त से नए सिरे से उसको लिखवाया। क्या यह बात हैरान कर देने वाली नहीं हो सकती कि इतनी सख़्त ठोकर खाने और ज़िल्लत व रुसवाई की इस सबक़ भरी सज़ा बरदाश्त करने के बावजूद, जिनकी तफ़्सील अभी लिखी जा चुकी है, उनकी आंख खोलने और कानों को हरकत देने में कामियाबी न हुई और उनकी हालत इस आयत के मुताबिक़ साबित हुई कि 'उनके दिल थे, लेकिन वे समझते न थे, आंखें थीं, लेकिन देखते न थे, कान थे, लेकिन सुनते न थे।' यानी धीरे-धीरे उन्होंने फिर ज़ुल्म व फ़साद और बग़ावत व सरकशी पर कमर बांध ली और पिछली बद-आ़मालियों और बदकिरदारियों को ज़ाहिर करना शुरू कर दिया।

हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल

इस होश उड़ा देने वाले हादसे की तफ़्सील यह है कि बनी इसराईल के नबियों में से यह दौर हज़रत यह्या ﷺ की तब्लीग़ व दावत का दौर था और यहूदिया के इलाक़े में हज़रत यह्या ﷺ के वाज़ों का यह असर हो रहा था कि बनी इसराईल के दिल मुसख़्ख़र होते जाते थे और वे जिस तरफ़ भी निकल जाते थे, बहुत सारे लोग उन पर परवानों की तरह फ़िदा होने लगते थे। इधर तो यह हालत थी और दूसरी तरफ़ यहूदिया का बादशाह हीरोदेस (Herodias) निहायत ही बदकार और ज़ालिम था। वह हज़रत यह्या ﷺ की मक़्बूलियत देख-देखकर कांप-कांप जाता था, डरने लगता था कि कहीं यहूदिया की

Copyright OfflineDeeniApp

बादशाही मेरे हाथ से निकल न जाए और हिदायत के रास्ते पर लगाने वाले इस शख़्स के पास न चली जाए? बदक़िस्मती कि हीरोदेस के सौतेले भाई का इंतिक़ाल हो गया। उसकी बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी और हीरोदेस की भाभी होने के अलावा उसकी रिश्ते की भतीजी भी थी। हीरोदेस उस पर आशिक़ हो गया और उससे निकाह कर लिया, चूंकि यह निकाह इसराईली मिल्लत के ख़िलाफ़ था, इसलिए हज़रत यह्या ने भरे दरबार में उसकी इस हरकत पर मलामत की और अल्लाह के ख़ौफ़ से डराया, हीरोदेस की महबूबा ने यह सुना तो ग़म व ग़ुस्से से बेताब हो गई और हीरोदेस को तैयार किया कि वह यह्या को क़त्ल कर दे। हीरोदेस अगरचे इस नसीहत से ख़ुद भी ख़फ़ा था, मगर इस इरादे में उसे झिझक थी, लेकिन महबूबा के बार-बार कहने पर उसने हज़रत यह्या का सर क़लम करके उस तश्त में रखकर उसके पास भेजवा दिया। बड़े हैरत की जगह है कि हज़रत यह्या से आम तौर पर मुहब्बत किए जाने के बावजूद किसी इसराईली को यह जुर्रात न हुई कि हीरोदेस की इस लानत भरी हरकत पर उसको रोके या मलामत करे, बल्कि एक जमाअ़त ने उसके इस लानत भरे अ़मल को अच्छी नज़र से देखा। अब हज़रत यह्या ﷺ की शहादत के बाद हज़रत ईसा ﷺ की दावत व तब्लीग़ का वक़्त आ गया और उन्होंने एलानिया यहूदियों की बिदअ़तों, शिर्क भरी रस्मों, ज़ुल्म भरी ख़स्लतों और बद-दीनी के ख़िलाफ़ ज़ुबान से जिहाद करना शुरू कर दिया। यहूदियों में यह सलाहियत कहां थी कि वे सही बात पर लब्बैक कहते। चुनांचे थोड़ी-सी तायदाद के सिवा भारी तायदाद ने उनकी मुख़ालफ़त शुरू कर दी। इसी दर्मियान नब्ती बादशाह हारिस ने जो हीरोदेस की पहली बीवी के रिश्ते से उसका ससुर था, उस पर चढ़ाई कर दी और सख़्त ख़ून ख़राबा करके हीरोदेस को ज़बरदस्त तौर पर हराया जिसने हीरोदेस की ताक़त का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी यहूदिया की रियासत रोमियो के बलबूते पर क़ायम रही। उस वक़्त अगरचे आम तौर पर यहूदिया कहते थे कि हीरोदेस और इसराईलियों को यह ज़िल्लत और हार हज़रत यह्या ﷺ के नाहक़ ख़ून के बदले में मिली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस हादसे से कोई सबक़ नहीं लिया और वे अपने ज़ुल्म भरे मक़्सद से बाज़ न आए और हज़रत ईसा की

Copyright OfflineDeeniApp

मुख़ालफ़त में बुग़्ज़ व इनाद के साथ सरगर्म रहे, यहां तक कि शाह यहूदिया
23 पिलाटेस (Pilate) से उनके क़त्ल की इजाज़त हासिल करके उनको घेर लिया, मगर अल्लाह ने उनके इरादों को नाकाम बनाकर हज़रत ईसा ﷺ को ज़िंदा आसमान पर उठा लिया।

अ़मल का बदला

आख़िर अ़मल का बदला सामने आया और अब ख़ुद यहूदियों की आपसी ख़ाना जंगी शुरू हो गई। वजह यह हुई कि इस दौर में यहूदियों के तीन फ़िर्क़े हो गए थे। एक फ़ुक़हा की जमाअ़त थी और उनको फ़रेसी (Pharisee) कहते थे और दूसरी जमाअ़त ज़ाहिर वालों की थी जो इलहामी लफ़्ज़ों के ज़ाहिर पर जम जाते थे, उनको सदूक़ी (Sadourcee) कहते थे और तीसरी जमाअ़त मुर्ताज़ राहिबों की थी। इनमें से फ़रेसी और सदूक़ी का इख़्तिलाफ़ इस दर्जा तरक़्क़ी पर गया था कि उनमें सख़्त खूंरेज़ियां होने लगीं शाहे यहूदिया जिस गिरोह का तरफ़दार हो जाता था वह दूसरे गिरोह को बेदरेग क़त्ल करता था। आख़िर यह लड़ाई इतनी आगे बढ़ गई कि शाह यहूदिया को बाग़ियों के ख़िलाफ़ रूमियों से मदद लेनी पड़ती थी और बुतपरस्तों के हाथों यहूदियों को क़त्ल कराया जाता था। चुनांचे इस कशमकश में ईसा ﷺ के उठाए जाने के लगभग सत्तर साल बाद यहूदियों के हक़ के दावेदार यूहन्नान और शमऊन के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई। यह वह ज़माना था जबकि तख़्त रूम पर उसका एक बहादुर जरनैल असेबानूम क़ैसरी कर रहा था और अर्ज़े यहूदिया में यूहन्नान को कामियाबी हो गई थी जो निहायत ज़ालिम और बदकार था और उसके ज़ालिम साथियों के हाथों अर्ज़े मुक़द्दस की तमाम गली-कूचों में ख़ून की नदियां बह रही थीं। इस हालत में यहूदियों ने अशेबानूस से मदद चाही और उसने अपने बेटे तैतूस (टेटस) को अर्ज़े मुक़द्दस को जीत लेने पर लगाया। वह आगे बढ़ा और अर्ज़े यहूदिया के क़रीब जाकर अपने एक क़ासिद नेक़ानूस को सुलह के लिए भेजा। यहूदियों का ज़ुल्म व सितम का पारा बहुत चढ़ा हुआ था, उन्होंने उसको भी क़त्ल कर दिया। अब तैतूस ग़ज़बनाक हो गया और उसने कहा, किसी फ़िर्क़े का लिहाज़ किए

Copyright OfflineDeeniApp

बग़ैर तमाम यहूदियों की जड़ें काट कर जाऊंगा ताकि हमेशा के लिए इस सरज़मीन का झगड़ा पाक हो जाए। चुनांचे तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ उसने बैतुल मक़्दिस पर इतना ज़बरदस्त हमला किया कि शहर पनाह टूट गई, हैकल की दीवारें बिखर गईं, घेराव के लंबे हो जाने से हज़ारों यहूदी भूखे मर गए और हज़ारों फ़रार होकर बे-वतन हो गए और जो बचे थे, वे तलवार के घाट उतार दिये गए। रूमियों ने हैकल की बेहुर्मती की और जहां एक ख़ुदा की इबादत होती थी, वहां बुत ले जाकर रख दिए।

ग़रज़ यह वह हार थी कि फिर यहूदी कभी न उभरे और अपनी कमीना और ज़ालिमाना हरकतों और एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नबियों के क़त्ल के बदले में हमेशा के लिए ज़लील व ख़्वार होकर रह गए।

तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना

कुछ दिनों के बाद रूमियों ने बुतपरस्ती छोड़कर ईसाइयत अख़्तियार कर ली और इस तरह उनके उरूज व तरक़्क़ी ने यहूदी क़ौमियत और मज़हब दोनों को मग़लूब व मक़्हूर बना दिया।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि जब तीतूस रूमी ने बैतुल मक़्दिस को बर्बाद कर दिया तो यहूदियों की एक बड़ी तायदाद वहां से भागकर आस-पास के इलाक़े में जा बसी, उन्हीं में कुछ वे क़बीले भी हैं जो यसरिब (हिजाज़) और उसके आस-पास में जाकर आबाद हो गए थे। ये और इससे पहले और बाद के जो यहूदी क़बीले यहां आकर ठहर गए उनके इस बयान के मुताल्लिक़ तारीख़ लिखने वालों की राय यह है कि यहूदियों को तौरात और पुरानी किताबों (सहीफ़ों) से यह मालूम हो चुका था कि यह सरज़मीन नबी आख़िरुज़्ज़मां की दारुल हिजरत (हिजरत की जगह) बनेगी और यहूदी नबी आख़िरुज़्ज़मां के इतने इंतिज़ार में थे और उनके यहां उनके आने की इस क़दर शोहरत थी कि जब हज़रत यह्या ﷺ ने तब्लीग़ व दावत के ज़रिए पैग़ामे इलाही सुनाना शुरू किया तो यहूदियों ने जमा होकर उनसे साफ़ कहा कि हम तीन नवियों का इंतिज़ार कर रहे हैं—एक मसीह ﷺ का, दूसरे इलयास ﷺ का और तीसरे उस मशहूर व मारूफ़ नबी आख़िरुज़्ज़मां का, जिसके आने की

Copyright OfflineDeeniApp

शोहरत हमारे बीच इतनी है कि हम उसका नाम लेने की भी ज़रूरत नहीं समझते और सिर्फ़ उसकी तरफ़ इशारा कर देने से हर एक यहूदी उसको पहचान लेता है। तौरात इंजील, नबियों के सहीफ़े और यहूदियों की तारीख़ में और भी बहुत-सी गवाहियां मौजूद हैं कि जिनसे यह पता चलता है कि यहूदियों को ऐसे पैग़म्बर का इंतिज़ार था जो आख़िरी नबी होगा और हिजाज़ में भेजा जाएगा। इसी वजह से जब भी वे अपने मर्कज़ से बिखरे हैं तो उनकी एक माक़ूल तायदाद उसी के इन्तिज़ार में यसरिब में जा बसी।

हमेशा की ज़िल्लत और नुक़सान

पस कितनी बद-बख़्त व बदक़िस्मत है वह जमाअ़त जिसने हज़रत ईसा ﷺ की पैदाइश से लगभग 570 साल बाद तक इस इंतिज़ार में गुज़ारे कि यसरिब की इस धरती पर जब अल्लाह तआ़ला का वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हिजरत करके आएगा, तो हम उसकी पैरवी करके अपनी क़ौमी और मज़हबी बड़कप्पन और वक़ार (Prestige) को फिर एक बार हासिल करेंगे। यहां तक कि यसरिब के क़बीले औस व ख़ज़रज के मुक़ाबले में भी उसी की मदद के इंतिज़ार में रहते थे। मगर जब वह सच्चा नबी आया और उसने मूसा और ईसा और तौरेत और इंजील की तस्दीक़ करते हुए उनको हक़ का पैग़ाम सुनाया तो सबसे पहले उन्होंने (यहूदियों) ने ही इनके ख़िलाफ़ बुग़्ज़ व अ़दावत ज़ाहिर की और उसकी आवाज़ पर कान न धरते हुए उसकी मुख़ालफ़त को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बना लिया और नतीजे में हमेशा-हमेशा की ज़िल्लत और बदक़िस्मती को मोल ले लिया।

अल्लाह तआ़ला ने तो शुरू ही में उनको तंबीह कर दी थी कि दो बार की सरकशी और उसके अंजाम के बाद हम तुमको एक मौक़ा और इनायत करेंगे, पर अगर तुम उस वक़्त संभल गए और तुमने अल्लाह की फ़रमांबरदारी का सबूत दिया और अल्लाह के पैग़म्बर की सदाक़त का इक़रार करके दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया तो हम भी तुम्हारी पुरानी अ़ज़्मत को वापस ले आएंगे और दीन व दुनिया की सआ़दत से तुम्हें नवाज़ेंगे, लेकिन अगर तुमने इस मौक़े को भी खो दिया और पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व

Copyright OnlineDeeniApp

दुनिया के इंक़िलाबों की तारीख़ में अहम जगह रखती है, एक बाबिल के क़ाहिर बादशाह बनू कद नज़्र (बख़्त नस्र) के हाथ से यह लगभग 104 क़ब्ल मसीह का वाक़िया है और दूसरी तैतूस रोमी के हाथों से और यह वाक़िया मसीह ﷺ के उठाए जाने से लगभग सत्तर साल बाद पेश आया और इन ही दो वाक़ियों में यहूद और यहूदी क़ौमियत और यहूदी मज़हब पर वह कुछ हो गुज़रा जिसकी इत्तिला पहले तौरेत (नबियों के सहीफ़ों) में दे दी गई थी और जिसकी तस्दीक़ के लिए क़ुरआन भी गवाही दे रहा है।

इसलिए रद्द किए जाने के ख़ौफ़ के बग़ैर यह कहना सही है कि यहूद की बद-किरदारियों के नतीजे में जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के हाथों उनकी तबाही व बर्बादी के जो दो सानहे पेश आए और जिनका ज़िक्र सूरः इसरा (बनी इसराईल) में है, वह बेशक बख़्त नस्र और तैतूस (Tatus) ही से ताल्लुक़ रखते हैं तो अब बिल्कुल ज़रूरी है कि इन हर दो वाक़ियों की तफ़्सील बयान करके यह दिखाया जाए कि उस ज़माने में यहूद की शरारतें और फ़साद भरी कारगुज़ारियां इस हद तक बढ़ गई थीं कि उन दोनों तबाह कर देने वाले हादसों में उन पर जो कुछ गुज़रा, वह उनकी बदआमालियों ही का नतीजा था और अ़मल के नतीजे ही ने इन दो ताक़तों की शक्लों में अपने को ज़ाहिर किया था।

यहूद की शरारत का पहला दौर

अल्लाह तआ़ला के बनाए हुए क़ुदरती क़ानून का हमेशा से यह अटल फ़ैसला रहा है कि जब बद-अख़्लाक़ी, फ़ित्ना व फ़साद, ख़ूरेज़ी, जब्र व ज़ुल्म और हक़ के मुक़ाबले में बुग़्ज़ व हसद किसी जमाअ़त का क़ौमी मिजाज़ बन जाते हैं और कुछ लोगों में नहीं, बल्कि पूरी क़ौम के अन्दर ये बातें जड़ पकड़ लेती हैं तो फ़िर हक़ क़ुबूल करने की सही सलाहियत उनसे छीन ली जाती है और वे इस दर्जा बे-ख़ौफ़ और बेबाक हो जाते हैं कि अगर उनके पास अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हक़ की दावत देने और अल्लाह का पैग़ाम सुनाने आते हैं तो वे सिर्फ़ उस दावत से मुंह ही नहीं मोड़ लेते हैं बल्कि उन रसूलों और नबियों को क़त्ल तक कर देने से नहीं झिझकते और शिर्क व तुग़यान को

Copyright OfflineDeeniApp

राहे अ़मल बनाकर रहमान के औलिया की जगह शैतान के औलिया बन जाते हैं। जब उनकी हालत इस दर्जे तक पहुंच जाती है तो अब अल्लाह का क़ानून 'अ़मल का बदला' सामने आ जाता है और आख़िरत के दर्दनाक अ़ज़ाब के अलावा दुनिया ही में उनको ऐसी हलाकत व बर्बादी से दोचार कर देता है कि उस क़ौम का तमाम किब्र व ग़रूर, शर व फ़साद के शोलों में ज़िल्लत व ख़्वारी के साथ ख़ाक कर दी जाती हैं और उनकी क़ौमी ज़िंदगी को ज़िल्लत के गढ़े में झोंक दिया जाता है, ताकि उनकी आंखें देख लें और सबक़ लेने वाले दिल भी यह समझ लें कि हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त व सरबुलन्दी के मालिक तुम नहीं हो और ज़िल्लत व इ़ज़्ज़त तुम्हारे हाथ में नहीं है, बल्कि उस क़ादिरे मुतलक़ हस्ती के क़ब्ज़े में है जो पूरी कायनात का पैदा करने वाला और मालिक है और जिसका यह एलान है कि बदकारों के लिए अंजामेकार ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा और कुछ नहीं है और हक़ीक़ी इ़ज़्ज़त नेक लोगों के लिए ही है और वही इस हक़ीक़त को सामने रखकर जिसको चाहता है इ़ज़्ज़त बख़्शता है और जिसको चाहता है ज़िल्लत देता है।

पस जब हम फ़ितरत के इस क़ानून को नज़रों में रखकर बनी इसराईल के यहूदियों के उस अ़ह्द की तारीख़ पढ़ते हैं जो ऊपर दर्ज किए गए वाक़ियों से मुताल्लिक़ हैं तो यह बात चमकते दिन की तरह साफ़ नज़र आती है कि उनकी क़ौमी ज़िंदगी का क़िवाम ऊपर लिखी बद-अख़्लाक़ियों से ही बना था और उन्हें अपनी इस ज़िंदगी पर घमंड भी था, चुनांचे हज़रत दाऊद व सुलैमान ﷺ के बाद उनकी मज़हबी और अख़्लाक़ी पस्ती का यह हाल था कि झूठ, फ़रेब, ज़ुल्म व सरकशी और फ़साद व फ़ितना उनका तरीक़ा बन गया था, यहां तक कि शिर्क व बुतपरस्ती तक उनमें रच गई थी, लेकिन इसके बावजूद एक लम्बी मुद्दत तक अल्लाह के 'मोहलत के क़ानून' ने उनको मोहलत दी कि वे अपनी हालत की इस्लाह करें और उसकी सिफ़त 'रहमत' ने उनसे मुंह नहीं मोड़ा, बल्कि उनकी रुश्द व हिदायत और इस्लाहे अख़्लाक व आमाल के लिए नबियों और पैग़म्बरों का सिलसिला क़ायम रख, जो बराबर उनको नेक कामों पर उभारते और बदकारी से बचने को कहते रहते थे, ताकि उनको दीन व दुनिया की सरबुलन्दी हासिल हो और वे नबियों और रसूलों की औलाद होने

Copyright OfflineDeeniApp

की हैसियत से दूसरों के लिए बेहतरीन नमूना बन सकें, मगर यहूदियों पर उनके इर्शाद व तब्लीग़ का क़तई कोई असर न हुआ और उनकी सरकशी और नाफ़रमानी बढ़ती गई और उनके उलेमा व अस्बार ने सोने-चांदी के लिए अल्लाह तआला के हुक्मों में घट-बढ़ शुरू कर दी और हलाल को हराम और हराम को हलाल बनाने में निडर हो गए और आम लोगों ने किताबे इलाही को पीठ पीछे डालकर गुमराही को अपना इमाम बना लिया और बेबाकी के साथ हर क़िस्म को बदअख़्लाक़ी को अपना लिया और आख़िरकार उसके ख़ास व आम इस इंतिहाई शक़ावत व बदबख़्ती पर उतर आए कि अल्लाह के मासूम पैग़म्बरों को क़त्ल करना शुरू कर दिया और उनको झुठला करके उनके ख़ूने नाहक़ पर फ़ख्र व मुबाहात करने लगे।

बख़्त नस्र

सातवीं सदी क़ब्ल मसीह के आख़िरी दौर में बाबिल (इराक़) की हुकूमत के तख़्त पर एक ज़बरदस्त बहादुर और ज़ालिम व जाबिर बादशाह बैठा। उसका नाम बनू कद नज़्र या बनू कदज़ार (Nebuchadenzzar) था। अरब उसको बख़्ते नस्र कहते थे। बनू कद नज़्र अगरचे एक शानदार बादशाह था, पर उसकी नज़रें शाम व फ़लस्तीन पर पड़ने लगीं। चुनांचे वह उस इलाक़े की ओर बढ़ा। नतीजा यह निकला कि वह फ़लस्तीन व शाम के शहरों और आबादियों को तबाह करता हुआ यरूशलम के दरवाज़े पर आ खड़ा हुआ। बादशाह, सरदारों और अमीरों (बड़ों) को क़ैद कर लिया। शहर की ईंट से ईंट बजा दी, हैकल की तमाम चीज़ों को लूट लिया गया। तौरात के तमाम नुस्ख़ों (प्रतियों) को जलाकर ख़ाक कर दिया गया और रिवायत में इख़्तिलाफ़ के साथ एक लाख से ज़्यादा यहूदियों को भेड़-बकरियों की तरह हंकाता हुआ पैदल बाबिल ले गया और सबको लौंडी-ग़ुलाम बना लिया। उसने दमिश्क़ में भी अनगिनत यहूदियों को जान से मार दिया, यहां तक कि ख़ुद यहूदियों की ज़ुबान पर यह था कि नबियों के नाहक़ ख़ून की सज़ा है, जो हमको बाबुल के बादशाह की खुली तलवार के ज़रिए दी जा रही है।

Copyright OfflineDeeniApp

गुलामी से निजात

बाबिल की ग़ुलामी के उस ज़माने में यहूदियों के लिए उम्मीद की एक झलक यसइयाह और यर्मियाह (अ़लैहिमुस्सलाम) की उन पेशेनगोइयों में देखी जा सकती है जिनकी सच्चाई का वे तजुर्बा कर चुके थे और जिनमें यह ख़बर भी दी गई थी कि यहूदी बाबिल में सत्तर वर्ष गुलाम रहेंगे और यह मुद्दत गुज़रने के बाद फ़ारस से एक बादशाह ज़ाहिर होगा, जो अल्लाह का मसीह और उसका चरवाहा कहलाएगा और वह यहूदियों और यरूशलम का निजात दिलाने वाला होगा और उसका नाम ख़ोरस होगा। यह पेशेनगोई हज़रत यसइयाह (Isiah) के वाक़िए से लगभग एक सौ साठ वर्ष और हज़रत यर्मियाह (Jeremia) ने साठ साल पहले यहूदाह को उनकी उनकी तबाही व बर्बादी की पेशेनगोई के साथ-साथ सुना दी थी, यहां तक कि बाबिल के क़ियाम के दौरान में पेशेनगोई ज़ाहिर होने से थोड़ा पहले दानियाल (Daniel) ने अपने ख़्वाब में फ़ारस के उस बादशाह को एक ऐसे मेंढ़े की शक्ल में देखा था जिसके दो सींग हैं और जिब्रील ने उससे यह नतीजा बताया है कि इससे मुराद यह है कि वह बादशाह मादा (मीडिया) और फ़ारस दो बादशाहियों को मिला करइ बादशाही करेगा और इसी ख़्वाब में उन्होंने यह भी देखा कि एक और बकरा है जिसके माथे पर सिर्फ़ एक सींग है और उसने दो सींग वाले मेंढे को मग़्लूब कर दिया और फिर जिब्रील ने उसकी ताबीर यह दी कि यह एक ऐसा ज़बरदस्त बादशाह होगा जो ईरान की उस शहनशाही का ख़ात्मा करके उस पर क़ाबिज़ हो जाएगा (यानी सिकन्दर यूनानी Alexander)।

तौरात के बयान और तारीख़

तारीख़ से पता चलता है कि 559 क़ब्ल मसीह (ईसा पूर्व) में अचानक मीडिया के रईस कम्बूचा के जानशीं अरश (ख़ोरस) ग़ैरमामूली हालात के तहत ज़ाहिर हुआ और कुछ ही दिनों में मीडिया (ईरान का उत्तरी-पश्चिमी हिस्सा) और फ़ारस (ईरान का दक्खिनी हिस्सा) की रियासतों ने अपनी ख़ुशी से उसको अपना अकेला शहंशाह मान लिया और वह एक ज़बरदस्त और ख़ुद मुख़्तार

Copyright OfflineDeeniApp

बादशाह हो गया (फ़ारस वाले उसको अरश और गोरख कहते हैं लेकिन यह यूनानी में साइरस और इब्रानी में ख़ोरस और अरबी में ख़ुसरो के नामों से मशहूर है) यह वह वक़्त था कि बाबिल की सल्तनत बनू कद नज़र (बख़्त नस्र) के एक जानशीं बेल शाज़ार (Belteshazzar) के हाथ में थी। यह बादशाह अगरचे बख़्त नस्र की तरह बहादुर और वीर नहीं था, मगर ज़ुल्म और ऐयाशी में उससे भी आगे था, यहां तक कि ख़ुद उसकी अपनी प्रजा (रियाया) उसके बुरे कामों से परेशान और उसके ज़ुल्म से आजिज़ और हर वक़्त इन्क़लाब चाहने वाली रहती थी, चुनांचे बाबिल की रियाया ने कुछ अफ़सरों को इस बात पर तैयार किया कि वे ख़ोरस के पास जाएं और उसको दावत दें कि आप हमको बेलशाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिला कर अपनी रियाया बना लीजिए। ख़ोरस के पास यह वफ़्द उस वक़्त पहुंचा जबकि वह पूरब की मुहिम सर करने में लगा हुआ था। उसने वफ़्द की दरख़्वास्त को सुना और क़ुबूल किया और पूर्वी मुहिम से फ़ारिग़ होकर बाबिल पहुंचा और उसकी मज़बूत और न तस्ख़ीर होने वाली दोहरी शहर पनाह को गिराकर बाबिल की हुकूमत का ख़ात्मा कर दिया और तमाम रियाया को अमन देकर उनको बेलशाज़ाार के ज़ुल्म से नजात दिलाई जिसका, बाबिल की रियाया ने बेहद शुक्रिया अदा किया और ख़ुशी से उसकी इताअ़त क़ुबूल कर ली।

जब ख़ोरस बाबिल के शहर में फ़त्ह करने वाले की शक्ल में दाख़िल हुआ तो दानियाल ने उसको तौरात (नबियों के सहीफ़े) की वे पेशीनगोइयां दिखाईं जो हज़रत यसईयाह और हज़रत यर्मियाह ने यहूदियों को ग़ुलामी से निजात दिलाने वाली हस्ती के बारे में की थीं। ख़ोरस उनको देखकर बेहद मुतास्सिर हुआ और उसने एलान कर दिया कि तमाम यहूदी आज़ाद हैं कि वे शाम व फ़लस्तीन मुल्क को वापस चले जाएं और वहां जाकर अल्लाह के मुक़द्दस घर यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) और उसके हैकल (मस्जिद) को दोबारा तामीर करें और इस सिलसिले के तमाम ख़र्चे सरकारी ख़ज़ाने से अदा किए जाएं। यह भी एलान किया कि यही दीन 'दीने हक़' है और यरूशलम का ख़ुदा ही सच्चा ख़ुदा है।

'अज़रा की किताब' में है कि अगरचे ख़ोरस की बदौलत यहूदियों को

Copyright OfflineDeeniApp

दोबारा आज़ादी और ख़ुशहाली नसीब हुई और हैकल की तामीर भी शाही ख़ज़ाने से शुरू हो गई, मगर अभी काम पूरा नहीं हुआ था कि ख़ोरस का इंतिक़ाल हो गया और उसका बेटा केक़बाद (कम्बूचा) भी जल्द मर गया, तब आठ साल के अन्दर ही दारा जो ख़ोरस का चचेरा भाई था, उसका जानशीं हुआ और जल्द ही इस तामीर को मुकम्मल करा दिया।

बनी इसराईल यहूदियों को अब फिर एक बार अम्न व इत्मीनान नसीब हुआ, उन्होंने अपनी हुकूमत को दोबारा जमाया और चूंकि शाहे बाबिल ने तौरेत के तमाम नुस्ख़ों को जलाकर ख़ाक कर दिया था, इसलिए उनके बार-बार कहने पर हज़रत उज़ैर (अज़रा) ﷺ ने अपनी याददाश्त से नए सिरे से उसको लिखवाया। क्या यह बात हैरान कर देने वाली नहीं हो सकती कि इतनी सख़्त ठोकर खाने और ज़िल्लत व रुसवाई की इस सबक़ भरी सज़ा बरदाश्त करने के बावजूद, जिनकी तफ़्सील अभी लिखी जा चुकी है, उनकी आंख खोलने और कानों को हरकत देने में कामियाबी न हुई और उनकी हालत इस आयत के मुताबिक़ साबित हुई कि 'उनके दिल थे, लेकिन वे समझते न थे, आंखें थीं, लेकिन देखते न थे, कान थे, लेकिन सुनते न थे।' यानी धीरे-धीरे उन्होंने फिर ज़ुल्म व फ़साद और बग़ावत व सरकशी पर कमर बांध ली और पिछली बद-आ़मालियों और बदकिरदारियों को ज़ाहिर करना शुरू कर दिया।

हज़रत यह्या ﷺ का क़त्ल

इस होश उड़ा देने वाले हादसे की तफ़्सील यह है कि बनी इसराईल के नबियों में से यह दौर हज़रत यह्या ﷺ की तब्लीग़ व दावत का दौर था और यहूदिया के इलाक़े में हज़रत यह्या ﷺ के वाज़ों का यह असर हो रहा था कि बनी इसराईल के दिल मुसख़्ख़र होते जाते थे और वे जिस तरफ़ भी निकल जाते थे, बहुत सारे लोग उन पर परवानों की तरह फ़िदा होने लगते थे। इधर तो यह हालत थी और दूसरी तरफ़ यहूदिया का बादशाह हीरोदेस (Herodias) निहायत ही बदकार और ज़ालिम था। वह हज़रत यह्या ﷺ की मक़्बूलियत देख-देखकर कांप-कांप जाता था, डरने लगता था कि कहीं यहूदिया की

Copyright OfflineDeeniApp

बादशाही मेरे हाथ से निकल न जाए और हिदायत के रास्ते पर लगाने वाले इस शख़्स के पास न चली जाए? बदक़िस्मती कि हीरोदेस के सौतेले भाई का इंतिक़ाल हो गया। उसकी बीवी बहुत ख़ुबसूरत थी और हीरोदेस की भाभी होने के अलावा उसकी रिश्ते की भतीजी भी थी। हीरोदेस उस पर आशिक़ हो गया और उससे निकाह कर लिया, चूंकि यह निकाह इसराईली मिल्लत के ख़िलाफ़ था, इसलिए हज़रत यह्या ने भरे दरबार में उसकी इस हरकत पर मलामत की और अल्लाह के ख़ौफ़ से डराया, हीरोदेस की महबूबा ने यह सुना तो ग़म व ग़ुस्से से बेताब हो गई और हीरोदेस को तैयार किया कि वह यह्या को क़त्ल कर दे। हीरोदेस अगरचे इस नसीहत से ख़ुद भी ख़फ़ा था, मगर इस इरादे में उसे झिझक थी, लेकिन महबूबा के बार-बार कहने पर उसने हज़रत यह्या का सर क़लम करके उस तश्त में रखकर उसके पास भेजवा दिया। बड़े हैरत की जगह है कि हज़रत यह्या से आम तौर पर मुहब्बत किए जाने के बावजूद किसी इसराईली को यह जुर्रात न हुई कि हीरोदेस की इस लानत भरी हरकत पर उसको रोके या मलामत करे, बल्कि एक जमाअ़त ने उसके इस लानत भरे अ़मल को अच्छी नज़र से देखा। अब हज़रत यह्या ﷺ की शहादत के बाद हज़रत ईसा ﷺ की दावत व तब्लीग़ का वक़्त आ गया और उन्होंने एलानिया यहूदियों की बिदअ़तों, शिर्क भरी रस्मों, ज़ुल्म भरी ख़स्लतों और बद-दीनी के ख़िलाफ़ ज़ुबान से जिहाद करना शुरू कर दिया। यहूदियों में यह सलाहियत कहां थी कि वे सही बात पर लब्बैक कहते। चुनांचे थोड़ी-सी तायदाद के सिवा भारी तायदाद ने उनकी मुख़ालफ़त शुरू कर दी। इसी दर्मियान नब्ती बादशाह हारिस ने जो हीरोदेस की पहली बीवी के रिश्ते से उसका ससुर था, उस पर चढ़ाई कर दी और सख़्त ख़ून ख़राबा करके हीरोदेस को ज़बरदस्त तौर पर हराया जिसने हीरोदेस की ताक़त का ख़ात्मा कर दिया। फिर भी यहूदिया की रियासत रोमियो के बलबूते पर क़ायम रही। उस वक़्त अगरचे आम तौर पर यहूदिया कहते थे कि हीरोदेस और इसराईलियों को यह ज़िल्लत और हार हज़रत यह्या ﷺ के नाहक़ ख़ून के बदले में मिली, लेकिन इसके बावजूद उन्होंने इस हादसे से कोई सबक़ नहीं लिया और वे अपने ज़ुल्म भरे मक़्सद से बाज़ न आए और हज़रत ईसा की

Copyright OfflineDeeniApp

मुख़ालफ़त में वुज़ व इनाद के साथ सरगर्म रहे, यहां तक कि शाह यहूदिया पिलातेस (Pilate) से उनके क़त्ल की इजाज़त हासिल करके उनको घेर लिया, मगर अल्लाह ने उनके इरादों को नाकाम बनाकर हज़रत ईसा ﷺ को ज़िंदा आसमान पर उठा लिया।

अ़मल का वदला

आख़िर अ़मल का वदला सामने आया और अव ख़ुद यहूदियों की आपसी ख़ाना जंगी शुरू हो गई। वजह यह हुई कि इस दौर में यहूदियों के तीन फ़िर्क़े हो गए थे। एक फ़ुक़हा की जमाअ़त थी और उनको फ़रेसी (Pharisee) कहते थे और दूसरी जमाअ़त ज़ाहिर वालों की थी जो इलहामी लफ़्ज़ों के ज़ाहिर पर जम जाते थे, उनको सदूक़ी (Sadourcee) कहते थे और तीसरी जमाअ़त मुर्ताज़ राहिबों की थी। इनमें से फ़रेसी और सदूक़ी का इख़्तिलाफ़ इस दर्जा तरक़्क़ी पर गया था कि उनमें सख़्त खूंरेज़ियां होने लगीं शाहे यहूदिया जिस गिरोह का तरफ़दार हो जाता था वह दूसरे गिरोह को वेदरेग क़त्ल करता था। आख़िर यह लड़ाई इतनी आगे बढ़ गई कि शाह यहूदिया को बाग़ियों के ख़िलाफ़ रूमियों से मदद लेनी पड़ती थी और बुतपरस्तों के हाथों यहूदियों को क़त्ल कराया जाता था। चुनांचे इस कशमकश में ईसा ﷺ के उठाए जाने के लगभग सत्तर साल बाद यहूदियों के हक़ के दावेदार यूहन्नान और शमऊन के बीच ज़बरदस्त लड़ाई हुई। यह वह ज़माना था जबकि तख़्त रूम पर उसका एक बहादुर जरनैल असेबानूम क़ैसरी कर रहा था और अर्ज़े यहूदिया में यूहन्नान को कामियाबी हो गई थी जो निहायत ज़ालिम और बदकार था और उसके ज़ालिम साथियों के हाथों अर्ज़े मुक़द्दस की तमाम गली-कूचों में ख़ून की नदियां बह रही थीं। इस हालत में यहूदियों ने अशेबानूस से मदद चाही और उसने अपने बेटे तैतूस (टेटस) को अर्ज़े मुक़द्दस को जीत लेने पर लगाया। वह आगे बढ़ा और अर्ज़े यहूदिया के क़रीब जाकर अपने एक क़ासिद नेक़ानूस को सुलह के लिए भेजा। यहूदियों का ज़ुल्म व सितम का पारा बहुत चढ़ा हुआ था, उन्होंने उसको भी क़त्ल कर दिया। अब तैतूस ग़ज़बनाक हो गया और उसने कहा, किसी फ़िर्क़े का लिहाज़ किए

Copyright OfflineDeeniApp

बग़ैर तमाम यहूदियों की जड़ें काट कर जाऊंगा ताकि हमेशा के लिए इस सरज़मीन का झगड़ा पाक हो जाए। चुनांचे तारीख़ लिखने वालों के मुताबिक़ उसने बैतुल मक़्दिस पर इतना ज़बरदस्त हमला किया कि शहर पनाह टूट गई, हैकल की दीवारें बिखर गईं, घेराव के लंबे हो जाने से हज़ारों यहूदी भूखे मर गए और हज़ारों फ़रार होकर बे-वतन हो गए और जो बचे थे, वे तलवार के घाट उतार दिये गए। रूमियों ने हैकल की बेहुर्मती की और जहां एक ख़ुदा की इबादत होती थी, वहां बुत ले जाकर रख दिए।

ग़रज़ यह वह हार थी कि फिर यहूदी कभी न उभरे और अपनी कमीना और ज़ालिमाना हरकतों और एलानिया फ़िस्क़ व फ़ुजूर और नबियों के क़त्ल के बदले में हमेशा के लिए ज़लील व ख़्वार होकर रह गए।

तीसरा सुनहरा मौक़ा और यहूदियों का मुंह मोड़ना

कुछ दिनों के बाद रूमियों ने बुतपरस्ती छोड़कर ईसाइयत अख़्तियार कर ली और इस तरह उनके उरूज व तरक़्क़ी ने यहूदी क़ौमियत और मज़हब दोनों को मग़लूब व मक़्हूर बना दिया।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि जब तीतूस रूमी ने बैतुल मक़्दिस को बर्बाद कर दिया तो यहूदियों की एक बड़ी तायदाद वहां से भागकर आस-पास के इलाक़े में जा बसी, उन्हीं में कुछ वे क़बीले भी हैं जो यसरिब (हिजाज़) और उसके आस-पास में जाकर आबाद हो गए थे। ये और इससे पहले और बाद के जो यहूदी क़बीले यहां आकर ठहर गए उनके इस बयान के मुताल्लिक़ तारीख़ लिखने वालों की राय यह है कि यहूदियों को तौरात और पुरानी किताबों(सहीफ़ों) से यह मालूम हो चुका था कि यह सरज़मीन नबी आख़िरुज़्ज़मां की दारुल हिजरत (हिजरत की जगह) बनेगी और यहूदी नबी आख़िरुज़्ज़मां के इतने इंतिज़ार में थे और उनके यहां उनके आने की इस क़दर शोहरत थी कि जब हज़रत यह्या ﷺ ने तब्लीग़ व दावत के ज़रिए पैग़ामे इलाही सुनाना शुरू किया तो यहूदियों ने जमा होकर उनसे साफ़ कहा कि हम तीन नबियों का इंतिज़ार कर रहे हैं—एक मसीह ﷺ का, दूसरे इलयास ﷺ का और तीसरे उस मशहूर व मारूफ़ नबी आख़िरुज़्ज़मां का, जिसके आने की

Copyright OfflineDeeniApp

शोहरत हमारे बीच इतनी है कि हम उसका नाम लेने की भी ज़रूरत नहीं समझते और सिर्फ़ उसकी तरफ़ इशारा कर देने से हर एक यहूदी उसको पहचान लेता है। तौरात इंजील, नबियों के सहीफ़े और यहूदियों की तारीख़ में और भी बहुत-सी गवाहियां मौजूद हैं कि जिनसे यह पता चलता है कि यहूदियों को ऐसे पैग़म्बर का इंतिज़ार था जो आख़िरी नबी होगा और हिजाज़ में भेजा जाएगा। इसी वजह से जब भी वे अपने मर्कज़ से बिखरे हैं तो उनकी एक माक़ूल तायदाद उसी के इन्तिज़ार में यसरिब में जा बसी।

हमेशा की ज़िल्लत और नुक़्सान

पस कितनी बद-बख़्त व बदक़िस्मत है वह जमाअ़त जिसने हज़रत ईसा ﷺ की पैदाइश से लगभग 570 साल बाद तक इस इंतिज़ार में गुज़ारे कि यसरिब की इस धरती पर जब अल्लाह तआ़ला का वह पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके आएगा, तो हम उसकी पैरवी करके अपनी क़ौमी और मज़हबी बड़कप्पन और वक़ार (Prestige) को फिर एक बार हासिल करेंगे। यहां तक कि यसरिब के क़बीले औस व ख़ज़रज के मुक़ाबले में भी उसी की मदद के इंतिज़ार में रहते थे। मगर जब वह सच्चा नबी आया और उसने मूसा और ईसा और तौरेत और इंजील की तस्दीक़ करते हुए उनको हक़ का पैग़ाम सुनाया तो सबसे पहले उन्होंने (यहूदियों) ने ही इनके ख़िलाफ़ बुग़्ज़ व अ़दावत ज़ाहिर की और उसकी आवाज़ पर कान न धरते हुए उसकी मुख़ालफ़त को अपनी ज़िंदगी का मक़्सद बना लिया और नतीजे में हमेशा-हमेशा की ज़िल्लत और बदक़िस्मती को मोल ले लिया।

अल्लाह तआ़ला ने तो शुरू ही में उनको तंबीह कर दी थी कि दो बार की सरकशी और उसके अंजाम के बाद हम तुमको एक मौक़ा और इनायत करेंगे, पर अगर तुम उस वक़्त संभल गए और तुमने अल्लाह की फ़रमांबरदारी का सबूत दिया और अल्लाह के पैग़म्बर की सदाक़त का इक़रार करके दीने हक़ को क़ुबूल कर लिया तो हम भी तुम्हारी पुरानी अ़ज़्मत को वापस ले आएंगे और दीन व दुनिया की सआ़दत से तुम्हें नवाज़ेंगे, लेकिन अगर तुमने इस मौक़े को भी गंवा दिया और पैग़म्बर आख़िरुज़्ज़मां सल्लल्लाहु अ़लैहि व

Copyright OfflineDeeniApp

सल्लम के साथ भी पुरानी शरारतें कीं तो हम भी अ़मल के बदले का क़ानून लागू कर देंगे।

तर्जुमा–*'और अगर फिर वही करोगे तो हम फिर वही करेंगे।'* (17 : 8)

ग़रज़ जब यहूदियों ने इस बार भी अपनी क़ौमी आदत को हाथ से न जाने दिया तो अल्लाह तआ़ला ने भी उनके हक़ में यह आख़िरी फ़ैसला सुना दिया–

'ज़ुरिबत अ़लैहिमु ज़-ज़िल्लतु वल मसकनः व बाअ बिग़ज़बिम मिनल्लाह०'

और यही हुआ भी कि यहूदी क़ौम को फिर कभी इ़ज़्ज़त नसीब न हुई और न हुकूमत। वे सदियों यूरोप में हक़ीर नज़रों से देखे जाते रहे। (शेक्सपियर के ड्रामा 'मर्चेन्टस ऑफ़ वेनिस' 'शाई लॉक' का किरदार) यहां तक कि तीसरी बार जंगे अ़ज़ीम दोम (द्वितीय युद्ध) में हिटलर के हाथों लाखों यहूदियों का क़त्ले आम हुआ, उनके लिए एक बार फिर जीना दूभर हुआ और उनको जर्मनी और यूरोप से अमरीका मुंतक़िल होना पड़ा। वह अगरचे अमरीका और साम्राज्यवादी ताक़तों के सहारे मश्रिक़े वुस्ता (मध्यपूर्व) में एक छोटे से टुकड़े में अपनी हुकूमत क़ायम करने में कामियाब हो गए, लेकिन यह हुकूमत बड़ी ताक़तों के दम पर क़ायम है और कौन जानता है कि यह कब तक क़ायम रहती है। जो लोग इस वक़्त 'सोशलिस्ट' दुनिया का ज़वाल देख रहे हैं, वे अच्छी तरह समझ सकते हैं कि इसराईल का क़ियाम किस क़दर वक़्ती साबित हो सकता है। दूसरे लफ़्ज़ों में यहूदी के साथ कुछ ऐसी हक़ारत वाबिस्ता हो चुकी है कि कोई भी शरीफ़ आदमी ख़ुद को यहूदी कहलवाना पसन्द नहीं करता। क्या यह अल्लाह तआ़ला का ग़ज़ब नहीं?

नतीजे

1. अगरचे दुनिया 'दारुल अ़मल' (अ़मली की जगह) है, दारुल-जज़ा (बदवला पाने की जगह) नहीं, फिर भी अल्लाह तआ़ला कभी-कभी दुनिया में भी मुजरिमों को उनके अ़मल के बदले में इस तरह कस दिया करते हैं कि ख़ुद उनको और उनके ज़माने के लोगों को यह मानना पड़ता है कि यह उनके जुर्मों की सज़ा है और उनकी तारीख़ी ज़िंदगी बाद में आने वालों के लिए नसीहत

Copyright OfflineDeeniApp

और सबक़ का सामान बन जाता है, ख़ास तौर से ग़ुरूर (घमंड) और ज़ुल्म, ये दो ऐसे कड़े जुर्म और उम्मुल ख़बाइस (तमाम ख़राबियों की जड़) हैं कि घमंडी और ज़ालिम को आख़िरत की सज़ा के अलावा दुनिया में भी ज़रूर अपनी बदआ़मालियों का कुछ न कुछ ख़ामियाज़ा भुगतना पड़ता है, फ़र्क़ सिर्फ़ इतना होता है कि एक शख़्स के किब्र व ज़ुल्म का बदला उस आदमी की ज़िंदगी से मुताल्लिक़ होता है और क़ौमी और इज्तिमाई किब्र व ज़ुल्म का बदला क़ौमी और इज्तिमाई ज़िंदगी से वाबिस्ता हो जाता है, इसलिए पहले ज़िक्र किए गए मुद्दत में ज़्यादा अ़र्सा नहीं होता, मगर दूसरे ज़िक्र की मुद्दत कभी इतनी लम्बी नज़र आती है कि मज़्लूम क़ौम और जमाअ़त मायूसी की हद तक पहुंच जाती है और उसकी नज़र से यह प्वाइंट ओझल होजाता है कि क़ौमों के उरूज व ज़वाल, इज़्ज़त व ज़िल्लत और कामियाबी और नाकामी की उम्र किसी एक शख़्स की उम्र की तरह नहीं होती, बल्कि लम्बी होती है, फिर भी कुछ हालात में सबक़ के पहलुओं को नुमायां करने के लिए इस मुद्दत को कभी मुख़्तसर भी कर दिया जाता है। चुनांचे यहूदियों की तारीख़ के वाक़िए और हालात इसकी ज़िंदा मिसाल हैं और हैं हज़ारों के सबक़ लेने की बात।

2. हक़ का इंकार करने वाली और बातिल की परस्तार क़ौमों को अगर सबक़ हासिल करने के लिए दुनिया में किसी क़िस्म की सज़ा दी जाती या उनको अल्लाह के अ़ज़ाब में पकड़ा जाता है तो इसका यह मतलब नहीं है कि उन पर से आख़िरत का अ़ज़ाब (जहन्नम का अ़ज़ाब) टल जाता और माफ़ हो जाता है, बल्कि वह उसी तरह क़ायम रहता है जो अपने वक़्त पर होकर रहे।

तर्जुमा– *'और किया है हमने दोज़ख़ को काफ़िरों का क़ैदख़ाना।'* (78-8)

3. अल्लाह तआ़ला जब किसी क़ौम को उसकी बद-किरदारियों और उसके ज़ुल्मों और फ़सादों की वजह से अ़ज़ाब में मुब्तला करता और अपने अ़मल के बदले के क़ानून को उन पर नाज़िल करना चाहता है तो अल्लाह की सुन्नत यह जारी है कि वह बद-आ़मालियों के बाद फ़ौरन ही ऐसा नहीं करता, बल्कि एक अ़र्से तक उसको मोहलत देता और हादियों और पैग़म्बरों की मारफ़त उनको तर्ग़ीब व तर्हीब की राह से हिदायत पर लाने के तमाम मौक़े जुटाता है, ताकि अल्लाह की हुज्जत हर हरह तमाम हो जाए। पस अगर

Copyright OfflineDeeniApp

उसके बाद भी उनकी सरकशी और बग़ावत और ज़ुल्म व उदवान का तसलसुल उसी तरह क़ायम रहता है तो उसकी 'सख़्त पकड़' अचानक मुजरिम क़ौम को इस तरह दबोच लेती है कि फिर अपने नतीजे को पहुंच कर रहता है और उनके सामने अल्लाह का यह फ़रमान मुशाहदे की शक्ल में ज़ाहिर हो जाता है।

तर्जुमा– *'बहुत जल्द ज़ालिम जान लेंगे कि किस तरह इंक़िलाब के तरीक़े के ज़रिए वे उलट दिए जाएंगे।'* (26 : 257)

ज़ुलक़रनैन

531 क़ब्ल मसीह (लगभग)

तम्हीद

क़ुरआन मजीद में सूरः कह्फ़ में एक ऐसे बादशाह का ज़िक्र किया गया है जिसका लक़ब 'ज़ुलक़रनैन' है और जिसने मशरिक़ व मग़रिब (पूरब व पच्छिम) तक फ़त्हें कीं और फ़त्ह (जीत) के दौरान एक ऐसी जगह पर पहुंचा जहां बसने वालों ने उनसे शिकायत की कि याजूज माजूज हमको सताते और वहशियाना हमले करके फ़साद मचाते और बर्बादी लाते हैं। आप हमको उनसे नजात दिलाइए।

ज़ुलक़रनैन ने उनको तसल्ली दी और लोहे और तांबे को पिघला कर दो पहाड़ों के दर्मियान एक ऐसी रुकावट खड़ी कर दी कि शिकायत करने वाले याजूज व माजूज के फ़िल्ले से बच गए। यह वाक़िया तीन अहम हिस्सों में तक़्सीम किया जा सकता है–

1. ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत,
2. ज़ुलक़रनैन का महल्ल व वक़ूअ़ और आस-पास का इलाक़ा,
3. याजूज-माजूज के बारे में तै करना।

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत के बारे में नीचे लिखे क़ौल पेश किए गए हैं–

Copyright OfflineDeeniApp

1. मशहूरे ज़माना सिकन्दरे आज़म (Alexandar, the Great) ही ज़ुलक़रनैन है।

2. अरब और ईरान के शायरों ने अपने-अपने मुल्क और इलाक़े के अलग-अलग बादशाहों को ज़ुरक़रनैन कहा है।

3. क़ुरआन में ज़िक्र किया गया ज़ुलक़रनैन अरब वंश का था, सामिया ऊला में से था और हज़रत इब्राहीम के ज़माने का बादशाह था।

हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने ऊपर के क़ौलों से मुताल्लिक़ तफ़्सीली बहस के बाद आख़िर के लोगों में से मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की तह्क़ीक़ से एक हद तक इत्तिफ़ाक़ करते हुए जो कुछ लिखा है, वह पेश किया जाता है। मौलाना ने इस तफ़्सीली बहस को जिस उसूल के पेशेनज़र रखा है, वह यह है कि ज़ुलक़रनैन को एक ऐसा शख़्स समझना चाहिए जो हर एतबार से मर्दे सालेह और अपने वक़्त के दीने हक़ की पैरवी करने वाला होना चाहिए।

इस उसूल पर मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की तह्क़ीक़ के मुताबिक़ जो शख़्सियत पूरी उतरती है, वह इबरानी में ख़ोरस की है, जिसक फ़ारस के लोग अरश या गोरश कहते हैं, लेकिन यूनानी में साइरस और अरबी में ख़ुसरो कहा जाता है, जिसकी तफ़्सील नीचे दी जा रही है--

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत पर बहस करने से पहले हल तलब अहम सवाल यह है कि क़ुरआन मजीद ने इस मामले की तरफ़ किसलिए तवज्जोह की और ख़ुद से नहीं बल्कि किसी सवाल के जवाब पर तवज्जोह की तो सवाल करने वाले कौन हैं और किस बुनियाद पर उन्होंने इस सवाल को चुना? यही वह सवाल है जो असल में इस मामले की कुंजी है और अगरचे यह शाने नुज़ूल के सिलसिले में तफ़्सीर लिखने वालों और सीरत लिखने वालों ने इसकी तरफ़ तवज्जोह दिलाई है, लेकिन शख़्सियत की तह्क़ीक़ के वक़्त उन्होंने इस हक़ीक़त को नज़रंदाज़ कर दिया है।

साथ ही यह बात भी तवज्जोह के क़ाबिल है कि ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत, रोक (सद्द) का तै करना और याजूज माजूज की तह्क़ीक़ अगरचे तीन मुस्तक़िल मसअले हैं, फिर भी ये तीनों आपस में इस तरह जुड़े हुए हैं

Copyright OfflineDeeniApp

कि अगर किसी एक के बारे में खुलकर तस्क़ीक़ आ जाए तो क़ुरआन की तफ़्सील की रोशनी में बाक़ी दो मसअलों के हल में भी बहुत ज़्यादा आसानी हो जाती है।

ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ सवाल की शक्ल

मुहम्मद बिन इसहाक़ ने इब्ने अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि मक्का के क़ुरैश ने नज़्र बिन हारिस और उक़बा बिन मुईत को यहूदी उलेमा के पास यह पैग़ाम देकर भेजा कि चूंकि तुम ख़ुद को अह्ले किताब कहते हो और तुम्हारा दावा है कि तुम्हारे पास पीछे के पैग़म्बरों का वह इल्म है जो हमारे पास नहीं है, इसलिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुताल्लिक़ हम को यह बताएं कि पैग़म्बरी के उनके दावे की सच्चाई के बारे में आप लोगों की इल्हामी किताबों में कोई तज़्किरा या निशानियां मौजूद हैं या नहीं? चुनांचे क़ुरैश के वफ़्द ने यसरिब पहुंच कर यहूदी उलेमा से अपने आने का मक़्सद बयान किया और यहूदी अह्बार ने उनसे कहा, तुम और बातों को छोड़ दो, हम तुमको तीन सवाल बता देते हैं, अगर वह उनका सही जवाब दे दें तो समझ लेना, वे ज़रूर अपने दावे में सच्चे हैं और नबी मुर्सल हैं और तुम पर उनकी पैरवी वाजिब है और अगर वे सही जवाब न दे सकें, तो वह झूठे हैं, फिर तुमको अख़्तियार है जो मामला उनके साथ चाहो, करो। वे सवाल ये हैं–

1. उस आदमी का हाल बयान कीजिए जो पूरब से पच्छिम तक जीतता चला गया?

2. उन कुछ नवजवानों पर क्या गुज़रा जो काफ़िर बादशाह के डर से पहाड़ की खोह में जा छिपे थे?

3. रूह के मुताल्लिक़ बयान कीजिए

मक्का का वफ़्द वापस आया और उसने क़ुरैश को यहूदी उलेमा की बातें सुनाईं, क़ुरैश ने सुनकर कहा, अब हमारे लिए मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के बारे में फ़ैसला करना आसान हो गया कि यहूदियों के इन सवालों के जवाब एक उम्मी (अनपढ़) इंसान जभी दे सकता है कि हक़ीक़त में उस पर अल्लाह की ओर से वह्य आती हो, चुनांचे मक्का के क़ुरैश ने ख़िदमते

Copyright OfflineDeeniApp

अक़्दस में हाज़िर होकर तीनों सवाल पेश कर दिए। उन्हीं सवालों के जवाब के लिए आप पर सूरः कह्फ़ उतरी।

यहूदी, क़ुरैश और सवालों का इंतिख़ाब

एक बार फिर उस रिवायत पर ग़ौर फ़रमाइए जो मुहम्मद बिन इसहाक़ ने नक़ल फ़रमाई है और जिसका हासिल यह है कि अस्हाबे कह्फ़ और ज़ुलक़रनैन के बारे में मक्का के मुश्रिकों ने जो सवाल नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किए, वे असल में मदीना के यहूदियों के बार-बार ताकीद करने पर किए गए, तो अब क़ुदरती तौर पर यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर यहूदियों को इन वाक़ियों से ऐसी क्या दिलचस्पी थी कि जिसकी बुनियाद पर उन्होंने उसका चुनाव किया और उनके सही जवाबों को ख़ुदा के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नुबूवत के दावे और रिसालत की सच्चाई का मेयार ठहराया।

आख़िर ज़ुलक़रनैन के बारे में क्यों सवाल किया गया? इसका जवाब यह है कि यहूदियों ने इस सवाल में हक़ीक़त में एक ऐसी शख़्सियत का इंतिख़ाब किया है जो उनकी मज़हबी ज़िंदगी के सिलसिले में बहुत ही ज़्यादा अहमयित रखती है और जिसको वे अपनी मिल्ली और इज्तिमाई ज़िंदगी में किसी वक़्त भी नहीं भुला सकते, क्योंकि उस शख़्सियत की बदौलत बनी इसराईल ने बाबिल की ग़ुलामी से नजात पाई और उनका क़ौमी मर्कज़ किब्ला नमाज़ और मुक़द्दस मक़ाम यरूशलम (बैतुलमक़्दिस) हर क़िस्म की तबाही व बर्बादी के बाद उसी के हाथों दोबारा आबाद हुआ, चुनांचे इन अहम मामलों की बुनियाद पर यहूदियों के नज़दीक वह नजात दहन्दा अल्लाह का मसीह और अल्लाह का चरवाहा कहलाया, क्योंकि उनके नबियों के मुक़द्दस सहीफ़ों में उसके बारे में यही अलक़ाब दर्ज थे और उसकी अज़मत ज़ाहिर करते थे। यही वजह थी कि उन्होंने सवालों में उस शख़्सियत के मसले को भी मुंतख़ब किया, बल्कि उसी को ज़्यादा अहमियत दी, जैसा क़ुरआन के बयान करने के उस्लूब *'यस अलू-न-क अन ज़िलक़रनैन'* से वाज़ेह होता है। वह समझते थे कि जबकि मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दावा करते हैं कि वे अल्लाह के सच्चे

Copyright OfflineDeeniApp

पैग़म्बर और उसके तमाम सच्चे पैग़म्बरों के दीन को और अपने दीन को एक दीन समझते हैं, ख़ास तौर से बनी इसराईल के नबियों की अज़्मत व इज़्ज़त और उनकी सदाक़त व हक्क़ानियत को ज़ाहिर फ़रमाते हैं। अगर वह हक़ीक़त में अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर हैं तो 'उम्मी' (अपढ़) होने के बावजूद ज़रूर वह्य इलाही के ज़रिए उस आदमी के वाक़ियों पर रोशनी डाल सकेंगे, जिसकी वजह से बनी इसराईल के नबियों के गढ़ (यरूशलम) और बनी इसराईल के नबी और क़ौम बनी इसराईल को एक बुतपरस्त बादशाह की ग़ुलामी और तबाहकारियों से निजात मिली और जो अल्लाह का कलिमा बुलन्द करने में बनी इसराईल के नबियों का मददगार साबित हुआ।

बनी इसराईल के नबियों की पेशीनगोइयां

बनी इसराईल के नबी हज़रत यसइयाह, यर्मियाह, दानियाल, अज़रा और ज़करिया ﷺ की तौरात में खुलकर और साफ़ ज़िक्र की गई पेशीनगोइयों से नीचे लिखे वाक़िए साबित होते हैं–

1. जिस हस्ती ने बनी इसराईल को बातिल की ग़ुलामी से निजात दिलाई उसका नाम ख़ोरस था और वह फ़ारस और मीडिया का एक ही बादशाह था।

2. दानियाल नबी के मुकाशफ़ा और जिब्रील अ़लैहिस्सलाम की ताबीर ने इन दो हुकूमतों के इत्तिहाद की बुनियाद पर ही ख़ोरस को दो सींगोंवाला (ज़ुलकरनैन) बादशाह कहा और इस ख़्याल की बुनियाद पर बनी इसराईल में उसका लक़ब ज़ुलक़रनैन मशहूर हुआ।

3. मुताल्लिक़ सहीफ़ों में उस बादशाह को अल्लाह का मसीह, बनी इसराईल को निजात दिलाने वाला और अल्लाह का चरवाहा कहा गया।

4. यहूदियों में क़ौमी अ़सबियत और नस्ली तास्सुब की ज़्यादती के बावजूद इन्हीं वाक़ियों की बुनियाद पर वे ग़ैर इसराईली शख़्स को ऐसी बातों से याद करते हैं, जो वे सिर्फ़ अपने नबियों के हक़ में ही कहने के आदी हैं।

5. यसइयाह नबी के सहीफ़े में उसका उत्तर से आना बताया गया है। ख़ोरस बाबिल से उत्तर ही की तरफ़ (फ़ारस व मीडिया) से आया था, इसलिए वही इस पेशनगोई पर पूरा उतरता है।

Copyright OfflineDeeniApp

6. ज़करिया नबी की पेशीनगोई में उसको 'उगने वाली शाख़' बताया गया है। इससे मतलब यह है कि उसका उगना-बढ़ना और ज़ाहिर होना ग़ैर-मामूली हालात में होगा, जैसा कि आम तौर से ऐसी शख़्सियतों के बारे में अल्लाह की तरफ़ से होता रहा है जिनसे उसको कोई काम लेना होता है।

तारीख़ी गवाहियां

622 क़ब्ल मसीह में बाबिल व नैनवा की हुकूमतें बड़े उरूज और तरक़्क़ी पर थीं और ख़ोरस से पहले उसी ज़माने में ईरान की हुकूमत दो अलग-अलग हिस्सों में तक़्सीम थी। उत्तरी-पश्चिमी हिस्से को मीडिया (माहात) कहते थे और पश्चिमी हिस्से को फ़ारस और दोनों हिस्सों में क़बीलों के सरदार हुकूमत करते थे। ये क़बीलों की हुकूमतें उनके असर में और ताबेअ् थीं, लेकिन 612 क़ब्ल मसीह में जब नैनवा की आशूरी हुकूमत तबाह हो गई, तो अगरचे मीडिया आज़ाद हो गया और क़बीलों की हुकूमत की जगह धीरे-धीरे शाही हुक्मरानी की दाग़-बेल पड़ने लगी थी, फिर भी बाबुल के बादशाह बख़्त नस्र के क़ाहिराना इक़्तिदार के सामने ईरान का उभरना मुम्किन नज़र न आता था, मगर इन्हीं हालात के अन्दर 559 ई.पू. में क़ुदरत ने एकेमी नीज़िया बख़ामश ख़ानदान की एक ग़ैर मामूली हस्ती को नुमायां किया जो शुरू में अगरचे एक छोटी रियासत अश्शान का रईस था, मगर वह 559 ई.पू. में हैरत में डाल देने वाले अन्दाज़ में उसके अद्ल व इंसाफ़, सियासत व तदब्बुर, ख़ुदातरसी और हिल्म ने फ़ारस और माबात दोनों हुकूमतों को बिना किसी लड़ाई के उसके क़ब्ज़े में दे दिया और दोनों हुकूमतों के क़बाईली हुक्मरानों ने ब रज़ा व रग़बत उसको अपना बादशाह मान लिया। यही वह हस्ती है जिसको फ़ारस के लोग 'गोरश' या अरश और यहूदी ख़ोरस कहते हैं।

पच्छिमी मुहिम

ख़ोरस ने जब फ़ारस और मीडिया की हुकूमतों को मिलाकर फ़रमांरवाई का एलान किया, तो उससे क़रीबी ज़माने में उसको 'पच्छिमी मुहिम' पेश आई और इस वजह से पेश आई कि ख़ोरस से बहुत पहले मीडिया और ईरान के

Copyright OfflineDeeniApp

मग़रिब में वाक़े हुकूमत लीडिया 'एशिया-ए-कोचक' के दर्मियान आपसी जंग रहती थी, गरख़ोरस के ज़माने के लीडिया बादशाह 'क़ादूसिस' के बाप ने ख़ोरस (गोरश) के नाना अस्टियागस के बाप से सुलह कर ली थी और आपसी शादी-ब्याह का रिश्ता क़ायम करके मुस्तक़िल तौर से जंग का ख़ात्मा कर दिया था, लेकिन अब जबकि ख़ोरस ने फ़ारस और मीडिया दोनों को मिलाकर के एक मज़बूत हुकूमत क़ायम कर ली, तो एशिया-ए-कोचक का बादशाह क़ाइरिस उसको सह न सका और उसने बाप के किए हुए तमाम वायदों और समझौतों को तोड़कर मीडिया पर हमला कर दिया, तब गोरश मजबूर होकर अपनी राजधानी हमदान से तेज़ी के साथ आगे बढ़ा और दो ही लड़ाइयों के बाद तमाम एशिया-ए-कोचक पर क़ब्ज़ा कर लिया, चुनांचे मशहूर यूनानी तारीख़दां बैरोडोटस कहता है कि गोरशा की यह मुहिम ऐसी अजीब और मोजज़ों से भरी हुई थी के पटेरिया के मारके से सिर्फ़ चौदह दिन के अन्दर उसने लीडिया की मज़बूत राजधानी को क़ब्ज़े में कर लिया और करडीसन क़ैद होकर मुज्रिम की हैसियत में उसके सामने खड़ा नज़र आया। अब अगरचे काला सागर तक तमाम एशिया-ए-कोचक उसके तहत था, मगर फिर भी वह आगे बढ़ता चला गया, यहां तक कि पच्छिमी किनारे पर जा पहुंचा यानी राजधानी से चौदह सौ मील फ़ासला तै करके पच्छिमी तरफ़ जा खड़ा हुआ।

जुग़राफ़िया के माहिर कहते हैं कि लीडिया की राजधानी सारडेस पच्छिमी साहिल के क़रीब था और एशिया-ए-कोचक के पश्च्छमी किनारे की हालत यह है कि यहां समरना के क़रीब छोटे-छोटे जज़ीरे (द्वीप) निकल आने की वजह से पूरा साहिल (तट) झील की तरह बन गया है और बहे अजियन के इस किनारे का पानी ख़लीज (खाड़ी) की वजह से बहुत गदला रहता है और शाम के वक़्त सूरज डूबते हुए ऐसा मालूम होता है कि गोया एक गदले हौज़ में डूब रहा है।

तारीख़ के माहिर कहते हैं कि ख़ोरस ने अगरचे एशिया-ए-कोचक को बहादुरी से जीता, लेकिन वक़्त के दूसरे बादशाहों की तरह उसने जीते हुए मुल्कों पर ज़ुल्म नहीं किया और न उनको वतन से बेवतन किया, यहां तक कि सारडेस की जनता कों यह भी महसूस नहीं होने दिया कि यहां कोई

Copyright OfflineDeeniApp

इंक़िलाब आ गया है, मगर सिर्फ़ शख़्सियत का यानी उनको करडीसल की जगह खुरस जैसा आदिल बादशाह मिल गया, चुनांचे हीरोडोटिस लिखता है—

साइरस (ख़ोरस) ने अपनी फ़ौज को हुक्म दिया कि दुश्मन की फ़ौज के सिवा और किसी इंसान पर हाथ न उठाया जाए और दुश्मन की फ़ौज में भी जो कोई नेज़ा झुका दे उसे हरगिज़ न क़त्ल किया जाए और करडीस अगर तलवार भी चलाए, तब भी उसको तक्लीफ़ (पीड़ा) न पहुंचाई जाए।

साथ ही हुकूमत के बारे में उसका अक़ीदा वही था जो एक भले और नेक बादशाह का होना चाहिए। चुनांचे यूनानी तारीख़ लिखने वाला कीस्याज़ लिखता है।

'उसका अक़ीदा यह था कि दौलत बादशाहों के ज़ाती ऐश व आराम के लिए नहीं है, बल्कि इसलिए है 'कि भलाई के कामों में लगाया जाए और मातहतों को उससे फ़ायदा पहुंचे।'

पूरबी मुहिम

यही तारीख़ का माहिर हीरोडोट्स बयान करता है कि गोरश ने अभी बाबिल को जीता नहीं था कि उसको ईरान में एक अहम लड़ाई पेश आई, क्योंकि दूर मशिरक़ के कुछ वहशी और जंगलों में रहने वाले क़बीलों ने सरकशी और बग़ावत की थी और ये बाख़्तर (बकटीरिया) के क़बीले थे और कुछ तारीख़ी हवालों से यह बात खुले तौर पर मिलती है कि जिस जगह को आजकल मकरान कहते हैं, उस जगह के ख़ानाबदोश क़बीलों ने यह सरकशी की थी। यह जगह बेशक ईरान के लिए दूर पूरब का हुक्म रखती है, इसलिए कि इसके बाद पहाड़ हैं जिन्होंने आगे बढ़ने के लिए राह रोक दी है।

तीसरी (उत्तरी) मुहिम

बाबिल की फ़त्ह के अलावा तारीख़ गोरश की एक और मुहिम का ज़िक्र करती है, जो ईरान से उत्तर की ओर पेश आई। इस मुहिम में वह बहे कास्पियन (ख़ज़र) को दाहिनी तरफ़ छोड़ता हुआ काकेशिया के पहाड़ी सिलसिले तक पहुंचा है। इन्हीं पहाड़ों में उसको एक दर्रा मिला है जो दो

Copyright OfflineDeeniApp

पहाड़ों के दर्मियान फाटक की तरह नज़र आता है। इस जगह जब वह पहुंचा है तो एक क़ौम ने उससे याजूज व माजूज क़बीलों की लूट-मार की शिकायत की कि वे इस दर्रे में से निकल कर हमलावर होते और तोड़-फोड़ करके हमको तबाह व बर्बाद कर डालते हैं, चुनांचे उसने लोहा और तांबा इस्तेमाल करके इस फाटक को बन्द कर दिया और धातु की एक रोक (दीवार) क़ायम कर दी, जिसकी निशानियां इस वक़्त भी पाई जाती हैं। चुनांचे हीरोडोटस ज़म्बूफ़न दोनों यूनानी तारीख़दां साफ़ कहते हैं कि गोरश ने लीडिया की जीत के बाद सेथीन क़ौम के सरहदी हमलों की रोक-थाम के लिए ख़ास इंतिज़ाम किए।

और यह सच्चाई बहुत जल्द सामने आ जाएगी कि गोरश के ज़माने में याजूज माजूज क़बीलों में से यही सेथीन थे जो हमलावर होकर क़रीब की आबादियों को तबाह व बर्बाद करते रहते थे।

बाबिल की जीत

अब जबकि गोरश या ख़ोरस की जीतें इतनी फैल चुकी थीं कि ईरान के दूर पच्छिम में वह उत्तरी समुन्दर से लेकर काले समुन्दर के आख़िरी साहिल तक क़ाबिज़ था और मशिरक़े अक़्सा में मकरान के पहाड़ों तक बल्कि दारा के रक़बा हुकूमत की तफ़्सील को मुस्तनद मान लिया जाए तो सिंध नदी तक जीत चुका था और उत्तर में काकेशिया के पहाड़ी सिलसिले तक हुक्मरां था तो उसको इराक़ की मशहूर और मुतमद्दिन, मगर क़ाहिर व जाबिर हुकूमत बाबिल की तरफ़ मुतवज्जह होना पड़ा, चुनांचे उसकी तफ़्सील भी तारीख़ ही की ज़ुबानी सुनिए–

ख़ोरस से लगभग पचास वर्ष पहले बाबिल की हुकूमत पर बनू कद नज़्र (बख़्ते नस्र) नज़र आता है और उसके ज़िम्नी (ग़ैर बुनियादी) अक़ीदों के मुताबिक़ वह न सिर्फ़ बादशाह था, बल्कि बाबुली बुतों में से सबसे बड़े बुत का मज़्हर और देवता भी समझा जाता था और इसलिए उसका हक़ था कि वह जिस हुकूमत को चाहे, अपने क़हर व ग़ज़ब का शिकार बनाकर उसके बाशिंदों को हौलनाक और सख़्त अज़ाब में डाले। उनको हलाक करे या ग़ुलाम बनाकर इन वहशियों वाले ज़ुल्म व ज़्यादती को बाक़ी रखे। इसलिए इस

Copyright OfflineDeeniApp

बादशाह के ज़ुल्म बेपनाह और मुल्कों पर क़ब्ज़ा करने का उसका तरीक़ा वहशियाना था, जैसा कि पिछले पन्नों में बयान हो चुका है। उसने अपनी हुकूमत के दौर में यरूशलम (बैतुल मक़्दिस) पर तीन बार हमले किए और फ़लस्तीन को तबाह व बर्बाद करके तमाम बाशिंदों को मवेशियों की तरह हंका कर बाबिल ले गया। एक यहूदी तारीख़ लिखने वाला जो-ज़ेफ़स कहता है—

'कोई सख़्त से सख़्त बेरहम क़साई भी इस वहशत व ख़ूंख़्वारी के साथ भेड़ों को मज़बह (ज़िब्ह करने की जगह) में नहीं ले जाता जिस तरह बनू कद नज़्र बनी इसराईल को बाबिल में हंका कर ले गया।'

बाबुल की हुकूमत आशूरी हुकूमत की तबाही के बाद और भी ज़्यादा मज़बूत और क़ाहिर हुकूमत हो गई थी और उस ज़माने में आस-पास की ताक़तों में किसी को भी यह जुर्रात नहीं थी कि वह इस जाबिर हुकूमत के क़हर व ज़ुल्म की जड़ काट सके, लेकिन बैतुल मक़्दिस की जीत के कुछ दिनों बाद बख़्त नस्र मर गया और उसका जानशीं नायूनीदस मुक़र्रर हुआ, मगर उसने हुकूमत का तमाम बोझ शाही ख़ानदान के एक आदमी बेल शाज़ार पर डाल दिया। यह आदमी अगरचे बहुत अय्याश और ज़ालिम था, मगर बख़्त नस्र की तरह बहादुर और जरी नहीं था, उसके ज़माने में बनी इसराईल के क़ैदियों में से हज़रत दानियाल ﷺ ने अपनी सूझ-बूझ और हिक्मत भरी चालों से बाबुल दरबार को इस तरह क़ब्ज़े में कर लिया था कि वह हुकूमत के ख़ास मुशीर समझे जाते थे। हज़रत दानियाल ने बेल शाज़ार को बार-बार उसकी ज़ालिम और ऐश भरी ज़िंदगी के ख़िलाफ़ डांट-फटकार और तंबीह की, मगर उसने कुछ सुनवाई नहीं की, यहां तक कि उन्होंने हुकूमत के मामलों से किनाराकशी अख़्तियार कर ली।

इधर यह वाक़िया पेश आया कि बाबुल के लोग अर्से से बेल शाज़ार के ज़ुल्मों से छुटकारा पाने की तज्वीज़ें सोच रहे थे कि उनके कुछ सरदारों ने यह मश्विरा दिया कि क़रीब की ज़बरदस्त ताक़त ईरान से मदद हासिल की जाए और उसके इंसाफ़ पसन्द हुक्मरां से यह अर्ज़ किया जाए कि वह हमको बेल शाज़ार के ज़ुल्मों से निजात दिलाए और उसको यह इत्मीनान दिलाया जाए कि

Copyright OfflineDeeniApp

बाबुल के लोग हर तरह उसकी मदद करने को तैयार हैं। चुनांचे सन् 54 ई. पू. बाबिली सरदारों का एक वफ़्द ख़ोरस के पास उस वक़्त पहुंचा जबकि वह अपनी मश्रिक़ी मुहिम में लगा हुआ था। ख़ोरस ने उनका स्वागत किया और उनको इत्मीनान दिलाया कि वह अपनी मुहिम से फ़ारिग़ होकर ज़रूर बाबुल पर हमला करेगा और उनको बेल शाज़ार जैसे ज़ालिम और ऐयाश बादशाह से नजात दिलाएगा। ख़ोरस जब अपनी मुहिम से फ़ारिग़ हो गया तो वायदे के मुताबिक़ उसने बाबुल पर हमला कर दिया।

तारीख़ इस पर एक राय है कि उस अह्द में बाबुल से ज़्यादा ताक़त रखने वाली और किसी के क़ब्ज़े में न आने वाली कोई जगह नहीं थी, इसलिए कि उसकी शहर पनाह इस दर्जा तह दर तह मोटी और मज़बूत थी कि कोई जीतने वाला उसको क़ाबू में करने की जुर्रात नहीं कर सकता था, लेकिन ख़ोरस का इंसाफ़ और रहम के हालात देखकर बाबुल की प्रजा ख़ुद इस क़दर उस पर मोहित थी कि बाबुल हुकूमत का एक गवर्नर गोबरयास ख़ुद उसके साथ था और हीरोडोटस के क़ौल के मुताबिक़ उसी ने दरिया में नहर काटकर उसका बहाव दूसरी तरफ़ कर दिया और दरिया की जानिब से फ़ौज शहर में दाख़िल हो गयी और ख़ोरस के वहां तक पहुंचने से पहले ही शहर फ़त्ह हो गया और बेल शाज़ार मारा गया।

ख़ोरस का मज़हब

ख़ोरस के मज़हब के बारे में तौरात और तारीख़ दोनों एक राय हैं कि जिस तरह उसने ईरान के बंटे हुए हिस्सों और छोटी-छोटी रियासतों को एक करके एक बड़ी शहंशाही क़ायम की और जिस तरह वक़्त के जाबिर व क़ाहिर बादशाहों के ख़िलाफ़ उसने इंसाफ़ और रहमदिली पर अपनी हुकूमत को मज़बूत किया, उसी तरह वह दीन व मज़हब के बारे में भी ईरान के राइज मज़हब के ख़िलाफ़ दीने हक़ के ताबे था, जैसा कि अज़रा नबी और दानियाल नबी की किताबों (Old Testament–अज़रा नबी और दानियाल नबी की किताबों) से अच्छी तरह मालूम होता है, साथ ही दारा के उन कतबों (शिला लेखों) से जो पहाड़ों की चट्टानों पर नक़्श करा दिए गए थे, इसकी ताईद

Copyright OfflineDeeniApp

होती है कि दारा और उसके पहले के ख़ोरस का मज़हब ईरान के पुराने मज़हब 'मोगोश' (मजूसी मज़हब) से जुदा और मुख़ालिफ़ था और यह कि दारा जिस हस्ती को अह्वर मोज़दह कहकर पुकारता है और जो उसकी ख़ूबियां बयान करता है, उससे यह साफ़ मालूम होता है कि वह और उसका पेशरो (पहले का) 'दीने हक़' पर थे और अरबी का 'अल्लाह', सुरयानी का 'उलूहेम' और इबरानी का 'एल' और ईरान का 'अह्वर मोज़दह' एक ही मुक़द्दस हस्ती के नाम हैं, क्योंकि दारा कहता है, वही यकता है और बेहमता है और कायनात का पैदा करने वाला है और ख़ैर व शर अकेले उसी के हाथ में है, साथ ही तौहीदे ख़ालिस पर ईमान के साथ-साथ आख़िरत पर ईमान रखता और सीधे रास्ते पर उभारता और गुनाहों से बचने की तालीम ज़ाहिर करता है और ज़ाहिर है कि अक़ीदों की यह तफ़्सील मजूसी मज़हब के बिल्कुल ख़िलाफ़ है और इसीलिए दारा मजूसियों पर कामियाबी हासिल करने का अह्वर मूज़दह की मेहरबानी क़रार देता है।

रही यह बात कि ख़ोरस और दारा वक़्त के किस मज़हब की पैरवी करने वाले थे तो इसका जवाब थोड़ी-सी तम्हीद के बाद आसानी से दिया जा सकता है।

ईरान और ज़रतुश्त मज़हब

ईरान के पुराने मज़हब की पैरवी करने वाले मोगोश (मजूस) कहे जाते थे लेकिन 550 ई.पू. और 583 ई.पू. के दर्मियान उत्तर पच्छिमी ईरान यानी क़फ़क़ाज़ और आज़र बाई जान के उसके क़रीब जो अर्स वादी के नाम से मशहूर है, एक मुलहिम मिनल्लाह हस्ती ज़ाहिर हुई। यह इब्राहीम ज़रदुश्त की शख़्सियत थी। उन्होंने ईरान के मजूसियों में दीने इलाही का एलान किया और रुश्द व हिदायत और दावत व तब्लीग़ का फ़र्ज़ अंजाम दिया।

अगरचे ज़रदुश्त से जुड़ी हुई इलहामी किताब अवेस्ता भी क़ुरआन पाक से पहले की इलहामी किताबों की तरह घट-बढ़ का शिकार हो चुकी है, फिर भी उसमें ऐसे जुम्ले हैं जिनका मतलब सच्ची इलहामी किताबों में मुश्तरक पाया जाता है, यानी शैतानी वस्वसों से पनाह और अल्लाह रहमान व रहीम

Copyright OfflineDeeniApp

की मदह व सना आज अरब और यूरोप के तहक़ीक़ करने वाले तारीख़ के माहिर भी बग़ैर किसी झिझक के दलीलों और निशानियों की रोशनी में इस हक़ीक़त का एलान करते हैं कि ज़रदुश्त का मज़हब ईरान के पुराने मज़हब से जुदा 'दीने हक़' था, जिसमें मज़ाहिरपरस्ती, अस्नामपरस्ती, आतिशपरस्ती सब मना की गई थी और एक अल्लाह की परस्तिश के सिवा किसी की परस्तिश जायज़ न थी।

ज़ुलक़रनैन और क़ुरआन

ज़ुलक़रनैन की शख़्सियत के बारे में अगरचे दो अहम बहसें यानी ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ तौरात की पेशीनगोइयों और तारीख़ी गवाहियों के वाद अभी एक सबसे अहम मसूअला यह बाक़ी है कि क्या वह शख़्सियत जिसके लिए तौरात और तारीख़ से रिवायतें व गवाहियां पेश की गई हैं, हक़ीक़त में क़ुरआन में ज़िक्र किए गए ज़ुलक़रनैन ही की शख़्सियत है। तो उसके जवाब से पहले क़ुरआन की इन आयतों को पेश कर देना ज़रूरी है जो सूरः कह्फ़ में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ बयान की गई हैं, ताकि बाद में मेल करने से अच्छी तरह वाज़ेह हो सके।

क़ुरआन (सूरः कह्फ़) में ज़ुलक़रनैन का वाक़िया इस तरह ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—ऐ पैग़म्बर! तुमसे ज़ुलक़रनैन का हाल मालूम करते हैं, तुम कह दो— मैंने उसका कुछ हाल तुम्हें (कलामे इलाही में से) में पढ़कर सुना देता हूं। हमने उसे ज़मीन में हुक्मरानी दी थी, साथ ही उसके लिए हर तरह का साज़ व सामान मुहैया करा दिया था, तो (देखो) उसने (पहले) एक मुहिम के लिए साज़ व सामान किया (और पच्छिम की ओर निकल खड़ा हुआ) यहां तक कि (चलते-चलते) सूरज के डूबने की जगह पहुंच गया। वहां उसे सूरज ऐसा दिखायी दिया, जैसे स्याह दलदल की झील में डूब जाता है और उसके क़रीब एक गिरोह को भी आबाद पाया। हमने कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! (अब ये लोग तेरे अख़्तियार में है) तू चाहे इन्हें अज़ाब में डाले, चाहे अच्छा सुलूक करके अपना बना ले। ज़ुलक़रनैन ने कहा, हम नाइंसाफ़ी करने वाले नहीं जो सरकशी

Copyright OfflineDeeniApp

करेगा, उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर उसे अपने परवरदिगार की ओर लौटना है। वह (बदआमालों) को सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा और जो ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा तो उसके बदले उसे भलाई मिलेगी और हम उसे ऐसी ही बातों का हुक्म देंगे, जिसमें उसके लिए राहत व आसानी हो। इसके बाद उसने फिर तैयारी की और (पूरब) की तरफ़ निकला, यहां तक कि सूरज निकलने की आख़िरी हद तक पहुंच गया। उसने देखा, सूरज एक गिरोह पर निकलता है जिससे हमने कोई आड़ नहीं रखी है, मामला यों ही था और जो कुछ ज़ुलक़रनैन के पास था, इसकी हमें पूरी ख़बर है।

उसने फिर साज़ व सामान तैयार किया और तीसरी मुहिम में निकला, यहां तक कि (दो पहाड़ों की) दीवारों के दर्मियान पहुंच गया। वहां उसने देखा पहाड़ों के उस तरफ़ एक क़ौम आबाद है, जिससे बात की जाए तो कुछ नहीं समझती। उस क़ौम ने (अपनी ज़ुबान में) कहा, ऐ ज़ुलक़रनैन! याजूज और माजूज इस मुल्क में आकर लूट-मार करते हैं। क्या ऐसा हो सकता है कि आप हमारे और उनके दर्मियान एक रोक बना दें। इस ग़रज़ से हम आपके लिए कुछ ख़िराज मुक़र्रर कर दें। ज़ुलक़रनैन ने कहा, मेरे परवरदिगार ने जो कुछ मेरे क़ब्ज़े में दे रखा है, वही मेरे लिए बेहतर है। (तुम्हारे ख़िराज का मुहताज नहीं), मगर तुम अपनी ताक़त से (इस काम में) मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और याजूज माजूज के दर्मियान एक मज़बूत दीवार खड़ी कर दूंगा। (इसके बाद उसने हुक्म दिया) लोहे की सिलें मेरे लिए मुहैया कर दो। फिर जब (तमाम सामान मुहय्या हो गया और) दोनों पहाड़ों के दर्मियान दीवार उठाकर उसके बराबर बुलन्द कर दी तो हुक्म दिया, (भट्ठियां सुलगाओ और) उसे धौंको। फिर जब (इस क़दर धौंका गया कि) बिल्कुल आग की तरह लाल हो गई, तो कहा, गला हुआ तांबा लाओ, उस पर उंडेल दें, चुनांचे (इसी तरह) एक ऐसी रोक बन गई, न तो (याजूज व माजूज) इस पर चढ़ सकते थे, न उसमें सुरंग लगा सकते थे।

ज़ुलक़रनैन ने (काम पूरा होने के बाद) कहा, यह जो कुछ हुआ तो (हक़ीक़त में) मेरे परवरदिगार की मेहरबानी है। जब मेरे परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात ज़ाहिर होगी तो वह इसे ढा कर रेज़ा-रेज़ा कर देगा और मेरे

Copyright OfflineDeeniApp

परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात सच है, टलने वाली नहीं और उस दिन हम ऐसा करेंगे कि उनमें से एक क़ौम दूसरी क़ौम पर मौजों की तरह आ पड़ेगी और फूंका जाएगा नरसिंहा (सूर), पस इकट्ठा करेंगे हम उनको।'

(कह्फ़ 18 : 83-90)

पस ज़ुलक़रनैन के बारे में क़ुरआन ने किन सच्चाइयों को ज़ाहिर किया है और ख़ोरस से मुताल्लिक़ वाक़िए किस तरह इन हक़ीक़तों के साथ मुताबक़त रखते हैं, नीचे की लाइनों में तर्तीबवार पढ़ने के लिए दिए जा रहे हैं—

1. क़ुरआन के बयान करने का तरीक़ा बताता है कि उसने ज़ुलक़रनैन का वाक़िया दूसरों के सवाल करने पर बयान किया है और सवाल करने वालों ने उसी लक़ब के साथ उसको याद किया है, क़ुरआन ने अपनी ओर से लक़ब तज्वीज़ नहीं किया।

नतीजा—सही रिवायतों से यह साबित हो चुका है कि यह सवाल यहूदियों के बार-बार उकसाने पर मक्का के क़ुरैश ने किया था और सवाल में यह बात थी कि ऐसे बादशाह का हाल बताओ जो पूरब-पच्छिम में फिर गया और जिसको तौरेत में सिर्फ़ एक जगह इस लक़ब से याद किया गया है और तौरेत यह कहती है कि दानियाल के क़ौल में ईरान के एक बादशाह को ऐसे मेंढे की शक्ल में दिखाया गया है, जिसके दो सींग ज़ाहिर थे और जिब्रील फ़रिश्ते ने इन दो सींगों वाले मेंढे (ज़ुलक़रनैन) की ताबीर यह दी कि इससे वह वादशाह मुराद है जो फ़ारस और मीडिया दो बादशाहतों का मालिक होगा और यसइयाह नबी की पेशीनगोई और तारीख़ दोनों की इसमें राय एक है कि ईरान का यह वादशाह ख़ोरस था जिसने फ़ारस और मीडिया दोनों को मिलाकर शहंशाही की। यहूदियों को इससे इसलिए दिलचस्पी थी कि उनके नवियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के इलहामों के मुताबिक़ वह उनको नजात दिलाने वाला था, चुनांचे यहूदियों का दिया हुआ यह लक़ब 'ज़ुलक़रनैन' ख़ुद ईरान के शाही ख़ानदान में इस दरजा मशहूर व मक़्बूल हुआ कि उन्होंने ख़ोरस के मरने के बाद उसका मुजस्समा (Statue) बनाया, तो उसमें भी तारीख़ी यादगार के तौर पर दानियाल के ख़्वाब को तस्वीरों के ज़रिए दिखाया। चूंकि

Copyright OfflineDeeniApp

यसइयाह नबी के सहीफ़े में एक जगह उनको उक़ाब भी कहा गया है, इसीलिए इस्तख़र के क़रीब ख़ोरस की जो पत्थर की मूर्ति निकली है, उसको इसी मिले-जुले ख़्याल पर ही बनाया गया है कि उसके सर के दोनों तरफ़ दो सींग हैं और सर पर एक उक़ाब है और ख़ोरस के सिवा दुनिया के किसी बादशाह के बारे में यह कल्पना मौजूद नहीं है।

पस यह दलील है इस बात की कि यहूदियों को अपने निजात दिलाने वाले 'अल्लाह के मसीह' और 'अल्लाह के चरवाहे' के साथ इस दर्जा दिलचस्पी थी कि उन्होंने नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सच होने का मेयार उस बादशाह के वाक़ियों के इल्म को क़रार दिया और उसी को सामने रखकर क़ुरआन ने उस बादशाह (ख़ोरस) का मुनासिबेहाल ज़िक्र किया है।

2. क़ुरआन कहता है कि वह बहुत शौकत वाला बादशाह था और अल्लाह ने उसको हुकूमत के हर क़िस्म के साज़ व सामान से नवाज़ा था।

ख़ोरस (गोरश) के बारे में तौरात और पुराने व नये तारीख़ी हवालों से यह साबित हो चुका है कि उसने न सिर्फ़ ईरान की अलग-अलग क़बाइली हुकूमतों को ही एक शहंशाही में जोड़ दिया था, बल्कि बाबुल व नैनवा की शानदार हुकूमतों पर भी क़ब्ज़ा करके अपनी जुग़राफ़ियाई हैसियत में ऐसे फैले मुल्क का मालिक हो गया था कि अल्लाह तआ़ला ने उसको ज़िंदगी और हुकूमत के तमाम साज़ व सामान से मालामाल कर दिया।

3. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने ज़िक्र के क़ाबिल तीन मुहिमें पूरी की हैं।

एतबार के क़ाबिल तारीख़ी गवाहियां साबित करती हैं कि ख़ोरस ने तीन ज़िक्र के क़ाबिल मुहिमें सर कीं।

4. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने पहले पच्छिम की ओर एक मुहिम सर की।

तर्जुमा–'पस उसने (एक मुहिम के लिए) साज़ व सामान किया और पच्छिम की ओर निकल खड़ा हुआ, यहां तक कि (चलते-चलते) सूरज के डूबने की जगह पहुंचा, वहां उसे सूरज ऐसा दिखाई दिया जैसे एक स्याह दलदल

Copyright OfflineDeeniApp

(कस्फ़ : 88-86)

में डूब जाता है।'

यूनानी तारीख़ लिखने वाला हीरोडोटस और कुछ तारीख़ लिखने वालों के हवाले से यह साबित हो चुका है कि ख़ोरस को सबसे पहली और अहम मुहिम पच्छिम की तरफ़ पेश आई, जबकि लीडिया (एशिया-ए-कोचक) के बादशाह करडीसस के ग़द्दारी भरे तरीक़े के ख़िलाफ़ उसको लीडिया पर हमला करना पड़ा। यह जगह ईरान के पच्छिम में वाक़े है और इसकी राजधानी 'सारडीस' एशिया-ए-कोचके के आख़िरी पच्छिमी किनारे से क़रीब थी। हीरोडोनटस के कहने के मुताबिक़ ख़ोरस की यह मुहिम ऐसे मोजज़े भरे अन्दाज़ में भी थी कि वह पच्छिम की ओर फ़त्हें हासिल करता हुआ चौदह दिन के अन्दर 'एशिया-ए-कोचक' के आख़िरी साहिल पर जा खड़ा हुआ और सारडेस जैसे मज़बूत शहर को क़ब्ज़े में कर लिया। अब उसके सामने समुन्दर के सिवा और कुछ न था। समरना के क़रीब बहरे एजिन (Aegan sea) का यही वह साहिल है जो अपने अन्दर बहुत से छोटे-छोटे जज़ीरे रखने की वजह से झील बन गया है और उसका पानी बहुत गन्दा रहता है और शाम के वक़्त जब सूरज डूबता है तो यों मालूम होता है, गोया काले दलदल में डूब रहा है।

5. क़ुरआन कहता है कि अल्लाह तआ़ला ने वहां की क़ौम पर ज़ुलक़रनैन को ऐसा ग़लबा दे दिया था कि वह जिस तरह चाहे उनके साथ मामला करे, चाहे उनकी बग़ावत के बदले में उनको सज़ा दे और चाहे तो उनके साथ अच्छा व्यवहार करके उनको माफ़ कर दे।

तारीख़ी हवालों से यह साबित है कि ख़ोरस (के अरश) ने लीडिया को फ़त्ह करके आम बादशाहों की तरह उसको बर्बाद नहीं किया, बल्कि इंसाफ़पसन्द, नेक और सालेह बादशाह की तरह माफ़ी का एलान कर दिया और उनको बे-वतन कर दिया, बल्कि करडेसस की गिरफ़्तारी के सिवा यह भी नहीं महसूस होने दिया कि यहां कोई हुकूमत में इंक़िलाब आया है। अलबत्ता करडेसस की जुर्रात के इम्तिहान के लिए एक तो उसको चिता में जलाने का हुक्म दिया, मगर जब वह मरदानावार चिता के अन्दर बैठ गया तो उसको भी माफ़ कर दिया और उसके साथ एज़ाज़ व इकराम के साथ पेश आया।

6. क़ुरआन ने ज़ुलक़रनैन का जो क़ौल नक़ल किया है उससे मालूम होता

Copyright OfflineDeeniApp

है कि वह 'मोमिन' भी था और 'नेक और इंसाफ़पसन्द' भी। वह कहता है, 'ज़ुलक़रनैन ने कहा, हम नाइंसाफ़ी करने वाले नहीं हैं। जो सरकशी करेगा, उसे ज़रूर सज़ा देंगे, फिर उसे अपने परवरदिगार की तरफ़ लौटना है। वह (बद आमालों को) सख़्त अ़ज़ाब में मुब्तला करेगा और जो ईमान लाएगा और अच्छे काम करेगा, तो उसके बदले में उसको भलाई मिलेगी और हम उसे ऐसी ही बातों का हुक्म देंगे, जिसमें उसके लिए आसानी और राहत हो। (18 : 87-88)

तौरेत में ख़ोरस का यरूशलम से मुताल्लिक़ फ़रमान और दारा के कतबे व एलान, ज़िक्र किए गए तौरात 'अवेस्ता' की अन्दरूनी गवाहियों और तारीख़ी बयानों में से सब गवाहियां इंकार न करने के क़ाबिल की हद तक यह साबित करती हैं कि ख़ोरस और दारा मोमिन थे और वक़्त के सच्चे, दीन के पैरो, बल्कि उसकी तब्लीग़ करने वाले और उसकी ओर बुलाने वाले थे, वे इब्राहीम ज़रदुश्त की इत्तिबा करने वाले, एक ख़ुदा की परस्तिश करने वाले और आख़िरत के क़ायल थे और उनका दीन बनी इसराईल के नबियों की तालीम के एक शाख़ की हैसियत रखता था जो दारा के बाद बहुत ही जल्द बदल कर और बिगड़ कर रह गया।

7. कुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन ने दूसरी मुहिम पूरब की तरफ़ सर की और वह चलते-चलते जब सूरज निकलने की आख़िरी हद पर पहुंचा तो उसको वहां ख़ानाबदोश क़बीलों से वास्ता पड़ा—

तर्जुमा—*इसके बाद उसने फिर तैयारी की और पूरब की तरफ़ निकला, यहां तक कि मकरान के ख़ानाबदोश क़बीलों ने सरकशी की जो कि उसकी राजधानी से पूरब में पहाड़ी इलाक़े तक आबाद थे और जिनसे मुताल्लिक़ मुहिम की तफ़्सील पिछले पन्नों में बयान की जा चुकी।*

इस जगह यह बात भी ध्यान देने की है कि कुरआन ने ज़ुलक़रनैन की ज़िक्र के क़ाबिल पच्छिमी और पूर्वी मुहिमों के लिए 'मग़्रिबश्शम्स' (सूरज डूबने की जगह) और 'मतलइश शम्स' (सूरज निकलने की जगह) की ताबीर अख़्तियार की है। इससे कुछ लोगों को यह ग़लतफ़हमी हो गई कि ज़ुलक़रनैन सारी दुनिया का बिना किसी शरीक के हुक्मरां बन गया था और उसने दुनिया के दोनों तरफ़ के आख़िरी चौथाई इलाक़ों तक क़ब्ज़ा कर लिया था, हालांकि

Copyright OfflineDeeniApp

तारीख़ी एतबार से यह किसी भी बादशाह के लिए साबित नहीं है और न क़ुरआन ने इस मक़्सद के लिए ऐसा कहा है, बल्कि इसका साफ़ और खुला मतलब यह है कि ज़ुलक़रनैन अपनी हुकूमत के मर्कज़ के लिहाज़ से मग़रिब की इंतिहा और मशरिक़ की इंतिहा तक पहुंचा है और मग़रिब में वह इस हद तक पहुंच गया कि जहां ख़ुश्की का सिलसिला शुरू होकर समुन्दर शुरू हो जाता है और मशरिक़ में इस हद तक पहुंचा कि, वहां ख़ानाबदोश क़बीलों के सिवा कोई शहरी आबादी नहीं थी। यह मतलब इतना साफ़ है कि अगर बे-दलील ग़लतफ़हमी की वजह से ऊपर वाला क़ौल नक़ल न किया गया होता, तो हर आदमी ज़ुबान के मुहावरे के लिहाज़ से यही समझता, जो हमने समझा है। चुनांचे आज भी हम हिन्दुस्तान में रहते हुए दूर पूरब और दूर पच्छिम से 'बहुत दूर के मुल्क' मुराद लेते हैं और इन लफ़्ज़ों को इस बात में बांध नहीं देते कि पूरब और पच्छिम के वे किनारे मुराद हैं जिनके बाद दुनिया का कोई हिस्सा भी बाक़ी न रहा हो, अलबत्ता दलीलों और क़रीनों के ज़रिए से कभी-कभी ये मानी भी मुराद हो जाते हैं।

दूर पच्छिम और दूर पूरब के इस लफ़्ज़ को जो क़ुरआन ने ज़ुलक़रनैन के सिलसिले में बयान किया है, अगर और गहरी नज़र से देखा जाए तो यह मालूम होता है कि ज़ुलक़रनैन (ख़ोरस) से मुताल्लिक़ तौरात ने चूंकि यही ताबीर की थी, इसलिए बहुत मुम्किन है, क़ुरआन ने सवाल करने वालों को उसका वाक़िया सुनाते वक़्त इस लफ़्ज़ को अख़्तियार करना पसन्द किया हो। यसइयाह नबी के सहीफ़े में ख़ोरस के हक़ में ठीक यही ताबीर मिलती है और इसी तरह ज़करिया नबी के सहीफ़े में भी।

ज़ाहिर है कि इन दोनों जगहों पर दुनिया के दोनों तरफ़ आख़िरी कोने मुराद नहीं हैं, बल्कि जिनका ज़िक्र है उनकी हुकूमत या रहने की जगह से मशरिक़ी और मग़रिबी सम्तें (दशाएं) मुराद हैं।

8. क़ुरआन कहता है कि ज़ुलक़रनैन को ज़िक्र के क़ाबिल तीसरी मुहिम पेश आई और जब वह ऐसी जगह पहुंचा जहां दो पहाड़ों की फांकें एक दर्रा बनाती थीं, तो वहां उसको एक ऐसी क़ौम से वास्ता पड़ा जो उसकी ज़ुबान और बोली को नहीं जानती थी, उन्होंने ज़ुलक़रनैन पर (किसी तरह) यह साफ़

Copyright OfflineDeeniApp

किया कि इन पहाड़ों के दर्मियान से निकल कर हम को याजूज और माजूज सताते और ज़मीन में फ़साद फैलाते हैं, क्या आप हमारी इतनी मदद करेंगे कि हम से माली टैक्स लेकर उनके और हमारे दर्मियान सीमा-रेखा हो जाए और रोक बन जाए। ज़ुलक़रनैन ने कहा, मेरे पास ख़ुदा का दिया सब कुछ है, इसकी मुझे उजरत की ज़रूरत नहीं, अलबत्ता इसके बनाने में मेरी मदद करो। इन लोगों ने ज़ुलक़रनैन के हुक्म से लोहे के टुकड़े जमा किए और उनको ज़ुलक़रनैन ने दोनों पहाड़ों के दर्मियान 'सद्द' बना दी और फिर तांबा पिघला कर उस लोहे की दीवार को मज़बूत किया।

तारीख़ की न इंकार की जा सकने वाली गवाहियों ने यह साबित कर दिया है कि ख़ोरस को उत्तर की तरफ़ एक अहम मुहिम पेश आई, जिसमें काकेशिया (जबले क़ोक़ा या क़ाफ़ पर्वत) के पहाड़ी सिलसिले में ऐसे दो पहाड़ों के क़रीब एक क़ौम मिली जिनकी फांकों के दर्मियान क़ुदरती दर्रा था और पहाड़ के दूसरी तरफ़ से सेथेनियन क़बीलों के जंगली और ग़ैर-मुहज़्ज़ब लुटेरे दल के दल आकर उस क़ौम पर हमला करते और लूट-मार करके दर्रे के रास्ते वापस हो जाया करते थे। ख़ोरस जब उस जगह पहुंचा, तो उस आबादी के लोगों ने हमलावर लुटेरों की शिकायत करते हुए उससे पहाड़ों के दर्मियान 'सद्द' (दीवार) बना देने की दरख़्वास्त की। ख़ोरस ने उनकी दरख़्वास्त को मंजूर किया और लोहे और तांबे से मिला कर एक सद्द क़ायम कर दी, जिसको वक़्त के गाग और मीगाग असभ्य (सेन्थनीन) क़बीले अपनी दरिन्दगी और ख़ूंख़्वारी के बावजूद न तोड़-फोड़ सके और न उसके ऊपर से उतर कर हमलावर हो सके और इस तरह पहाड़ों के दर्रे की आबादी उनके हमलों से बच गई।

याजूज व माजूज

अब दूसरा मसला याजूज और माजूज के तै करने का है। तफ़सीर लिखने वालों और इस्लाम की तारीख़ लिखने वालों ने झूठी-सच्ची रिवायतों का वह तमाम ज़ख़ीरा नक़ल कर दिया है जो इस सिलसिले में बयान की गई हैं और साथ ही यह भी वाज़ेह कर दिया है कि कुछ रिवायतों के अलावा इस

Copyright OfflineDeeniApp

सिलसिले की तमाम रिवायतें झूठ और ख़ुराफ़ात का मज्मूआ हैं, जो न अक़्ल के एतवार से भरोसे के लायक़ हैं, न और किसी एतबार से और ये इसराईली रिवायतों का बे-मतलब का भंडार हैं।

इन तमाम रिवायतों में जो सब में पाई जाती है, वह यह है कि याजूज और माजूज एक ऐसे क़बीलों का मज्मूआ (योग) है जो जिस्मानी और समाजी एतबार से अजीब व ग़रीब ज़िंदगी जीते हैं, जैसे वे बालिश्त या डेढ़ बालिश्त या ज़्यादा से ज़्यादा एक हाथ का क़द रखते हैं और कुछ ग़ैर मामूली लम्बे हैं और उनके दोनों कान इतने बड़े हैं कि एक ओढ़ने और दूसरा बिछाने के काम में आता है, चेहरे चौड़े चकले और क़द से कोई मेल नहीं खाते। इनके खाने के लिए कुदरत साल भर में दो बार समुन्दर से ऐसी मछलियां निकाल कर फेंक देती है जिनके सर और दुम का फ़ासला इतना लम्बा होता है कि दस दिन व रात अगर कोई उस पर चलता रहे, तब उस फ़ासले को तै कर सकता है या एक ऐसा सांप उनका खाना है जो पहले आस-पास के ख़ुश्की के जानवरों को हज़म कर जाता है और फिर कुदरत समुन्दर में उसको फेंक देती है और वहां मीलों तक समुन्दरी जानवरों को चट कर लेता है और फिर एक बादल आता है और फ़रिश्ता उस भारी-भरकम जिस्म वाले अजगर को उठाकर उस पर रख देता है और बादल उनको इन क़बीलों में ले जा डाल देता है और यह कि याजूज व माजूज एक ऐसी ही बरज़ख़ी मख़्लूक़ हैं जो आदम की नस्ल से तो हैं, मगर हव्वा (अ़लैहस्सलाम) के पेट से नहीं हैं, लेकिन इन तस्क़ीक़ करने वालों के क़ौलों से, जो हदीस, तफ़्सीर और तारीख़ के इल्म की माहिर हस्तियां हैं, यह बात क़तई तौर पर साफ़ हो जाती है कि याजूज-माजूज आम इंसानी मख़्लूक़ की तरह दुनिया के बाशिंदे और उनकी नस्ल बनी आदम की आम नस्ल की तरह है। वह कोई अनोखी मख़्लूक़ नहीं है और यह कि याजूज-माजूज उन वहशी क़बीलों को कहा जाता रहा है जो रूस और यूरोप की क़ौमों की असल और जड़ हैं और चूंकि उनकी पड़ोसी क़ौम उन क़बीलों में से दो बड़े क़बीलों को मोग और योची कहती थी, इसलिए यूनानियों ने उनकी तक़्लीद में उनको मेक या मेगॉग और लोगॉग कहा और इबरानी और अरबी में तसर्रुफ़ करके उनको याजूज-माजूज के नाम से याद किया गया यानी

Copyright OfflineDeeniApp

याजूज माजूज भी अगरचे मंगोली (तातारी) हैं मगर पहाड़ों के दर्रे के जो तातारी क़बीले अपने मर्कज़ से हटकर आज़ाद हो गए थे और मुतमद्दिन (सभ्य) बन गए थे, एक ही नस्ल होने के बाद भी दोनों में इतनी दूरी हो गई कि एक दूसरे से अनजान, बल्कि हरीफ़ (दुश्मन) बन गए और एक ज़ालिम कहलाए और दूसरे मज़लूम और उन्हीं क़बीलों ने ज़ुलक़रनैन से सद्द बनाने की फ़रमाइश की।

और कुछ तारीख़दानों ने तो 'तुर्क' नाम पड़ने की वजह ही यह बयान कर दी कि ये वे क़बीले हैं जो याजूज माजूज के हमनस्ल होने के बाद भी सद्द से परे आबाद थे और इसलिए जब ज़ुलक़रनैन ने सद्द क़ायम की और उनको उसमें शामिल नहीं किया तो इस छोड़ दिए जाने से वे तर्क (तुर्क) कहलाए।

नाम पड़ने की यह वजह अगरचे एक चुटकुला है, फिर भी इस बात का सबूत ज़रूर पहुंचाती है कि तमद्दुन वाले क़बीले तमद्दुन व तहज़ीब पाने के बाद अपने हमनस्ल मर्कज़ी क़बीलों से अनजाने हो जाते थे और वह याजूज-माजूज नहीं कहलाते थे और लफ़्ज़ याजूज माजूज सिर्फ़ उन्हीं क़बीलों के लिए ख़ास हो गए हैं जो अपने मर्क़ज में पहले की तरह अब भी वहशत व बरबरीयत और दरिंदगी के साथ जुड़े हुए हैं।

सद्द

याजूज-माजूज के इस तरह तै हो जाने के बाद दूसरा मामला 'सद्द' का सामने आता है, यानी वह सद्द किस जगह वाक़े है जो ज़ुलक़रनैन ने याजूज व माजूज के फ़ित्ने व फ़साद को रोकने के लिए बनाई और जिसका ज़िक्र क़ुरआन में भी किया गया है—

1. सद्द के तै होने से पहले यह हक़ीक़त सामने रहनी चाहिए कि याजूज-माजूज की तोड़-फोड़ और शर व फ़साद का दायरा इतना बड़ा था कि एक तरफ़ काकेशिया के नीचे बसने वाले उनके ज़ुल्म व सितम से नालां थे, दूसरी तरफ़ तिब्बत और चीन के बाशिंदे भी उनके उत्तरी छेड़-छाड़ से बचे हुए न थे, इसलिए सिर्फ़ एक ही ग़रज़ के लिए यानी क़बीलों—याजूज माजूज—के शर व फ़साद और लूट-मार से बचने के लिए अलग-अलग तारीख़ी ज़मानों में

Copyright OfflineDeeniApp

कई 'सद्द' बनाई गईं इनमें से पहली सद्द वह है जो दीवारे चीन के नाम से मशहूर है। यह दीवार लगभग एक हज़ार मील लम्बी है। इस दीवार को मंगोली अतकोदा कहते हैं और तुर्की में इसका नाम बोक़ोरक़ा है।

2. दूसरी सद्द बीच एशिया में बुख़ारा और तुर्ज़ के क़रीब वाक़े है और उसके वाक़े होने की जगह का नाम दरबन्द है। यह सद्द मशहूर मुग़ल बादशाह और तैमूर लंग के ज़माने में मौजूद थी और शाहे रूम के नदीम ख़ास सेलाबरजर जर्मनी ने भी इसका ज़िक्र अपनी किताब में किया है और उन्दुलुस के बादशाह कस्टील के क़ासिद कलामचू ने भी अपने सफ़रनामे में इस का ज़िक्र किया है और यह 1403 ई. में अपने बादशाह का सफ़ीर होकर जब तैमूर साहिबक़रां की ख़िदमत में हाज़िर हुआ है तो उस जगह से गुज़रा है। वह लिखता है कि बाबूल हदीद की 'सद्द' मूसल के उस रास्ते पर है जो समरक़ंद और हिन्दुस्तान के दर्मियान वाक़े है।

3. तीसरी 'सद्द' रूसी इलाक़े दाग़िस्तान में वाक़े है। यह भी दरबंद और बाबुल अबवाब के नाम से मशहूर है और कुछ तारीख़दां इसको 'अल-बाब' भी लिख देते हैं। याक़ूत हमवी ने मोजमुलबुलदान में, इदरीसी ने जुग़राफ़िया में और बुस्तानी ने दाइरतुल मआ़रिफ़ में इसके हालात को बहुत तफ़्सील के साथ लिखा है आर इन सब का ख़ुलासा यह है कि—

'दाग़िस्तान दरबन्द' एक रूसी शहर है, यह शहर बहे ख़ज़र (Caspian Sea) के ग़रबी (पश्चिमी) किनारे पर वाक़े है। इसकी चौड़ाई अर्ज़ुलबलद 3-43° उत्तरी और तूलुल बलद 15-48° पूर्वी है और इसको दरबन्द अनुशेरवां भी कहते हैं और बाबुल अबवाब के नाम से बहुत मशहूर है और उसके आस-पास को पुराने ज़माने से चारदीवारी घेरे हुए है, जिसके पुराने तारीख़दां अबवाबे अलबानिया कहते आए हैं और अब यह टूटी-फूटी हालत में है और इसको बाबुल हदीद इसलिए कहते हैं कि उसकी सद्द की दीवारों में लोहे के बड़े-बड़े फाटक लगे हुए थे।

4. और जब उसी बाबुल अबवाब के पश्चिम की तरफ़ काकेशिया के भीतरी हिस्सों में बढ़ते हैं तो एक दर्रा मिलता है जो दर्रा दानियाल के नाम से मशहूर है और यह काकेशिया के बहुत ऊपरी हिस्सों से गुज़रा है। यहां एक

Copyright OfflineDeeniApp

चाया सद है, या क़फ़क़ाज़ या जबले क़ूक़ा या जबले क़ाफ़ की सद्द कहलाती है और यह सद्द दो पहाड़ों के दर्मियान बनाई गई है। बुस्तानी इसके मुताल्लिक़ लिखता है—

और उसी के क़रीब एक और सद्द है, जो पश्चिम की ओर बढ़ती चली गई है, शायद उसको फ़ारस वालों ने उत्तरी बरबरों से हिफ़ाज़त के लिए बनाया होगा, क्योंकि उसकी बुनियाद डालने वालों का सही हाल नहीं मालूम हो सका। कुछ ने उसका ताल्लुक़ सिकन्दर से जोड़ दिया और कुछ ने किसरा और नौशेरवां की ओर मोड़ दिया। याक़ूत कहता है कि यह तांबा पिघला कर उससे तैयार की गई है। इंसाइक्लोपेडिया ब्रिटैनिका में भी 'दरबन्द' के आर्टिकल में लोहे की दीवार का हाल क़रीब-क़रीब इसी तरह बयान किया गया है।'

चूंकि ये सब दीवारें उत्तर ही में बनाई गई हैं और एक ही ज़रूरत के लिए बनाई गई हैं इसलिए ज़ुलकरनैन की बनाई हुई सद्द के तै करने में उलझनें पैदा हो गई हैं और इसीलिए हम तारीख़ के माहिरों में इस जगह ज़बरदस्त इख़्तिलाफ़ पाते हैं और इस इख़्तिलाफ़ ने एक दिलचस्प शक्ल अख़्तियार कर ली है, इसलिए कि दरबन्द के नाम से दो जगहों का ज़िक्र आता है और दोनों जगहों में सद्द या दीवार भी मौजूद है और ग़रज भी दोनों की एक ही नज़र आती है।

तो अब चीन की दीवार को छोड़कर बाक़ी तीन दीवारों के बारे में बहस की बात यह है कि ज़ुलक़रनैन की सद्द इन तीनों में से कौन-सी है और इस सिलसिले में जिस दरबन्द का ज़िक्र आता है, वह कौन-सा है।

क़ुरआन और सद्द

ज़ुलक़रनैन के सद्द के बारे में क़ुरआन ने दो बातें साफ़-साफ़ बयान की हैं, एक यह कि वह सद्द दो पहाड़ों के दर्मियान तामीर की गई है और उसने पहाड़ों के उस दर्रे को बन्द कर दिया है, जहां से होकर याजूज-माजूज इस तरफ़ के बसने वालों को तंग करते थे।

तर्जुमा—यहां तक कि जब ज़ुलक़रनैन दो पहाड़ों के दर्मियान पहुंचा तो इन दोनों के इस तरफ़ ऐसी क़ौम को पाया, जिनकी बात वह पूरी तरह नहीं

Copyright OfflineDeeniApp

समझता था, वे कहने लगे, ऐ ज़ुलक़रनैन! बेशक याजूज-माजूज उस सरज़मीन में फ़साद मचाते हैं। (18 : 94)

दूसरे यह कि वह चूने या ईंट-गारे से नहीं बनाई गई है, बल्कि लोहे के टुकड़ों से तैयार की गई है, जिसमें तांबा पिघला हुआ शामिल किया गया था—

तर्जुमा—*'मैंने तुम्हारे और उनके (यानी याजूज व माजूज) के दर्मियान एक मोटी दीवार क़ायम कर दूंगा। तुम मेरे पास लोहे के टुकड़े ला कर दो, यहां तक कि पहाड़ के दोनों फाटकों (चोटियों) के दर्मियान जब दीवार को बराबर कर दिया, तो उसने कहा कि धौंको, यहां तक कि जब धौंक कर उसको आग कर दिया। कहा, लाओ मेरे पास पिघला हुआ तांबा, कि उसपर डालूं।* (18 : 96)

कुरआन की बताई हुई इन दोनों सिफ़तों को सामने रखकर अब हमको यह देखना चाहिए कि बिना किसी तावील के ऐसी कौन-सी सद्द हो सकती है और किस सद्द पर ये सिफ़तें ठीक बैठती हैं।

ज़ुलक़रनैन की सद्द (दीवार)

आज के देखने से भी यह बात साबित है कि दारियाल का यह दर्रा पहाड़ों की दो चोटियों के दर्मियान घिरा हुआ है और तारीख़ी हक़ीक़तें भी इसको मानती और वाज़ेह करती हैं, साथ ही वासिक़ बिल्लाह के कमीशन ने अपना देखा हुआ यह बयान किया है कि यह लोहे और पिघले हुए तांबे से तैयार की गई है। बेशक यह मान लेना चाहिए कि यही दिवार ज़ुलक़रनैन की वह दिवार है, जिसका ज़िक्र क़ुरआन ने सूरः क़ह्फ़ में किया है, क्योंकि क़ुरआन की बताई हुई दोनों ख़ूबियाँ सिर्फ़ इसी दीवार के लिए सही साबित होती हैं, इसलिए वहब अबू हैय्यान, इब्ने ख़रदाद, अल्लामा अनवर शाह और मौलाना आज़ाद जैसे तहक़ीक़ करने वालों की यही राय है कि ज़ुलक़रनैन का सद्द क़फ़क़ाज़ के इसी दर्रे की सद्द का नाम है।

इन वज़ाहतों के बाद अब हमको कहने दीजिए कि दारियाल दर्रे की यह सद्द (यानी चौथी सद्द) साइरस (गोरशया के ख़ुसरो) की तामीर की हुई है और जैसा कि हम याजूज व माजूज की बहस में बयान कर चुके हैं, यह उन वहशी

Copyright OfflineDeeniApp

क़बीलों के लिए उसने बनाई थी, जो काकेशिया के इंतिहाई इलाक़ों से आकर और इस दर्रे से गुज़र कर क़फ़क़ाज़ के पहाड़ों के इस तरफ़ बसनेवालों पर लूट-मार मचाते थे और यही के क़बीले थे जो साइरस के ज़माने में हमलावर हो रहे थे और उस वक़्त के याजूज माजूज जैसे यही क़बीले थे और इन्हीं की रोक-थाम की ज़रूरत से साइरस ने एक क़ौम की शिकायत पर यह 'सद्द' तैयार की और अरमनी नविश्तों में इस सद्द का जो पुराना नाम 'फाक को राई' (कोर का दर्रा) लिखा चला आता है इस कोर से मुराद शायद केरश है, जो साइरस ही का फ़ारसी नाम है।

दूसरी सद्दें

ऊपर दर्ज की गई सद्द के क़रीब दरबन्द (बहे ख़ज़र) की दीवार इसके बाद इसी ग़रज़ से किसी दूसरे बादशाह ने बनवाई है और अनुशेरवां ने अपने ज़माने में उसको दोबारा साफ़ और दुरुस्त कराया है, जैसा कि इंसाइक्लोपेडिया ऑफ़ इस्लाम में ज़िक्र किया गया है और इन तीनों दीवारों (सद्द) में से सिकन्दर की बनाई हुई कोई एक सद्द भी नहीं है, इसलिए कि सिकन्दर की जीतों की तारीख़ जो कि सामने है, उससे किसी तरह यह साबित नहीं होता कि सिकन्दर को इस ग़रज के लिए किसी सद्द क़ायम करने की ज़रूरत पेश आई हो, क्योंकि उसकी हुकूमत के सारे दौर में याजूज व माजूज क़बीलों का कोई हमला तारीख़ में मौजूद नहीं है और न दरबन्द (हिसार) तक पहुंचने पर किसी क़ौम का इस क़िस्म के वहशी क़बीलों से दो-चार होना और सिकन्दर से उसकी शिकायत करना तारीख़ी हक़ीक़तों में कहीं नज़र आता है।

याजूज व माजूज का ख़ुरूज

ज़ुलक़रनैन, याजूज व माजूज और सद्द की बहस के बाद सबसे ज़्यादा अहम मसअला याजूज व माजूज के उस ख़ुरूज का है, जिसका ज़िक्र क़ुरआन ने किया है। इस मसअले की अहमियत इसलिए और भी बढ जाती है कि इस मसअले का ताल्लुक़ क़ियामत की निशानियों से है। यह एक हक़ीक़त है कि याजूज व माजूज के ख़ुरूज़ (निकलने) का मसअला कि जिसकी ख़बर क़ुरआन

Copyright OfflineDeeniApp

मजीद ने पेशीनगोई के तौर पर दी है, ऐसा मस्अला नहीं है कि जिसको सिर्फ़ गुमान और अन्दाज़े की बुनियाद पर हल कर लिया जाए और जबकि इस मस्अले का ताल्लुक़ क़ुरआनी ग़ैबों की ख़बरों में से है तो फिर इससे मुताल्लिक़ फ़ैसला करने का हक़ भी क़ुरआन ही को पहुंचता है, न कि अन्दाज़े और गुमान को।

क़ुरआन ने इस वाक़िए को सूरः कह्फ़ और सूरः अंबिया में बयान किया है और इस मस्अले से मुताल्लिक़ जो कुछ भी है, उनका सिर्फ़ दो सूरतों में ज़िक्र किया गया है।

सूरः कह्फ़ में इस वाक़िए का इस तरह ज़िक्र है–

तर्जूमा : *'पस नहीं ताक़त रखते वे (याजूज व माजूज) इस सद पर चढ़ने की और न वे उसमें सूराख करने की ताक़त रखते हैं। (ज़ुलक़रनैन) ने कहा, यह मेरे परवरदिगार की रहमत है, फिर जब मेरे रब का वायदा आएगा, तो उसको गिरा कर रेज़ा-रेज़ा कर देगा और मेरे परवरदिगार की फ़रमाई हुई बात सच है।'* (कह्फ़ 97-98)

और सूरः अंबिया में इस वाक़िए को इस तरह बयान किया गया है–

तर्जुमा– *'यहां तक कि जब खोल दिए जाएंगे याजूज और माजूज और ज़मीन की बुलन्दियों से दौड़ते हुए उतर आएंगे और अल्लाह का सच्चा वायदा क़रीब आ जाएगा तो उस वक़्त अचानक ऐसा होगा कि जिन लोगों के कुफ़्र किया है, उनकी आंखें खुली रह जाएंगी और वे पुकार उठेंगे, हाय कमबख़्ती हमारी कि हम बेख़बर रहे।* (अंबिया 96-97)

इन दोनों जगहों पर क़ुरआन ने एक तो यह बताया है कि जिस ज़माने में ज़ुलक़रनैन ने याजूज-माजूज पर सद क़ायम की तो उसकी मज़बूती की हालत यह थी कि ये क़ौमें न उसको फांद कर इस ओर आ सकती थीं और न उसमें सुराख़ पैदा करके उसको पार कर सकती थीं और सद की इस मज़बूती और पायदारी को देखकर ज़ुलक़रनैन ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और यह कहा कि यह सब कुछ अल्लाह की रहमत का करिश्मा है कि उसने मुझसे यह नेक ख़िदमत करा दी।

और दूसरी बात यह बयान की है कि क़ियामत का ज़माना क़रीब होगा

Copyright OfflineDeeniApp

तो याजूज व माजूज अनगिनत फ़ौज पर फ़ौज निकलकर दुनिया में फैल जाएंगे और लूटमार और तबाही व बर्बादी मचा देंगे।

इन दोनों बातों से आमतौर से तफ़्सीर लिखनेवालों ने यह समझा है कि याजूज व माजूज ज़ुलक़रनैन की सद्द में इस तरह घिर गए हैं कि यह सद्द क़ियामत तक इसी तरह सही व सालिम खड़ी रहेगी और जब याजूज व माजूज के खुरूज का वक़्त आएगा और वह क़ियामत के क़रीब और क़ियामत की निशानियों मे से होगा तो उस वक़्त एकबारगी सद्द गिर कर रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी और इसलिए उन्होंने दोनों जगहों में उसी के मुताबिक़ आयतों की तफ़्सीर की है। चुनांचे उन्होंने सूरः अंबिया की इस आयत का *'हत्ता इज़ा फ़ुतिहत याजूजु व माजूजु'* का यह तर्जुमा करके, 'यहां तक कि जब याजूज और माजूज सद्द तोड़कर खोल दिए जाएंगे' इस इशदि इलाही को जुलक़रनैन के इस क़ौल के साथ जोड़ दिया जिसका सूरः कह्फ़ में ज़िक्र है, 'फ़ इज़ा जा-अ वादुरब्बी ज-अ-लहू दक्का', (फिर मेरे रब का वायदा आएगा तो वह उसको रेज़ा-रेज़ा कर देगा।'

मगर आयतों के आगे-पीछे और उनके मतलब पर गहरी नज़र डालने से यह तफ़्सीर क़ुरआनी आयतों का हक़ अदा नहीं करती।

इस इज्माल की तफ़्सील यह है कि क़ुरआन ने सूरः कह्फ़ में तो सिर्फ़ इसी का ज़िक्र किया है कि याजूज व माजूज पर जब ज़ुलक़रनैन ने सद्द तामीर कर दी तो उसकी मज़बूती का ज़िक्र करते हुए यह भी कह दिया कि जब मेरे अल्लाह का वायदा आ जाएगा तो यह सद्द रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी और अल्लाह का वायदा बर-हक़ है और उसके ख़िलाफ़ होना मुश्किल, बल्कि नामुम्किन, मगर इस जगह याजूज व माजूज के निकलने का कोई ज़िक्र नहीं है जो क़ियामत के क़रीब वाक़े होगा और होता भी कैसे, क्योंकि यह तो ज़ुलक़रनैन का अपना क़ौल है, जो सद्द के मज़बूत और मुस्तहक्म होने के सिलसिले में कहा गया है और याजूज और माजूज का निकलना ग़ैब की उन चीज़ों में से है जो क़ियामत की निशानी के तौर पर अल्लाह तआ़ला की ओर से बयान किया गया है और नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़रिए से दुनिया की क़ौमों के लिए तंबीह है कि अल्लाह की यह ज़मीन अपने आख़िरी

Copyright OfflineDeeniApp

लम्हों में एक सख़्त और हौलनाक आलमी हादसे से दो चार होने वाली है।

और सूरः अंबिया में सिर्फ़ यह ज़िक्र है कि क़ियामत के क़रीब याजूज व माजूज का निकलना होगा और वे बहुत तेज़ी के साथ बुलन्दियों से पस्ती की तरफ़ फ़साद बरपा करने के लिए उमंड पड़ेंगे और उस जगह सद्द का और सद्द के रेज़ा-रेज़ा होकर उससे याजूज व माजूज के निकलने का क़तई तौर पर कोई ज़िक्र नहीं है और लफ़्ज़ 'फ़ुतिहत' को ऐसा समझना सिर्फ़ क़ियासी व तख़्मीनी है, जैसा कि बहुत जल्द वाज़ेह होगा।

पस सूरः कह्फ़ और सूरः अंबिया दोनों में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ आयतों का साफ़ और सादा मतलब यह है कि सूरः कह्फ़ में तो पहले इस वाक़िए की तफ़्सीलें सुनाई गई हैं, जिनके बारे में यहूदियों ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से सीधे-सीधे या ख़ुद या मुश्रिकों के वास्ते से सवाल किया था कि ज़ुलक़रनैन की शाख़्सियत से मुताल्लिक़ अगर कोई इल्म रखते हो तो उसको ज़ाहिर करो। क़ुरआन यानी वह्य इलाही ने उनको बताया कि ज़ुलक़रनैन नेक और सालेह बादशाह था। उसने ज़िक्र के क़ाबिल तीन मुहिमें सर कीं–

एक मश्रिक़े वुस्ता (मध्य पूर्व) की,
दूसरी मग़्रिबे अक़्सा (दूर पश्चिम) की और
तीसरी उत्तर की ओर

और इस तीसरी मुहिम में उसको एक ऐसी क़ौम से वास्ता पड़ा, जिसने याजूज माजूज की मचाई तबाहियों का शिकवा करते हुए अपने और उनके दर्मियान 'सद्द' क़ायम करने की मांग की। ज़ुलक़रनैन ने उनकी मांग को इस तरह पूरा किया कि उस तरफ़ वे, जिस दर्रे से निकल कर वे हमलावार हुआ करते थे, उसको लोहे की तख़्तियों और पिघले हुए तांबे से बन्द कर दिया और दो पहाड़ों के दर्मियान दर्रे पर एक बेहतरीन 'सद्द' क़ायम कर दी और साथ ही अल्लाह का शुक्र बजा लाते हुए उसने यह भी ज़ाहिर किंया कि यह 'सद्द' इतनी मुस्तहकम और मज़बूत है कि अब याजूज व माजूज न उसमें सूराख़ कर सकेंगे, और न उस पर चढ़ कर इधर आ सकेंगे, लेकिन मैं यह दावा नहीं करता कि यह सद्द हमेशा-हमेशा के लिए इसी तरह रहेगी, बल्कि

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह को जब तक मंज़ूर है, यह इसी तरह क़ायम है और वह चाहेगा कि यह रोक बाक़ी न रहे, तो यह टूट-फूट जाएगी और अल्लाह का वायदा 'यानी हर चीज़ की तरह सद्द का भी फ़ना हो जाना' पूरा हो कर रहेगा।

यहूदियों ने चूंकि सिर्फ़ ज़ुलक़रनैन के बारे में सवाल किया था, इसलिए सूरः कह्फ़ में उसी के बारे में तफ़्सील से बताया गया और याजूज व माजूज का सिर्फ़ ज़िमनी ज़िक्र आ गया और सूरः अंबिया में अल्लाह तआ़ला मुश्रिकों का रद्द करते हुए फ़रमाते हैं कि जो बस्तियां हलाक कर दी गईं, अब उनके बाशिंदे दुनिया में ज़िंदा नहीं वापस आएंगे। हां, जब क़ियामत आ जाएगी 'और वह जब आएगी कि उससे पहले याजूज-माजूज का फ़िल्ला पेश आएगा' तब अलबत्ता हश्र के मैदान में सब दोबारा ज़िंदा करके रब्बुल आलमीन के सामने जवाबदेह होने के लिए जमा किए जाएंगे।

फिर चूंकि इस जगह याजूज-माजूज के ख़ारिज होने को क़ियामत की निशानी बयान करके अहमियत दी गई है, इसलिए उसके निकलने को सद्द के टूटने और रेज़ा-रेज़ा होने के साथ बांधा नहीं गया, बल्कि सिरे से सद्द का ज़िक्र ही नहीं किया, बल्कि यह कहा कि जब इनके निकलने का वक़्त आ जाएगा, तो तेज़ी के साथ बुलन्दियों से पस्ती की तरफ़ उमंड पड़ेंगे और तमाम इलाक़ों में फैल जाएंगे।

पस आयतों के इस मज्मूए से दो बातें मालूम हुईं, एक यह कि 'ज़ुलक़रनैन की सद्द' याजूज व माजूज के निकलने से पहले ज़रूर टूट-फूट चुकी होगी, दूसरे यह कि याजूज व माजूज के ख़ुरूज का वह वक़्त होगा कि क़ियामत का वक़्त बिल्कुल क़रीब हो जाए और उसके बाद सूर के फूंके जाने ही का मरहला बाक़ी रह जाए। उस वक़्त याजूज व माजूज के तमाम क़बीले बेपनाह सैलाब की तरह उमंड पड़ेंगे और तमाम कायनात में बड़ा फ़साद बरपा करेंगे।

बहरहाल ज़ुरक़रनैन के क़ौल *'इजा जा-अ वादु रब्बी ज-अ-लहू दक्का'* में 'वाद' से मुराद याजूज व माजूज का निकलना नहीं है, बल्कि मतलब यह है कि एक वक़्त ऐसा ज़रूर आएगा कि बेशक सद्द तबाह हो जाएगी और वह टूट-फूट जाएगी और सूरः अंबिया में अल्लाह तआ़ला के इर्शाद *'फ़ुतिहत*

Copyright OfflineDeeniApp

याजूजु व माजूज' में फ़ुतिहत से यह मुराद नहीं है कि वे सद्द तोड़ कर निकल आएंगे, बल्कि मुराद यह है कि वे इस बड़ी तायदाद में फ़ौज दर फ़ौज निकल पड़ेंगे, गोया कहीं बन्द थे और आज खोल दिए गए हैं।

चुनांचे अरब के लोग लफ़्ज़ 'फ़त्ह' को, जब जानदार चीज़ों के लिए इस्तेमाल करते हैं तो उससे यह मुराद होती है कि ये किसी कोने में अलग-थलग पड़ी हुई थीं और अब अचानक निकल पड़ीं, इसलिए जब कोई शख़्स कहता है 'फ़त्हुल जराद' तो इसका यह मतलब नहीं होता कि टिड्डियां किसी जगह बन्द थीं और अब उनको खोल दिया गया, बल्कि यह मतलब लिया जाता है कि टिड्डी दल किसी पहाड़ी कोने में अलग-थलग पड़ा था कि अब अचानक फ़ौज दर फ़ौज बाहर निकल पड़ा। पस यहां भी यह बताया है कि याजूज व माजूज जैसे शानदार क़बीले जो अर्से से इतनी भारी तायदाद में हैं, इतनी बड़ी दुनिया के एक कोने में अलग-थलग पड़े हुए थे, उस दिन इस तरह उमडं आएंगें गोया बन्द थे, और अब अचानक खोल दिए गए।

नोट : (इस मरहले पर हज़रत मौलना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने यांजूज व माजूज से मुताल्लिक़ नबी सल्ल० की हदीसों पर तफ़्सील से बहस की है और हज़रत मौलाना अनवर शाह रह० की तफ़्सीर की तरफ़ क़ौले फ़ैसले के तौर पर रुजू किया है।)

हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी (रह०) की तफ़्सीर

हज़रत शाह साहब ने आयत 'व *त-रकना बाज़ुहुम यौ-मइज़िन यमूजु फ़ी वाज़'* की तफ़्सीर यह की है कि ज़ुलक़रनैन के इस वाक़िए में चूंकि याजूज व माजूज पर इस जानिब से रोक क़ायम हो जाने का तज़्किरा है, इसलिए अल्लाह तआ़ला ने ज़ुलक़रनैन के क़ौल के बाद अपनी तरफ़ से इस आयत में यह इर्शाद फ़रमाया है कि ऐ मुख़ातब लोगो! तुम जिन याजूज व माजूज क़बीलों के बारे में ये बातें सुन रहे हो, यह भी सुन लो कि हमने उन क़बीलों के लिए यह मुक़द्दर कर दिया है कि वे आपस में उलझते रहेंगे और मौज दर मौज आपस में दस्त व गरेबां होते रहेंगे, यहां तक कि वह वक़्त आ जाए जब क़ियामत बरपा होने में सूर फूंकने के अलावा और कोई मरहला बाक़ी न रहे

Copyright OfflineDeeniApp

और सूरः अंबिया में यह इर्शाद फ़रमाया कि 'सूर फूंकने' से पहले क़ियामत की शर्तों और निशानियों में से एक शर्त या निशानी यह पेश आएगी कि याजूज व माजूज के तमाम क़बीले अपने निकलने के हर मक़ाम से एक साथ उमंड आएंगे और दुनिया की आम ग़ारतगरी के लिए अपनी मक़ामी बुलन्दियों से तेज़ी के साथ उतरते हुए कायनात के कोने-कोने में फैल जाएंगे। 'मिन कुल्लि ह-दबिंय-यं सलून' में हदब का मतलब है ऊपर से नीचे झुकना, इसलिए हदब के मानी ऊंची जगह से नीचे उतरने के होते हैं और 'नस्लान' अरबी भाषा में फिसलने को कहते हैं। इसलिए 'यन्सलून' के मानी यह हुए कि वे इस तेज़ी से उमंड आएंगे कि यह मालूम होगा, गोया वे किसी टीले से फिसल रहे हैं। चुनांचे हज़रत इमाम राग़िब के 'मुफ़रदात' और इब्ने असीर के निहाया में 'हदब' और 'नसलुन व नसलान' की बहस में इसी तफ़्सील का ज़िक्र है।

इसलिए इस तफ़्सीर से साफ़ हो जाता है कि क़ुरआन ने याजूज व माजूज के निकलने की जो हालत बताई है, वह इन्हीं क़बीलों पर फ़िट आती है, जो कैस्पियन सागर से लेकर मंचूरिया तक फैले हुए हैं और जो दुनिया की बहुत बड़ी आबादी के महवर हैं और जगह के एतबार से आम सतहे आबादी से ज़मीन के इस क़दर बलन्द हिस्से पर मुक़ीम हैं कि जब कभी निकल कर मुहज़्ज़ब क़ौमों पर हमलावर होते हैं तो यह मालूम होता है कि गोया ऊपर से नीचे को फिसल रहे हैं, पस आगे भी जब वक़्त की शर्तों की शक्ल में उन का आख़िरी ख़ुरूज होगा, तो उनके तमाम क़बीलों का सैलाब एक ही बार उमंड आएगा और ऐसा मालूम होगा कि इंसानों के समुन्दर का बांध टूट गया है और वह अपनी जगहों की हर बुलन्दी से नीचे की तरफ़ बह पड़ा है।

बुख़ारी और मुस्लिम की हदीसें

कुछ तफ़्सीर लिखने वालों ने सूरः अंबिया की आयतों से मुराद तातार का फ़िला लिया है और उसकी ताईद में बुख़ारी की मशहूर हदीस *'वैलुल लिल हर्ब मिनशर्रिन क़दिक़-त-र-ब'* को पेश किया है, उनकी यह तफ़्सीर ग़लत है और हदीस से इसकी ताईद बिल्कुल बेमहल है, बल्कि बुख़ारी व मुस्लिम की दूसरी सहीह हदीसें जो कि बाबुल फ़ितन में ज़िक्र की गई हैं, इस तफ़्सीर के

Copyright OfflineDeeniApp

ख़िलाफ़ साफ़-साफ़ यह बयान करती हैं कि क़ियामत की अलामतों (निशानियों) में जब आख़िरी अलामतें सामने आएंगी तो पहले हज़रत ईसा का आसमान से नुज़ूल (उतरना) होगा और दज्जाल का सख़्त फ़ित्ना बरपा करना होगा और आख़िरकार हज़रत ईसा ﷺ के हाथों वह मारा जाएगा और फिर कुछ दिनों के बाद याजूज व माजूज निकलेंगे जो तमाम दुनिया पर शर व फ़साद की सूरत में छा जाएंगे और फिर कुछ दिनों के बाद सूर फूंका जाएगा और दुनिया का यह कारख़ाना दरहम बरहम हो जाएगा।

इस बुनियाद पर यह ख़्याल भी बातिल है कि अंग्रेज़ और रूस, बल्कि यूरोपीय हुकूमतों का क़ब्ज़ा याजूज व माजूज का निकलना है और यह इसलिए कि एक तो अभी ज़िक्र हो चुका कि मुतमद्दिन क़ौमों को याजूज व माजूज कहना ही ग़लत है, दूसरे इसलिए कि याजूज व माजूज के इस फ़ित्ने व फ़साद के पेशे नज़र, जिसका ज़ुलक़रनैन के वाक़िए में सूरः कह्फ़ में ज़िक्र किया गया है और सहीह हदीसों की वज़ाहतों के मुताबिक़ उनका वह ख़ुरूज भी जिसका ज़िक्र सूरः अंबिया में किया गया है और जिसको क़ियामत की निशानी में से ठहराया गया है, ऐसे ही फ़साद व शर के साथ होगा, जिसका ताल्लुक़ तहज़ीब व तमद्दुन से दूर का भी न हो और जो ख़ालिस वहशियाना तरीक़े पर बरपा किया जाए। कहां साइंस की ईजादों और हथियारों की जंग का तरीक़ा और कहां ग़ैर तहज़ीबी और वहशियाना लड़ाई और जंग?

और यह बात इसलिए भी वाज़ेह है कि मुतमद्दिन क़ौमों के लड़ाई-झगड़े कितने ही वहशियाना अन्दाज़ क्यों न अपनाएं, बहरहाल साइंस और लड़ाई के उसूल के मुताबिक़ होते हैं और यह सिलसिला क़ौमों और उम्मतों में हमेशा से है, इसलिए अगर इस क़िस्म के जाबिराना और क़ाहिराना क़ब्ज़े के बारे में क़ुरआन को पेशीनगोई करनी थी, तो इसकी ताबीर के लिए हरगिज़ यह तरीक़ा न अख़्तियार किया जाता जो माजूज व याजूज के निकलने के सिलसिले में सूरः अंबिया में अख़्तियार किया गया है, बल्कि इनकी तरक़्क़ीनुमा बरबरता की ओर ज़रूरी इशारों या वज़ाहतों का होना लाज़िम था।

हासिल यह कि सहीह हदीसों और क़ुरआनी आयतों के मुताबिक़ होने के साथ-साथ जब इस मसअले पर ग़ौर व फ़िक्र किया जाता है, तो खुलकर

Copyright OfflineDeeniApp

यह बात सामने आती है कि इस निशानी से पहले हज़रत ईसा ﷺ के आने का इन्तिज़ार किया जाए। पस याजूज-माजूज का निकलना किसी हाल में भी इन क़ौमों पर सही नहीं उतरता जो तहज़ीब व तमद्दुन की राहों से ज़ोर-ज़बरदस्ती की जंगों के ज़रिए से दुनिया पर ग़ालिब और क़ाबिज़ होती रही हैं।

क्या ज़ुलक़रनैन नबी थे?

ज़ुलक़रनैन नबी हैं या नेक बादशाह, तर्जीही बात तो यह है कि ज़ुलक़रनैन नेकों में से हैं और नेक नफ़्स बादशाह। वह नबी या रसूल नहीं हैं।

नतीजे

1. अल्लाह तआ़ला किसी को हुकूमत व दौलत इसलिए नहीं देता कि वह उसको निजी ऐश में लगाए, बल्कि इसलिए अ़ता करता है कि उसके ज़रिए मख़्लूक़ ख़ुदा की ख़िदमत करे।

2. इंसाफ़ और नाइंसाफ़ी की हुकूमत के दर्मियान हमेशा से यह नुमाया फ़र्क़ चला आता है कि अ़द्ल वाली हुकूमत का नस्बुलऐन रियाया और पब्लिक की ख़िदमत होता है, इसलिए आ़दिल बादशाह का शाही ख़ज़ाना पब्लिक की भलाई, ख़िदमत और उनकी खुशहाली के लिए होता है और वे अपनी ज़ात पर ज़रूरी जरूरतों से ज़्यादा उसमें से ख़र्च नहीं करता और न जनता को टैक्सों की ज़्यादती से परेशान हाल बनाता है, इसके ख़िलाफ़ जब्र व ज़ुल्म की हुकूमत का मंशा बादशाह और हुकूमत का इख़्तिदार, निजी ऐश और उसकी मज़बूती होती है, इसलिए न वह पब्लिक के दुख-दर्द की परवाह करता है और न उसकी राहत और आराम का ख़्याल रखता है और इस सिलसिले में अगर कुछ हो भी जाता है तो वह हुकूमत के फ़ायदों और मस्लहतों को देखते हुए ग़ैर-ज़रूरी हो जाता है। साथ ही इस हुकूमत में पब्लिक हमेशा टैक्सों के बोझ से दबी रहती है और मुल्क की अकसरीयत इफ़्लास व ग़ुर्बत की शिकार रहती है–

·नोट–(संग्रहकर्त्ता की ओर से)

Copyright OfflineDeeniApp

ज़ुलक़रनैन से मुताल्लिक़ हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० की रिसर्च 129 पृष्ठों पर छाई हुई है जो हज़रत मौलाना की कोशिश और खोज का नतीजा है। कोशिश की गई है कि इस लम्बी बहस को इस तरह छोटा किया जाए कि कोई अहम प्वाइंट रह न जाए, फिर भी 40 पृष्ठों में उसको समेटा गया है। हो सकता है कि कुछ लोग इस तरह ख़ुलासा करने में कुछ कमी महसूस करें, तो उनसे गुज़ारिश है कि वे असल किताब से रुजू फ़रमाएं, क्योंकि तौरात और तारीख़ के लम्बे हिस्से और उनकी रोशनी में अलग-अलग रायों पर बहस का खुलासा करना मुश्किल था, इसलिए सिर्फ़ इन नतीजों को बुनियादी तौर पर पेश किया गया है, जिन पर मौलाना इतनी तहक़ीक़ के बाद पहुंचे।

हज़रत मौलाना ने 'बसाइर' में जो कुछ लिखा है, उसके बड़े हिस्से का ताल्लुक़ 'ज़ुलक़रनैन' के वाक़िए से सीधा नहीं है, लेकिन वह अपनी जगह पर हद दर्जा अहम है, यह हिस्सा असल में सोचने-समझने वालों के लिए ज़्यादा ज़रूरी है, इसलिए उसको अलग पेश किया जाता है। (संग्रहकर्त्ता)

'बसाइर' के हिस्से

1. क़ुरआन के मतलब की समझ के लिए जिस तरह अरबी भाषा का मतलब, बयान, ग्रामर, आसार हदीस और सहाबा के क़ौलों जैसे इल्मों का जानना ज़रूरी है, उसी तरह तारीख़ के इल्म की मारफ़त भी ज़रूरी है, चुनांचे पिछली क़ौमों और उम्मतों के हालात व वाक़ियात का इल्म हासिल करके उनसे सबक़ लेने पर उभारने का काम ख़ुद क़ुरआन ने ज़ोरदार बयान के साथ किया है। इर्शाद है—

तर्जुमा—*'कह दीजिए, ज़मीन में घूमो-फिरो, फिर देखो कि झुठलानेवालों का अंजाम क्या हुआ?'*
(6 : 11)

तर्जुमा—*'बेशक तुम से पहले ख़ुदा की मुक़र्रर की हुई राहें गुज़र चुकी हैं, पस ज़मीन की सैर करो, फिर देखो झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ?'*
(3 : 137)

2. जहां तक इस्लाम के बुनियादी मस्अलों का ताल्लुक़ है, उनमें 'पुराने

Copyright OfflineDeeniApp

भले लोगों का राय हो, बिना कुछ कहे-सुने राह की रोशनी है और उससे हटना टेढ़ और गुमराही है, लेकिन जहां तक क़ुरआन के लतीफ़े, नुक्ते, मारफ़त और इल्म, असरार और इल्मी और तारीखी मतलबों का ताल्लुक़ है, उसके लिए किसी ज़माने में भी तहक़ीक़ का दरवाजा बन्द नहीं है। चुनांचे नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद मुबारक है—

'क़ुरआन के लताइफ़ व हकम (हिक्मत की गूढ़ बातें) कभी ख़त्म होने वाले नहीं हैं।'

ख़ासतौर पर जबकि तारीख़ का मतलब हासिल करने के लिए आज की मालूमात के ज़राए तारीख़ के पुराने उलूम के ज़रिए (साधन) ज़्यादा फैल चुके हैं तो पुराने नेक लोगों के पुराने मस्लक पर क़ायम रहते हुए क़ुरआनी हक़ीक़तों और उसकी तारीख़ी बहसों की तफ़्सील या ग़ैर तफ़्सील में पुराने लोगों की पाबन्दी न करते हुए क़ुरआन की ताईद के लिए तहक़ीक़ का क़दम उठाना, पुराने नेक लोगों की पैरवी है न कि उनके मस्लक से हटना। क्या कोई अह्ले इल्म (विद्वान) और सूझ-बूझ रखनेवाला इस हक़ीक़त का इंकार कर सकता है कि इन तफ़्सीरी मतलबों के अलावा जिनके बारे में दलीलों से यह साबित हो चुका है कि ये नबी सल्ल० के इर्शाद हैं, सहाबा रज़ि० के ज़ाती क़ौलों के ख़िलाफ़ या उनसे अलग ताबिईन और तबअ् ताबिईन के क़ौल ज़्यादा से ज्यादा तफ़्सीर की किताबों में दर्ज हैं और बाद के तफ़्सीर के उलेमा पहलों के क़ौलों पर जिरह करते और उनकी रायों से इख़्लिाफ़ करते नज़र आते हैं। और इनमें से हर आदमी की तहक़ीक़ क़ुरआन के मतलब की ख़िदमत ही समझी जाती है; अलबत्ता अह्लियत शर्त है और जो आदमी भी इस ख़िदमत के लिए क़दम उठाए, उसका फ़र्ज है कि *'फ़ीमा बैनी व बैनल्लाह'* पर ग़ौर व फ़िक्र करे कि वह जिस मस्अले में कोई राय अख़्तियार करता है, हक़ीकत में वह उसके तमाम आगे-पीछे की बातों को जानता है या नहीं और यह कि उसकी इस तहक़ीक से क़ुरआन की और ज़्यादा ताईद ही होती है और पुराने बुजुर्गों के बुनियादी पुराने मस्लक से क़तई तौर पर आगे बढ़ जाना लाज़िम नहीं आता।

Copyright OfflineDeeniApp

अस्हाबुल कह्फ़ वर्रक़ीम

(कह्फ़ और रक़ीम वाले)

कह्फ़ और रक़ीम

डिक्शनरी में कह्फ़ पहाड़ के भीतर लम्बे चौड़े ग़ार (खोह) को कहते हैं, मगर रक़ीम के मानी में तफ़्सीर लिखने वाले एक नहीं हैं, अलबत्ता क़ुबूल यही है कि यह शहर अंबात (बनू नाबित बिन इस्माईल, जिनकी हुकूमत का ज़माना 700 ई०पू० से 106 ई०पू० तक है) की राजधानी था और अक़्बा खाड़ी (ऐला) से उत्तर की ओर बढ़ते हुए पहाड़ों के जो दो मुतवाज़ी (समानांतर) सिलासिले मिलते हैं, उन्हीं में से एक पहाड़ की बुलन्दी पर आबाद था। उसका नाम रक़ीम (आज का पटरा या बतरा) था। पुराने खंडहरों की रिसर्च में एक नुमायां खोज इस शहर की है। इसमें नई-नई बातों के साथ-साथ उसके पहाड़ों के अजीब व ग़रीब ग़ार भी ज़िक्र के क़ाबिल हैं, जो बहुत लम्बे-चौड़े और गहरे हैं और इस तरह वाक़े हैं कि दिन की धूप और गर्मी उन तक नहीं पहुंचती। एक ग़ार ऐसा भी खोज लिया गया है जिसके मुहाने पर पुरानी इमारतों के निशान पाए जाते हैं और बहुत से स्तूनों के खंडहर बाक़ी रह गए हैं। ख़्याल किया जाता है कि यह किसी हैकल की इमारत है। मुख़्तसर यह कि इस शहर के बारे में जितनी खोज की जा रही है, उससे क़ुरआन के एक-एक शब्द की तस्दीक़ (पुष्टि) होती है, इसलिए यह कहना आसान हो जाता है कि क़ुरआन ने जिन अस्हाबे कह्फ़ का वाक़िया बयान किया है उनका ताल्लुक़ इसी शहर रक़ीम (पटरा) के किसी ग़ार से है। (हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने लम्बी बहस के बाद यह भी साफ़ किया है कि) अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम दोनों एक ही हैं और बुख़ारी शरीफ़ में अस्हाबे कह्फ़ वाले बाब की ग़ार वाली हदीस में जो वाक़िया बयान हुआ है, वह बनी इसराईल का एक दूसरा वाक़िया है और यह भी कि अस्हाबे कह्फ़ और रक़ीम के वाक़िए का ताल्लुक़ शुरू के ईसाई दौर से है।

Maktab-e-Ishaat
Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन और अस्हाबे कह्फ़ और अस्हाबे रक़ीम

जैसा कि ज़ुलक़रनैन के वाक़िए में ज़िक्र किया जा चुका है, यहूदी उलेमा ने क़ुरैश के वफ़्द के ज़रिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से तीन सवालों के जवाब चाहे थे, उनमें से एक यह भी था कि 'अस्हाबे कह्फ़ ' कौन थे? और उन पर क्या गुज़री? आपने वह्य आने पर उनके सामने सूरः कह्फ़ तिलावत करके वाक़ियों की हक़ीक़त उन पर खोल दी–

तर्जुमा–*'क्या तुमने यह गुमान कर लिया है कि अस्हाबे कह्फ़ व रक़ीम का मामला हमारी निशानियों में से कोई अजीब (मामला) है, जबकि कुछ नवजवानों ने पहाड़ के ग़ार में पनाह ले लिया था और यह दुआ मांग रहे थे, ऐ हमारे परवरादिगार! तू अपने पास से हमको रहमत अ़ता कर और हमारे लिए रुश्द व हिदायत मुहैय्या कर। फिर हमने ग़ार में कुछ साल तक उनको थपक कर सुला दिया, फिर उनको उठाया (बेदार किया), ताकि हम जान लें कि दोनों, बस्ती वालों और ग़ार वालों में से किसने उनकी मुद्दत का सही अन्दाज़ा लगाया। हम तुझको उनका सच्चा वाक़िया बताए देते हैं। बेशक वे कुछ नवजावान थे जो अपने परवरदिगार पर ईमान ले आए थे और हमने उनको हिदायत की रोशनी और ज़्यादा अ़ता कर दी थी और जब वे (वक़्त के हाकिम के सामने) यह एलान करने पर उतर आए कि हमारा परवरदिगार वही है जो आसमानों और ज़मीन का परवरदिगार है और हम हरगिज़ उसके अलावा किसी को ख़ुदा नहीं पुकार सकते और अगर ऐसा करें तो ख़ुदा पर बोहतान बांधेंगे, उस वक़्त हमने उनके दिल ख़ूब मज़बूत कर दिए थे। वे कहते थे, यह हमारी क़ौम है जिन्होंने अल्लाह के अलावा बहुत से माबूद बना लिए हैं। ये क्यों खुली दलील अपने बातिल माबूदों (की सदाक़त) के लिए नहीं लाते? पस उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाए और ऐ रफ़ीक़ो! जब तुम उनसे और उनकी इबादत से अल्लाह के सिवा जो वे बातिल माबूदों की करते हैं, अलग हो जाते हो, तो पहाड़ के ग़ार में चले चलो, तुम्हारा परवरदिगार अपनी रहमत निछावर करेगा और तुम्हारे मामले में काम की आसानी पैदा करेगा और ऐ पैग़म्बर! तुम सूरज को देखोगे कि वह निकलते वक़्त उनके ग़ार से दाहिनी जानिब बच कर निकल जाएगा और डूबते वक़्त ग़ार से कतरा कर बाईं ओर को हो जाता है और वे बड़े फैले ग़ार में हैं। यह*

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह की निशानियों में से है, जिसको वह हिदायत दे वही रास्ते पर है और जिस आदमी को उसकी बराबर सरकशी की बुनियाद पर गुमराह करे तो वह किसी राह दिखाने वाले मददगार को न पाएगा और तू उनको बेदार गुमान करेगा, हालांकि वे सो रहे होंगे और हम उनकी करवटें बदलते रहते हैं, दाएं भी और बांए भी और उनका कुत्ता अपने अगले हाथ फैलाए ग़ार के मुंह पर बैठा हुआ है। अगर तू उनको झांक कर देखे तो उनकी इस शान और हालत को देखकर मर्ऊब हो जाए और भाग पड़े और इसी तरह हमने उनको उठा दिया, जगा दिया, ताकि आपस में पूछ-गछ करें। एक ने उनमें से कहा, तुम ग़ार में कब से हो? दूसरे ने जवाब दिया, एक दिन या दिन के कुछ हिस्से से फिर उन्होंने कहा, तुम्हारा परवरदिगार ही ख़ूब जानता है कि तुम यहां कितनी मुद्दत से हो, (तो अब यह करो कि) अपने में से किसी एक को शहर में यह सिक्का दे कर भेजो कि वह तुम्हारे लिए देख-भाल कर उम्दा क़िस्म का खाना लाए और उसको चाहिए कि बहुत ही राज़दाराना तरीक़े से वह जाए और हरगिज़ किसी को पता न चलने दे कि हम यहां ठहरे हुए हैं, इसलिए कि अगर इन पर तुम्हारा मामला खुल गया, तो वे तुम को पत्थर मार-मार कर हलाक कर देंगे या तुम को ज़बरदस्ती अपने दीन की तरफ़ लौटने पर मजबूर करेंगे और उस वक़्त तुम हरगिज़ कामियाब न रहोगे, (न दुनिया में, न आख़िरत में) और इसी तरह हमने शहर वालों पर उनका मामला ज़ाहिर कर दिया, ताकि वे यक़ीन कर लें कि अल्लाह का वायदा सच्चा है और क़ियमत की घड़ी ज़रूर आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं है। हमने उनको उस वक़्त इस मामले की ख़बर दी जब कि वे क़ियामत के आने और न आने पर आपस में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे, फिर वे कहने लगे कि इन अस्हाबे कह्फ़ पर कुब्बा तामीर कर दो, इनका परवरदिगार इनके हाल को ख़ूब जानता है, यानी इनसे कोई छेड़-छाड़ न करो। उन लोगों ने, जो हुकूमत में थे कहा, हम तो उनके ग़ार पर एक मस्जिद (हैकल) तामीर करेंगे। ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे, वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता हैं। ये सब अंधेरे में तीर चलाते हैं। कुछ कहते हैं, सात हैं, आठवां उनका कुत्ता हैं। (ऐ पैग़म्बर!) कह दो असल गिनती तो मेरा परवरदिगार ही बेहतर जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और तुम लोगों से इसमें मत झगड़ो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि

Copyright OfflineDeeniApp

साफ़-साफ़ बात में हो (यानी बारीकियों में नहीं पड़ना चाहिए कितने आदमी थे, कितने दिनों तक रहे थे और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ पूछो और हरगिज़ किसी चीज़ के बारे में यह न कहना कि मैं कल को यह ज़रूर करने वाला हूं, मगर (यह कहकर) होगा वही जो अल्लाह चाहेगा और जब कभी भूल जाओ तो अपने परवरदिगार की याद ताज़ा कर लो, तुम कह दो, उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कामियाबी का रास्ता मुझ पर खोल देगा और कहते हैं, वे ग़ार में तीन सौ वर्ष तक रहे और लोगों ने नौ वर्ष और बढ़ा दिए हैं। (ऐ पैग़म्बर!) तुम कह दो अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वे कितनी मुद्दत तक रहे, वह आसमान व ज़मीन की सारी छिपी बातें जाननेवाला है, बड़ा ही देखने वाला, बड़ा सुनने वाला है, उसके सिवा लोगों का कोई करता-धरता नहीं, और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है।

(कह्फ़ 18 : 8-26)

मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० ने इस वाक़िए को इस तरह बयान किया है—

वाक़िया

इस्माईली अरबों के मज़हब से मुताल्लिक़ तारीख़ के पन्ने यह गवाही देते हैं कि इनमें, गो कुछ अर्से बाप-दादा का दीने हक़ 'मिल्लते इब्राहीम' बाक़ी रहा, मगर धीरे-धीरे मिस्र, शाम और इराक़ के मूर्ति पूजकों के ताल्लुक़ात ने अम्र बिन लह्य के ज़रिए उनमें बुतपरस्ती और सितारा परस्ती की बुनियाद डाल दी और कुछ दिनों बाद इन अरबों को शिर्क परस्ती में ऐसा कमाल हासिल हो गया कि वे दूसरों के लिए रहनुमा बन गए, चुनांचे साबित की औलाद भी शिर्क की गुमराही में मुब्तला थी और उनके मशहूर बुत जुश्शुरा, लात-मनात, हुबल, कसआ, अमयानस और हरीश थे। सदियों तक नबती बुतपरस्ती की इस गुमराही में मुब्तला रहे कि मसीही दौर के शुरू में राजधानी रक़ीम के अन्दर एक अजीब मामला पेश आया जिस की तफ़्सील नीचे दी जाती है।

मसीही मज़हब का शुरू का दौर है। नबती हुकूमत के चारों तरफ़ यानी शाम वग़ैरह में ईसाइयत का ज़ोर है कि रक़ीम की कुछ नवजवान सईद रूहें

Copyright OfflineDeeniApp

हैं, शिर्क से बेज़ार और नफ़रत में पड़कर तौहीद की तरफ़ मायल हो जाती हैं और ईसाई मज़हब को क़ुबूल कर लेती हैं। धीरे-धीरे यह बात वक़्त के बादशाह तक भी पहुंच जाती है। बादशाह नवजवानों को दरबार में बुलाता है और हालात जानना चाहता है। नवजवान हक़ का कलिमा बुलन्द करने में बेबाक और जरी साबित होते हैं। यह बात बादशाह को नागवार गुज़रती है, मगर वह दोबारा मामले पर ग़ौर करने के लिए उनको कुछ दिनों की मोहलत देता है। ये दरबार से वापस आकर आपस में मश्विरा करते हैं और तै पाता है कि ख़ामोशी के साथ किसी पहाड़ के ग़ार में छिप जाना चाहिए, ताकि मुश्रिकों के शर से बचे रह कर अल्लाह की इबादत में मश्गूल रह सकें। यह सोच कर वे एक ग़ार में छुप जाते हैं। जब वे ग़ार में दाख़िल होते हैं तो अल्लाह के हुक्म से नींद उन पर छा जाती है और वे ख़्वाब ही की हालत में करवटें बदलते रहते हैं। ग़ार की अ़जीब कैफ़ियत, अन्दर से बहुत बड़ा है मगर क़ुदरत ने उसको ऐसा मौक़ा नसीब किया है कि ज़िंदगी बाक़ी रखने के क़ुदरती सामान वहां सब मौजूद हैं। एक तरफ़ मुहाना है, तो दूसरी तरफ़ हवा गुज़रने की जगहें और सूराख़ हैं, जिनकी वजह से हर वक़्त ताज़ा हवा अन्दर आती रहती है। ग़ार का रुख़ उत्तर-दक्खिन है, इसलिए निकलने-डूबने के वक़्त सूरज की तपन अन्दर नहीं पहुंच पाती, मगर हल्की-हल्की रोशनी बराबर पहुंचती रहती है और ऐसी कैफ़ियत पैदा हो गई है कि न अंधेरा ही है कि कुछ नज़र आए और न इतनी रोशनी है कि खुले मैदान की तरह जगह रोशन हो जाए। इस हालत में कुछ इंसान इस ग़ार में सो रहे हैं और उनका साथी कुत्ता अपने हाथ फैलाए ग़ार के मुहाने पर बाहर की तरफ़ मुंह किए बैठा है।

कुल मिला कर इस सूरत ने ऐसी कैफ़ियत पैदा कर दी है कि पहाड़ों के दर्मियान ग़ार के भीतर झांकने वाले इंसान पर ख़ौफ व हरास की हालत छा जाती है और वह भाग खड़े होने पर मजबूर हो जाता है।

वर्षों तंक ये नवजवान इसी हालत में आराम के साथ महफ़ूज़ रहते हैं कि शहर में इंक़िलाब आ जाता है। रूमी ईसाई नबती हुकूमत पर हमलावर होते हैं और दुश्मन को हरा कर उस पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं और इस तरह रक़ीम (पटरा) ईसाई धर्म की गोद में आ जाता है। अब अल्लाह की मशीयत फ़ैसला

Copyright OfflineDeeniApp

करती है कि ये नवजवान बेदार हों, वे बेदार हो जाते हैं और आपस में सरगोशियां करते हुए एक दूसरे से मालूम करते हैं हम कितनी मुद्दत सोते रहे। एक ने जवाब दिया, एक दिन और दूसरे ने कहा या दिन का कुछ हिस्सा। फिर कहने लगे कि हम में से कोई शहर जा कर खाना ले आए और यह सिक्का ले जाए, मगर जो भी जाए, इस तरह लेन-देन करे कि शहर वालों को पता न लग सके कि हम कौन हैं और कहां हैं? वरना मुसीबत आ जाएगी। बादशाह ज़ालिम भी है और मुश्रिक भी। वह या तो शिर्क पर तैयार और बेदीनी पर मजबूर करेगा, वरना हम सबको क़त्ल कर डालेगा और ये बातें हमारे दीन व दुनिया को बर्बाद करने देने वाली साबित होंगी।

अब नवजवानों में से एक आदमी सिक्का लेकर शहर गया, वहां देखा तो हालात बिल्कुल बदल चुके हैं और नए आदमी और नया तौर-तरीक़ा नज़र आ रहा है, मगर फिर भी डरते-डरते एक बावरची की दुकान पर पहुंचा और खाने-पीने की चीज़ें ख़रीदीं। जब क़ीमत अदा करने लगा तो बावरची ने देखा कि सिक्का पुराना है। इस तरह आख़िर बात खुल गई। लोगों को जब असल हक़ीक़त मालूम हुई तो उन्होंने उस आदमी का स्वागत किया और इस अजीब व ग़रीब मामले में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी ली, क्योंकि अर्सा हुआ कि यहां मुश्रिक बादशाहों का दौर ख़त्म हो चुका था और यहां के बाशिंदों ने ईसाई धर्म अपना लिया था।

उस आदमी ने जब यह हाल देखा तो अगरचे ईसाई धर्म फैल जाने से उसको बेहद ख़ुशी हुई, मगर अपने और अपने साथियों के लिए यही पसन्द किया कि दुनिया के हंगामों से अलग रह कर ख़ुदा की याद में गुज़ार दें, इसलिए किसी तरह मज्मे से जान बचाकर पहाड़ की राह ली और अपने साथियों में पहुंच कर सब हाल कह सुनाया। इधर शहरियां में उनकी तलाश का शौक़ पैदा हुआ और उन्होंने आख़िर उनको एक ग़ार में पा लिया। लोगों ने इसरार किया कि वे शहर चलें और अपनी पाक ज़िंदगी से शहर वालों को फ़ायदा पहुंचाएं, पर वे किसी तरह तैयार न हुए और उन्होंने अपनी उम्र का बाक़ी हिस्सा राहिबों जैसी ज़िंदगी में गुज़ार दिया।

जब इन ख़ुदा के बन्दे राहिबों का इंतिक़ाल हो गया, तो अब लोगों में चर्चा

Copyright OfflineDeeniApp

हुई कि उन की यादगार क़ायम होनी चाहिए, चुनांचे इनमें जो लोग असरदार और बाइक़्तिदार थे, उन्होंने कहा कि हम तो उनके ग़ार पर हैकल (मस्जिद) तामीर करेंगे और ग़ार के मुहाने पर एक शानदार हैकल तामीर करा दिया।

और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० की रिवायत में है कि जब उस जवान के पीछे वक़्त के बादशाह और पब्लिक दोनों आए, तो ग़ार के क़रीब पहुंच कर वे यह न मालूम कर सके कि जवान किस तरफ़ चला गया और जब बहुत तलाश के बाद असहाबे कहफ़ का पता न पा सके, तब मजबूर होकर वापस हो गए और उनकी यादगार में पहाड़ पर एक हैकल (मस्जिद) तामीर कराया।

अहम तफ़्सीरी हक़ीक़तें

1. तर्जुमा—*'फिर हमने उनको (ख़्वाब से) उठाया, ताकि मालूम करें कि दो जमाअ़तों में से किसने इस मुद्दत को महफ़ूज़ रखा, जिसमें वे (ग़ार के अन्दर) रहे।* (18 : 12)

यहां दो जमाअ़तों में से एक अस्हाबे कहफ़ की और दूसरी अह्ले शहर की जमाअ़त मुराद है। मतलब यह है कि यह इसलिए किया कि मुद्दत ज़ाहिर हो जाए और यह मालूम करने के बाद कि अल्लाह तआ़ला ने उनको वर्षों तक ख़्वाब की हालत में ज़िंदा रखा, जबकि वे ज़िंदगी की बक़ा के साधनों से यकसर महरूम थे,' लोगों को यह यक़ीन हो जाए कि बेशक इसी तरह वह मख़्लूक़ को मरने के बाद भी ज़िंदा करेगा और बेशक मौत के बाद उठाए जाने का मसला हक़ है, चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने उनको बेदार किया और उनमें से एक नवजवान शहर में खाना ख़रीद करने गया तो उस ज़माने में बस्ती वालों के दर्मियान 'मौत के बाद उठाए जाने' पर झगड़ा और बहस जारी थी, एक जमाअ़त कहती थी कि फ़क़त रूह का उठाया जाना होगा और दूसरी जमाअ़त क़ायल थी कि रूह और जिस्म दोनों को ज़िंदा होना है, यह तो नसारा की जमाअ़तें थीं और जो नब्ती मुश्रिक आबाद थे, वे सिरे से मौत के बाद उठाए जाने ही के इंकारी थे। ऐसे नाज़ुक वक़्त में अल्लाह तआ़ला ने उस आदमी को ग़ार से बेदार करके भेजा और इस तरह जब अस्हाबे कहफ़ का

Copyright OfflineDeeniApp

वाक़िया सब पर ज़ाहिर हो गया तो उसने एलानिया यह नज़ीर कायम कर दी कि जिस तरह वर्षों तक ज़िंदगी के सामानों से महरूम रहने के बावजूद रूह के साथ जिस्म भी सही-सालिम बाक़ी रहा, उसी तरह 'मौत के बाद उठना', रूह और जिस्म दोनों से ताल्लुक़ रखता है और जिस तरह सोते रहने के बाद अस्हाबे कह्फ़ बेदार कर दिए गए, उसी तरह क़ब्र से (बरज़ख की दुनिया में) सैकड़ों और हज़ारों वर्ष मुर्दा रहने के बाद भी क़ियामत में ज़िंदा कर दिए जाएंगे।

तर्जुमा—*'ऐ पैग़म्बर! कुछ लोग कहेंगे कि वे तीन आदमी हैं, चौथा उनका कुत्ता है, कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं, नहीं पांच हैं, छठा उनका कुत्ता है, ये सब अंधेरे में तीर चलाते है।'* (18 : 22)

अल्लाह ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ इन हक़ीक़तों को ज़ाहिर करने के बाद, जो उसके मक़्सद 'तज़कीर' (याददेहानी) के लिए फ़ायदेमंद थीं, वाक़िए की इन छोटी-छोटी बातों के बारे में जो सिर्फ़ तारीख़ी हैसियत रखती हैं और उनके जान लेने से कोई ख़ास फ़ायदा भी नहीं होता, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह नसीहत फ़रमाई कि वे इन ला-हासिल बहसों से परहेज़ करें और इन पर सरसरी तौर से गुज़र जाएं और बेकार बातों की खोज लगाने की फ़िक्र न करें, जैसे यह कि इन नवजवानों की तायदाद क्या थी? उनकी उम्रों का तनासुब क्या था? वे ग़ार में कितनी मुद्दत तक ठहरे रहे? मुद्दत की सही मिक़्दार क्या है? वग़ैरह।

तर्जुमा—*'(ऐ पैग़म्बर!) कह दे कि उनकी असल गिनती को मेरा पालनहार ही जानता है, क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोगों के इल्म में आया है और जब सूरतेहाल यह है तो लोगों से इस बारे में बहस और झगड़ा न करो, मगर सिर्फ़ इस हद तक कि साफ़-साफ़ बात में हो और न उन लोगों में से किसी से इस बारे में कुछ मालूम करना? इसलिए जो बात भी होगी अटकल होगी।'* (18-22)

3. 'व लबिसू फ़ी कहफ़िहिम सला-स मि-अति सिनीन वज़्दादू तिसआ' (18-25)

इस आयत का तर्जुमा आमतौर से तफ़्सीर लिखने वालों ने इस तरह

Copyright OfflineDeeniApp

किया है गोया अल्लाह तआ़ला अपनी ओर से यह इत्तिला दे रहा है कि वे तीन सौ नौ साल ग़ार में रहे, मगर हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ि० से कुछ रिवायतों में जो मानी ज़िक्र किए गए है, उनका मतलब यह है कि यह लोगों का क़ौल है, अल्लाह तआ़ला का अपना क़ौल नहीं है, यानी वे आयत 'व लाबिसू' को इससे पहले के जुम्ले 'यक़ूलून' के तहत में दाख़िल समझते और यह मानी करते हैं कि जिस तरह लोग (ईसाई) अस्हाबे कह्फ़ की तायदाद के बारे में अलग-अलग बातें कहते हैं और कहेंगे, इसी तरह वे यह भी कहते पाए जाते हैं कि अस्हाबे कह्फ़ तीन सौ नौ साल तक ग़ार में रहे।

हमारे (मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान स्योहारवी रह० के) नज़दीक यही मानी तर्जीह के लायक़ है, क्योंकि क़ुरआन मजीद का सबाक़ (प्रसंग) इसी को ज़ाहिर करता है, इसलिए कि इन्हीं आयतों में क़ुरआन ने नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह हिदायत की है कि वे इस क़िस्म की ग़ैर-मुफ़ीद और अटकल की बातों के पीछे न पड़ें, तो इससे यह बात साफ़ हो गई कि ग़ार में क़ियाम का मस्अला भी अंधेरे का तीर है और इसे अल्लाह के इल्म के सुपुर्द कर दिया जाए, तो बेहतर है।

4. 'जालि-क मिन आयातिल्लाह (18 : 17)' (यह अल्लाह की निशानियों में से है,) यानी पहाड़ के अन्दर ग़ार की यह मज्मूई कैफ़ियत कि ग़ार का मुहाना अगरचे तंग है, मगर उसके अन्दर बहुत काफ़ी फैलाव है, उसका रुख़ उत्तर-दक्खिन है जिसकी वजह से सूरज का निकलना और डूबना दोनों हालतों में सूरज दाहिने और बाएं कतरा कर निकल जाता है और ग़ार उसके तपन में बचा रहता है और दूसरी तरफ़ खुला होने की वजह से हवा और रोशनी ज़रूरत भर पहुंचती रहती है, गोया जिस्मानी बक़ा के लिए जो चीज़ नुक़्सानदेह है यानी तपन, उससे हिफ़ाज़त और जो ज़िंदगी बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी चीज़ें हैं यानी रोशनी और हवा, उसकी मौजूदगी, ये ऐसी बातें हैं जो अल्लाह तआ़ला की खुली निशानियां कहीं जा सकती हैं कि उनकी बदौलत क्यों तक अल्लाह के नेक बन्दे दुनिया की ख़राबियों में अलग होकर ग़ार में ख़्वाब की हालत में बसर कर सके और ऐसी हालत में बसर कर सके जबकि

Copyright OfflineDeeniApp

बक़ा के दूसरे दुनिया के साधनों से क़तई तौर पर महरूम थे।

5. आमतौर पर मशहूर है कि अस्हाबे कह्फ़ अभी तक ग़ार में सो रहे हैं और ज़िंदा हैं, मगर यह सही नहीं है, इसलिए कि हज़रत इब्ने अ़ब्बास रज़ि० ने खोलकर यह फ़ारमाया है कि उनका इंतिक़ाल हो चुका।

6. 'व कल्बुहुम बासितुन ज़िराऐहि बिलवसीद' (18 : 18) कुत्ते ने वफ़ादारी और जांनिसारी का सबूत दिया और भले लोगों की सोहबत पाई तो कुरआन ने भी उसका ज़िक्रे ख़ैर करके उसे वह इज़्ज़त बख्शी कि इंसानों के लिए क़ाबिले रश्क बना दिया। शेख सादी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने क्या ख़ूब कहा है—

सगे अस्हाबे कह्फ़. रोज़े चन्द
पए एकां गिरफ़्ते मर्दम शुद।
पिसर नूहे ब अब्दां बनशिस्त
ख़ानदाने नबूतश गुमशुद

7. तर्जुमा—*'और किसी चीज़ के लिए यह न कहो कि कल मैं इसको ज़रूर करूंगा, (मगर यह कह लिया करो) यह कि अल्लाह चाहे तो'* (18 - 23)

इस आयत में अल्लाह तआ़ला ने यह तालीम दी है कि जब मुस्तक़्बिल में किसी काम का इरादा हो तो दावे के साथ यह नहीं कहना चाहिए कि मैं इसको ज़रूर करूंगा, इसलिए कि कौन जानता है कि कल क्या होगा और कहने वाला इस कायनात में मौजूद भी होगा या नहीं, इसलिए इस मामले को अल्लाह के सुपुर्द करते हुए 'इन शाअल्लाह' ज़रूर कहना चाहिए।

8. तर्जुमा—*'तुम कहो उम्मीद है मेरा परवरदिगार इससे भी ज़्यादा कामियाबी की राह मुझ पर खोल देगा।'* (18 : 24)

इस आयत में इस तरफ़ इशारा है कि बहुत जल्द ऐसा ही मामला तुम को भी पेश आने वाला है, बल्कि वह इससे भी अजीब व ग़रीब होगा, यानी अपना आबाई वतन छोड़ना पड़ेगा। राह में ग़ारे सौर के अन्दर कई दिन तक छिपे रहोगे। दुश्मन गारे सौर के मुंह पर पहुंच जाने के बावजूद तुमको न पा सकेंगे, तुम ख़ैरियत के साथ मदीना पहुंच जाओगे और वहां तुम पर फ़त्ह व

Copyright OfflineDeeniApp

कामरानी की ऐसी राहें खोल दी जाएंगी जो इस मामले से कहीं ज़्यादा अज़ीम व जलील होंगी। यह सूरः मक्की दौर की आख़िरी सूरतों में से है, इसलिए इसके उतरने के बहुत थोड़े दिनों के बाद हिजरत का वह शानदार वाक़िया पेश आया, जिसने मुसलमानों की ज़िंदगी के दौर में हैरत में डाल देने वाला इंक़िलाब पैदा कर दिया और बातिल ने हक़ के सामने हथियार डाल दिए।

सबक़ और नतीजे

1. अगर हम को कोई बात अपनी अक़्ल के मुताबिक़ अजीब व ग़रीब मालूम हो तो यह ज़रूरी नहीं है कि वह अपनी हक़ीकत के लिहाज़ से भी वाक़ई कोई अजीब बात है। अगर वह अजीब है भी तो हमारे लिए है, न कि कायनात के पैदा करने वाले के लिए, जिसने कि कायनात को पैदा किया और फिर ऐसे मज़बूत निज़ाम पर उसको क़ायम किया कि अक़्ल हैरान है मगर आंख रोज़ाना उसे देखती और दिल हर लम्हा इस हक़ीकत का एतराफ़ करता है कि :

तर्जुमा—*'अल्लाह पर यह बात कुछ भारी नहीं है।'*

2. जब शर व फ़साद और ज़ुल्म व सरकशी इस दर्जा बढ़ जाए कि अल्लाह के नेक बन्दों के लिए कहीं पनाह न रहे, तो अगरचे अ़ज़ीमत का दर्जा यही है कि कायनात की रुश्द व हिदायत की ख़ातिर हर क़िस्म की तक़्लीफ़ें वरदाश्त करे और हक़ कलिमे पर पहाड़ की तरह जमा रहे, मगर मख़्लूके ख़ुदा से कट कर कोना न पकड़ ले, लेकिन अगर हालात इस दर्जा नज़ाकत अख़्तियार कर लें कि मख़्लूक़ के साथ ताल्लुक़ रखने की शक्ल में जान देनी पड़े या दीने बातिल क़ुबूल करने पर मजबूर होना पड़े और हालत यह हो जाए—

तर्जुमा—*'अगर वे लोग कहीं तुम्हारी ख़बर पर जाएंगे तो तुमको या तो पत्थरों से मार डालेंगे या तुम को (जबरन) अपने तरीक़े में फेर लेंगे और अगर ऐसा हुआ तो तुम को कभी फ़लाह नसीब न होगी।'* (18 : 20)

तो इस वक़्त रुख़्सत है कि जान की हिफ़ाजत और दीन की ख़िदमत के लिए दुनिया और आलाइशों से कट कर किनाराकशी अख़्तियार कर ले।

Copyright OfflineDeeniApp

गोया यह इज़्तरारी हालत का एक हंगामी और वक़्ती इलाज है जो सिर्फ़ दीन ईमान की हिफ़ाज़त के लिए किया जा सकता है, लेकिन इस्लाम की निगाह में अपने आपमें कोई महबूब अ़मल नहीं है और अख़्तियारी तौर पर इस योगियाना ज़िंदगी को आख़्तियार करना रहबानियत है। 'वला *रहबानियत्त फ़िल इस्लाम*' (इस्लाम में रहबानियत नहीं है।) और इस्लाम रहबानियत को नापसन्द करता है। ईसाइयों की मज़हबी तारीख़ के पढ़ने से यह मालूम होता है कि शुरू के ज़माने में कुछ सच्चे ईसाइयों को अस्हाबे कहफ़ की तरह के कुछ वाक़िए पेश आए, जिनमें से एक रूम में, एक अन्ताकिया में और शहर अफ़स में पेश आना बताया जाता है, चुनांचे उन्होंने हालात से मजबूर होकर इज़्तिरारी तौर पर इस योगियाना ज़िंदगी को अख़्तियार किया था, मगर बाद में दूसरी बिदअ़तों की तरह यह अ़मल भी ईसाई धर्म का बहुत अहम हिस्सा और पसंदीदा अ़मल गिना जाने लगा और जिस तरह भारत के पुराने धर्म के मुताबिक़ दुनिया के झमेलों से कट कर हिन्दू योगी पहाड़ों की खोह और वीरानों में योग करना मुक़द्दस अ़मल समझते हैं, उसी तरह ईसाइयों ने भी अख़्तियारी सन्यास को मज़हब के मुक़द्दस कामों में शामिल कर लिया।

लेकिन क़ुरआन हकीम ने उनके इस अ़मल के मुताल्लिक़ सफ़ाई के साथ ज़ाहिर कर दिया है कि अल्लाह के नज़दीक अपने आपमें यह अ़मल कोई पसन्दीदा अ़मल नहीं है, बल्कि अह्ले किताब की मज़हबी बिदअ़तों में से एक बिदअ़त है।

तर्जुमा—*'और राहिबाना ज़िंदगी को कि जिसको इन (ईसाइयों) ने दीन में ईजाद कर लिया, हमने उन पर फ़र्ज़ नहीं किया था, मगर उन्होंने अख़्तियार किया था अल्लाह की रज़ा जूई के लिए, पर उसके हक़ की रियायत न रख सके।'*

(57-27)

मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने उनके लिए यह तरीक़ा दीन के तरीक़ों में से नहीं मुक़र्रर किया था, बल्कि उन्होंने खुद ही अख़्तियार कर लिया था, मगर बाद में उसको निबाह न सके और रहबानियत के परदे में दुनियादारों से ज़्यादा दुनियातलबी और लालच में फंस गए।

हक़ यह है कि साफ़ और सीधा रास्ता एतदाल का रास्ता है, न इसमें

Copyright OfflineDeeniApp

पेच व ख़म है और न नशेब व फ़राज़। यह राह इफ़रात व तफ़रीत दोनों से जुदा करके असल मंज़िल तक पहुंचा देती है और चूंकि इस्लाम फ़ितरत का दीन है, इसलिए उसने हर मामले में एतदाल ही को पसन्दीदा अ़मल क़रार दिया है। उसकी नज़र में जितना दुनिया में लगा रहना बुरा है, उतना ही मख़्लूक़े ख़ुदा से कट कर योगियाना रहबानियत भी मज़मूम (निन्दनीय) है। नबी अकरम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है, इस उम्मत के लिए रहबानियत 'अल्लाह के रास्ते का जिहाद' है, क्योंकि जिहाद के मैदान के लिए इंसान जब ही क़दम उठाता है कि वह अपने नफ़्स, अपने बाल-बच्चों और हर क़िस्म की दुन्यवी झंझटों से बेनियाज़ होकर सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी को पूरा करना अ॰ ना मक़्सद और नस्बुलऐन (निगाह के सामने रहने वाली मंज़िल) बना ले।

3. हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से आयत 'वला तक़ूलन्नलिशैइन इन्नी फ़ाइ़लुन गदा इल्ला अंय्यशा अल्लाहु' (18 : 23-24) के नाज़िल होने के बारे में यह रिवायत बयान की जाती है कि जब मक्का के मुश्रिकों ने नबी अकरम सल्लाल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से अस्हाबे कह्फ़ के बारे में सवाल किया, तो आपने फ़रमाया कि मैं कल वह्य से मालूम करके इसका जवाब दूंगा, मगर आपको 'इनशा अल्लाह' कहना याद न रहा, इस वजह से पन्द्रह दिन तक वह्य नहीं आयी, तब मुश्रिकों ने कानाफूसियां शुरू कर दीं और आपका दिल इस वजह से टूटने लगा।

पन्द्रह दिन के बाद वह्य नाज़िल हुई और उसने वाक़िए की ज़रूरी तफ़्सीलों के साथ-साथ यह भी बतलाया कि इंसान जबकि 'कल' को नहीं जानता, तो उसके लिए ज़रूरी है कि जब कल के लिए किसी बात का वायदा करे तो अल्लाह की मर्ज़ी का हवाला ज़रूर दे दिया करे, ताकि यह बात कभी भूलने न पाए कि बन्दा नहीं जानता कि कल क्या होगा, मैं ज़िंदा भी रहूंगा या नहीं और अगर ज़िंदा भी रहा तो वायदे के पूरे होने पर मैं क़ादिर हो सकूंगा या नहीं।

4. दीन और मिल्लत अल्लाह तआ़ला की साफ़ और सीधी राह का नाम है, इसलिए वह ज़बरदस्ती करने से दिल में नहीं उतरती, बल्कि अपनी सच्ची

Copyright OfflineDeeniApp

रोशनी से अंधे दिलों को रोशन और मुनव्वर करती है। 'ला इकरा-ह फ़िद्दीन' (दीन के बारे में कोई ज़बरदस्ती नहीं है), मगर इसके ख़िलाफ बातिल की हमेशा यह कोशिश रहती है कि अल्लाह की मख़्लूक़ पर ज़बरदस्ती ज़ुल्म और जब्र से अपना असर जमाए और दलील की जगह जब्र से काम ले, लेकिन अल्लाह की मशीयत अंजाम की शक्ल में सच्चाई (दीने हक़) ग़ालिब करती और बातिल को मग़्लूब कर देती है और अंजाम व नतीजा हक़ के हाथ रहता है, मगर चूंकि अल्लाह की पकड़ का क़ानून एक तो काफ़ी मोहलत देता है, इसलिए ज़ालिम क़ौमें जिहालत से उसको अपनी कामियाबी समझकर अल्लाह की 'बत्शे शदीद (सख़्त पकड़) से ग़ाफ़िल हो जाती हैं और इसलिए तारीख बार-बार अपने सबक़ को दोहराती रहती है।

5. तजुर्बा इस पर गवाह है कि हक़ व सदाक़त की तहरीक और न सिर्फ़ यह, बल्कि हर इंक़िलाबी तहरीक जिस दर्जा क़ौम के नवजवानों पर असरअंदाज़ होती है, बड़ी उम्र के लोग क़ौम पर इस तेज़ी के साथ असरअंदाज़ नहीं होते। साइक्लॉजी के माहिर लोग इसकी यह वजह बयान करते हैं कि बड़ी उम्र वालों के दिल व दिमाग़ चूंकि उम्र के बड़े हिस्से में पुराने रस्म व रिवाज के आदी हो जाते और सोसाइटी के पुराने निज़ाम से अर्से तक मानूस रह चुके होते हैं और उसकी नस-नस में पुरानी बातें बैठ चुकी होती हैं, इसलिए हर वह तहरीक जो पुराने निज़ाम या घिसी-पीटी रस्मों के ख़िलाफ़ ज़ाहिर होती है, उनके दिल व दिमाग़ उसके नये असर से पीड़ा और तक्लीफ़ महसूस करते हैं और पुरानी-नई बातों का टकराव उनके लिए बोझ बन जाता है इसलिए वे नए इंक़िलाब से मानूस होने की बजाए और ज़्यादा दहशत में पड़ जाते हैं, अलबत्ता इनमें से जो दिल व दिमाग़ जज़्बे के मुक़ाबले में अक़्ल को और तास्सुर के मुक़ाबले में दलीलों को रहनुमा बना लेते हैं और हर मामले में नए-पुराने से हट कर मतानत और संजीदगी के साथ उनके फ़ायदे और नुक़्सान पर ग़ौर करने के आदी होते हैं वे इस आम उसूल से अलग हैं और जब भी वे इंकिलाबी तहरीक के लिए ज़बरदस्त मददगार साबित होते हैं, मगर जमाअ़तों और क़ौमों में आ़मतौर से उनकी तायदाद कम होती है लेकिन, बड़ी उम्रवाले लोगों के खिलाफ़ चूंकि नवजवानों के दिल न दिमाग़ बड़ी हद तक ग़ैर जानिबदार (निष्पक्ष) होते और पुराने रस्म व रिवाज़ के लिए अभी तक पके

Copyright OfflineDeeniApp

उन पर नए नक़्श बहुत जल्द उभर आते हैं और वे किसी तब्दीली और किसी इंक़िलाब को, सिर्फ़ इसलिए कि वे नई बातों की दावत दे रहे हैं, वहशत भरी नज़रों से नहीं देखते, बल्कि दिलचस्पी के साथ उसकी तरफ़ बढ़ते और साफ़ दिल व दिमाग से उस पर ग़ौर करते हैं।

अब यह इंकिक़्लाबी तहरीक की ज़िम्मेदारी है कि अगर उसमें सच्चाई और हक़तलबी काम कर रही है और जमाअ़तों और क़ौमों को ग़लत रास्ते से निकाल कर सीधे रास्ते की तरफ़ दावत देती है, तो उसकी तरफ़ तेज़ी के साथ भीड़ की भीड़ बढ़ने वालों और पैरवी करने वालों की ज़िंदगी में चार चांद लग जाते है और उनका वजूद इस पूरी दुनिया के लिए रहमत साबित होता है और अगर मामला इसके ख़िलाफ़ है, तो वह इन तर व ताज़ा और साफ़ दिल व दिमाग़ रखनेवाले नवजवानों को तबाही और बर्बादी के रास्ते पर लगा देती है और उनका वजूद पूरी इंसानियत के लिए मुसीबत और अ़ज़ाब बन जाता है।

सबा और सैले इरम

(लगभग 200ई०)

तम्हीद (प्रस्तावना)

क़ौमों की तरक़्क़ी और तनज़्ज़ुली का पस मंज़र (उन्नति-अवनति की पृष्ठभूमि) बख़्त व इत्तिफ़ाक़ (भाग्य और संयोग) पर टिका नहीं होता, बल्कि क़ुदरत के क़ानून के मुक़र्रर किए गए उसूल के मुताबिक़ पेश आता है, अलबत्ता कभी ऊरूज व ज़वाल (उन्नति-अवनति) की वजहें इतनी वाज़ेह और साफ़ होती हैं कि आम तौर से ये देखने में आ जाती हैं और या अक़्ल की सरसरी तवज्जोह से पहचान ली जाती हैं और कभी उनका वजूद ऐसी वज्हों से होता है जिनका ताल्लुक़ आम वज्हों और वसीलो से अलग होता है, अल्लाह तआ़ला की फ़रमांबरदारी और नाफ़रमानी से जुड़ा होता है, यानी देखने में अगरचे एक क़ौम में, मिसाल के तौर पर वे तमाम हालात और वज्हें पाई जाती हों, जिनसे किसी क़ौम को तरक़्क़ी मिलती है, फिर भी वह क़ौम अचानक

Copyright OfflineDeeniApp

हलाकत व बर्बादी की भेंट चढ़ जाती है और इंसानी दुनिया के लिए उसकी हलाकत हैरत में डाल देने वाली बन जाती है, लेकिन जब अल्लाह की ओर से उनकी सरकशी, बग़ावत और अल्लाह के हुक्मों की बराबर ख़िलाफ़वर्ज़ी का परदा चाक हो जाता है और अल्लाह की वह्य, उनके अ़मल और अ़मल के बदले की तफ़्सील को सबके सामने ले आती है, तब बुद्धि रखने वाले लोग यह यक़ीन कर लेते हैं कि जिस क़ौम की इज्तिमाई ज़िंदगी के ख़ुबसूरत ख़ोल में ऐसी मक्रूह और घिनौनी शक्ल मौजूद थी, तो बेशक उसकी हलाकत व तबाही संयोग की वजह से नहीं, बल्कि अल्लाह के क़ानून व अ़मल के बदले के ठीक मुताबिक़ हुई है।

सबा और क़ौमे सबा का वह सबक़ भरा हादसा और उन की तरक़्क़ियों का नसीहत भरा वाक़िया, जो नीचे दिया जा रहा है क़ौमों की तरक़्क़ी-तबाही के उस दूसरे क़ानून की वजह से ही आया था और तारीख़ के पन्ने इस सच्चाई के गवाह हैं कि वह क़ौम ऐश व इशरत की बुलन्दी पर बिना किसी ख़ौफ़ और ख़तरे के ज़िंदगी बसर कर रही थी और एकदम हलाकत व बर्बादी के गहरे खड्ड में सिर्फ़ संयोग से नहीं गिर गई थी बल्कि दूर-दूर तक पहुँचे हुए बुरे आ़माल के बदले में उसको ये बुरे दिन देखने पड़े थे, जो तारीख़ के वाकियों में बड़ी अहमयित रखते और क़ौमों के बनने-बिगड़ने की तारीख़ में हज़ारों सबक़ व नसीहत जुटाते हैं।

सबा और क़ौमे सबा

सबा क़हतानी क़बीले की मशहूर शाख़ है, जबकि क़हतान का ताल्लुक़ उम्मे सामिया से है, लेकिन इसमें इख़्तिलाफ़ है कि वह बनू इस्माईल में से है और अदनानी और क़हतानी एक ही सिलसिला है या यह कि अ़दनानी तो बनी इस्माईल हैं और क़हतानी उनसे अलग एक पुराना सिलसिला है। अरब के तारीख़दां कहते हैं कि सबा लक़ब है और नाम अम्र या अ़ब्द शम्स है। आज के दौर के तारीख़ वाले इसी को सही समझते हैं और यह भी कहते हैं कि 'सबा' के मतलब में 'तिजारत' के मानी दाख़िल हैं और 'सबा की क़ौम' (क़ौमे सबा), चूंकि तिजारत पेशा क़ौम थी, इसलिए 'सबा' के नाम से मशहूर हुई।

Copyright OfflineDeeniApp

सबा और हुकूमत के तबक़े

तारीख़दानों के हिसाब से सबा की हुकूमत दो तबक़ों में बंटी रही है और फिर हर दो तबक़ों की हुकूमत का ज़माना अलग-अलग दो दौरों में बंटा हुआ है। पहले तबक़े का पहला दौर लगभग 11 सौ ईसा पूर्व से शुरू हो कर 550 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। यह इसकी तरक़्क़ी का ज़माना है और हज़रत सुलैमान (عليه السلام) के ज़माने की मलिका सबा (बिलक़ीस) इसी दौर से ताल्लुक़ रखती है। पहले तबक़े का दूसरा दौर 550 ईसा पूर्व से शुरू होकर 115 ईसा पूर्व पर ख़त्म होता है। सैले इरम और सबा का बिखराव इसी दौर से मुताल्लिक़ है। क़ुरआन में सूरः दुख़ान और सूरः क़ाफ़ में जिन 'तुब्बअ' वालों का ज़िक्र किया गया है उनका ताल्लुक़ दूसरे तबक़े के इस दौर से है। मुख़्तसर यह कि लगभग आठवीं सदी ईसा पूर्व में 'सबा' की हुकूमत अरब की शानदार तरक़्क़ीयाफ़्ता हुकूमत थी।

सबा की इमारतें और उनका रहन-सहन

सबा की शानदार इमारतों के तज़्किरे पुराने और नए तारिख़दानों के यहां बहुत ज़्यादा मिलते हैं। कहते हैं कि उनका महल ग़मदान कारीगरी का बेहतरीन नमूना था। (इसके मुताल्लिक़ बयान अगले पन्नों पर देखें।) यह क़स्र बीस मंज़िलें रखता था और ऊपर की मंज़िल बहुत ही ज़्यादा क़ीमती आबगीनों (हीरे-जवाहरात) से बनाई गई थी। इसका ज़िक्र हज़रत सुलैमान (عليه السلام) के क़िस्से में हो चुका है। इसी तरह और भी बेनज़ीर इमारतें थीं। सबा की हुकूमत की सीमाओं के अन्दर सोने और जवाहरात की खाने थीं, हज़र मौत और यमन का इलाक़ा ख़ुशबूदार चीज़ों के लिए मशहूर था, जबकि अमान और बहरैन के मोती दुनिया में बेमिसाल समझे जाते थे। इसी तरह यमन का साहिल पूरे इलाक़े की (पैदावार के लिए) मंडी था और शाम, मिस्र, यूरोप और हिन्दुस्तान व हब्श के दर्मियान तिजारत के अकेले ठेकेदार 'सबा' ही थे। तौरात में सबा की दौलत व सरवत और उनके तमद्दुन (संस्कृति) की महानता के बहुत ज़्यादा तज़्करे मिलते हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

सद्दे मआरिब (मआरिब का बांध)

अरब में मुस्तक़िल नदियां नहीं हैं। अक्सर वर्षा के पानी पर गुज़र है और कहीं-कहीं पहाड़ी चश्मे भी हैं। वर्षा का पानी हो या पहाड़ी चश्मों का, तमाम पानी बहकर वादी कें रेगिस्तान में सूख कर बर्बाद हो जाता है। क़ौम सबा ने इस पानी को काम में लाने और बाग़ों और खेतों को हरा-भरा बनाने के लिए यमन के दूर-दूर तक के इलाक़ों में एक सौ से ज़्यादा बांध बांधे थे और उनकी वजह से पूरा मुल्क सरसब्ज़ व शादाब बना हुआ था। इन्हीं बांधों में से सबसे बड़ा और शानदार बांध 'सद्दे मआरिब' था, जो राजधानी मआरिब में बनाया गया था।

इस सद्द के बारे में पुराने-नये तारीख़दानों और सैर-सपाटा करनेवालों ने जो हालात लिखे हैं, वे यह साबित करते हैं कि सबा को इंजिनियरिंग के फ़न और मैथमेटिक्स में बड़ा कमाल हासिल था।

मआरिब के दक्खिन में दाएं-बाएं दो पहाड़ हैं जो अबलक़ पहाड़ के नाम से मशहूर हैं और उनके दार्मेयान बड़ी लम्बी-चौड़ी घाटी है जिसको उज़्निया की घाटी कहते हैं। जब पानी बरसता या पहाड़ी चश्मों से बह निकलता, तो घाटी नदी बन जाती। सबा ने यह देख कर 800 ई०पूर्व में इन दोनों पहाड़ों के दर्मियान बांध का बांधना शुरू कर दिया और अर्से तक उसके बनाने का सिलसिला जारी रहा।

अरब के कुछ तारीख़दां कहते हैं कि यह बांध दो वर्ग मील में था और अर्ज़ुल क़ुरआन के लेखक एक यूरोपीय पर्यटक (सय्याह) अज़माऊ के मज़्मून (लेख) के हवाले से बयान करते हैं कि यह एक सौ फिट लम्बी और पचास फिट चौड़ी दीवार है, जिसका बहुत बड़ा हिस्सा टूट चुका है और तिहाई अब भी बाक़ी है और वे यह भी तहरीर फ़रमाते हैं कि इस सय्याह (पर्यटक) ने उसका बहुत अच्छा-सा नक़्शा तैयार करके अपने मज़्मून के साथ छापा है जो फ्रेंच एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपा है और जिसको उन्होंने अरज़ुल क़ुरआन में भी नक़ल किया है।

अरब के तारीख़दां यह भी कहते हैं सबा ने उसको इस तरह तामीर

Copyright OfflineDeeniApp

किया था कि पानी को रोकने के बाद मौसमों के इख़्तिलाफ़ के पेशे नज़र सिंचाई के लिए पानी के ऊपर-नीचे तीन दर्जे क़ायम कर दिए थे और हर दर्जे में तीस-तीस ख़िड़कियां रखी थीं, जिनके ज़रिए पानी को खोला और बंद किया जाता था और फिर उनके नीचे एक बहुत बड़ा हौज़ बनाया था। उसके दाएं-बाएं लोहे के दो बड़े-बड़े फाटक थे। हौज़ का पानी जिनके ज़रिए तक़्सीम होकर मआरिब के दोनों तरफ़ नहरों, गोलों और जबहों के ज़रिए ज़रूरत के मुताबिक़ काम में आता था। इस शानदार बांध की वजह से लगभग 300 वर्ग मील तक दाएं-बाएं छुहारों के बाग़, मेवों और फलों के बहुत सुन्दर बाग़ और मुर्ग़ज़ार, 'दार चीनी', औफ़ और हर तरह के ख़ुश्बूदार पेड़ों के घने बाग़ इतने ज़्यादा हो गए थे कि तमाम इलाक़ा चमनिस्तान और फ़िरदौस बना हुआ था।

यमन की फ़ितरी ख़ुसूसियतों के लिहाज़ से ख़ुश्बुओं, फलों और फूलों के पेड़ों की ज़्यादती मआरिब के बांध की वजह से इसमें शानदार बढ़ौत्तरी और तरक़्क़ी, तिजारती कारोबार और खनिज पदार्थों (मादनियात) की ज़्यादती की वजह से सोना, चांदी और जवाहरात की बहुतायत ने क़ौमे सबा में इस दर्जा, ऐश्परस्ती, ख़ुशहाली, और इत्मीनान पैदा कर दिया था कि वे हर वक़्त ख़ुशी-ख़ुशी अल्लाह की नेमतों का फ़ायदा उठाते और रात व दिन सुख-वैभव का जीवन जी रहे थे।

और देश के बहारस्तानों और चमनिस्तानों की वजह से जलवायु में इतना ठहराव था कि सबा के लोग मच्छरों, मक्खियों और पिस्सुओं जैसे तक्लीफ़ पहुंचाने वाले कीड़ों से पाक और हिफ़ाज़त में थे। 'जन्नतानि अंय्यमीनिंव-व शिमाल०'

(34 : 15)

ग़रज़ हर क़िस्म की राहत और ऐश की ज़िंदगी पर यह और ज़्यादा था कि यमन से शाम तक जिस मशहूर शाहराह (Main Road) पर सबा वालों के तिजारती क़ाफ़िलों का आना-जाना था, उसके भी दोनों तरफ़ ख़ुबसूरत बलसान और दारचीनी के ख़ुश्बूदार पेड़ों का साया था और क़रीब-क़रीब फ़ासले से सफ़र को आरामदेह बनाने के लिए कारवां सराएं बनाई गई थीं जो शाम के इलाक़े तक उनको 'इस आराम के साथ पहुंचाती थीं कि ठंडे पानी, मेवों और फूलों की ज़्यादती यह भी महसूस नहीं होने देती थी कि वे अपने

Copyright OfflineDeeniApp

वतन में हैं या कठिनाई भरे सफ़र में। यहां तक कि जब ख़ुशबूदार साया और सुकून देने वाली हवा में उनका कारवां इन कारवांसरायों में ठहरता, मेवे और ताज़ा फल खाता और ठंडा-मीठा पानी पीता हुआ हिजाज़ और शाम तक आना-जाना रखता, तो पड़ौसी क़ौमें रशक व हसद से उन पर निगाहें उठातीं और हैरत व ताज्जुब के साथ उनके इस ऐश व इशरत पर दांतों तले उंगलियां दबा लेती थीं, जैसा कि आप उनके ज़माने के तारीख़दानों की ज़ुबान से सुन चुके हैं कि वे किन लफ़्ज़ों में उनकी ख़ुशहाली का तज़्करा कर रहे हैं और जिसको अल्लाह ने बेहद (उनके लिए) सस्ता कर दिया था।

इन तारीख़ी तफ़्सील के बाद अब हमको क़ुरआन की इन आयतों को पढ़ना चाहिए जो सबा की इन ख़ुशहालियों का ज़िक्र करते हुए उसको अह्लेसबा पर अल्लाह तआ़ला का शानदार इनाम व इकराम ज़ाहिर करती हैं—

तर्जुमा—*बेशक अह्लेसबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की क़ुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी। दो बाग़ों का (सिलसिला) दाएं-बाएं और अल्लाह ने उनको यह फ़रमा दिया था, ऐ सबा वालो! अपने परवरदिग़ार की तरफ़ से बख़्शी हुई रोज़ी खाओ और उसका शुक्र करो, शहर है पाकीज़ा और परवरदिगार है बख़्शने वाला* (34 : 12)

क़ुरआन मजीद की ऊपर की लाइनों को पढ़िए, क़ुरआन कहता है कि सबा के अपने घर में अल्लाह तआ़ला की बेनज़ीर और अजीब व ग़रीब निशानी मौजूद थी, वह यह कि सैंकड़ों मील तक उनके शहर के दाएं-बाएं मेवों, फलों और ख़ुश्बूदार चीज़ों के पेड़ों का घना सिलसिला बाग़ों की शक्ल में मौजूद था। यह अल्लाह तआ़ला के दिए हुए रिज़्क़ की क़ुदरती ख़ासियतों के ज़रिए, जो अल्लाह की 'फ़ितरत' के हाथों एतदाल पर रहा, सर्द व ख़ुश्क तबई नश्व व नुमा की शक़्ल में ज़ाहिर हुआ और दूसरा पानी पहुंचाने के बेहतर तरीक़े की शक़्ल में, जो असल में कायनात के पैदा करने वाले की दी हुई अक़्ल और सूझ-बूझ और समझ का नतीजा था, पस अह्ले सबा का फ़र्ज़ है कि वे इस खुशऐशी और अम्न व सुकून पर जो उनके वतन ही में बे-मेहनत हासिल है, उसके शुक्र गुज़ार बन्दे बनें, अगर वे इन नेमतों का शुक्र अदा करेंगे और ख़ुदा के रिश्ते को मज़बूत करने के लिए उसकी मर्ज़ी के मताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते

Copyright OfflineDeeniApp

रहेंगे, तो बेशक उन्हें यह समझना चाहिए कि एक ओर उनकी दुनिया की ज़िंदगी के लिए उनको ऐसा उम्दा और पाक-साफ़ वतन हासिल है और दूसरी ओर उनकी हमेशा की ज़िंदगी और आख़िरत की निजात के लिए उनका परवरदिगार बहुत बख़्शने वाला है।

अहले सबा और अल्लाह की नाफ़रमानी

अहले सबा एक मुद्दत तक तो इस दुनिया की जन्नत को अल्लाह की शानदार अमानत और नेमत ही समझते और इस्लाम का दामन थामे हुए अल्लाह के अहकाम का पूरा करना अपना फ़र्ज़ समझते रहे, लेकिन खुशहाली, इंतिहाई ऐशपरस्ती और हर क़िस्म की नेमतों के मिल जाने से धीरे-धीरे उनमें भी वही रद्दी अख़्लाक़ पैदा हो गए, जो उनके पहले की पिछली घमंड में चूर और तकब्बुर वाली क़ौमों में मौजूद थे और यह यहां तक तरक़्क़ी करते रहे कि उन्होंने दीने हक़ को भी छोड़-छाड़ दिया और कुफ़्र व शिर्क की पिछली ज़िंदगी को दोबारा अपना लिया। फिर भी रब्बे ग़फ़ूर (बख़्शने वाले पालनहार) ने फ़ौरन पकड़ नहीं की, बल्कि उसकी भारी रहमत ने मोहलत देने के क़ानून से काम लिया और नबियों ने उनको हक़ के रास्ते पर चलने की हिदयत दी और बताया कि इन नेमतों का मतलब यह नहीं है कि तुम दौलत, सरवत, जाह व हश्मत के नशे में चूर होकर मस्त हो जाओ और न यह कि अच्छे अख़्लाक़ को छोड़ बैठो और कुफ़्र व शिर्क अख़्तियार करके ख़ुदा के साथ बग़ावत का एलान कर दो, सोचो, और ग़ौर करो कि यह राह बुरी है और उसका अंजाम बुरा अंजाम है।

मुहम्मद बिन इसहाक़ इब्ने मुनब्बह की रिवायत के ज़रिए कहते हैं कि इस दौरान उनके पास अल्लाह के तेरह नबी रिसालत का हक़ अदा करने के लिए आए, मगर अन्होंने तनिक भी तवज्जोह न दी और अपनी मौजूदा ऐशपरस्ती को हमेशा की विरासत समझ कर शिर्क और कुफ़्र की बद मस्तियों में मुब्तला रहे।

आखिर तारीख ने खुद को दोहराया और उनका अंजाम भी वही हुआ जो पिछले ज़माने में अल्लाह की नाफ़रमान क़ौमों का हो चुका है।

Copyright OfflineDeeniApp

सैले इरम

चुनांचे अल्लाह तआ़ला ने उन पर दो क़िस्म का अज़ाब मुसल्लत कर दिया, जिसकी वजह से उनके जन्नत जैसे बाग़ बर्बाद हो गए और उनकी जगह जंगली बेरियों, कांटेदार पेड़ और पीलू के पेड़ उगकर यह गवाही देने और इबरत की कहानी सुनाने लगे कि अल्लाह की लगातार नाफ़रमानी और सरकशी करने वाली क़ौमों का यह अंजाम होता है।

पहली सज़ा

हुआ यह कि जिसकी तामीर पर इनको बहुत नाज़ था और जिसकी बदौलत उनकी राजधानी के दोनों तरफ़ तीन सौ वर्ग मील तक ख़ूबसूरत और हसीन बाग़ और सरसब्ज़ व शादाब खेतों और फ़स्लों से चमन गुलज़ार बना हुआ था, वह ख़ुदा के हुक्म से टूट गया और अचानक उसका पानी सैलाब बना हुआ वादी में फैल गया और मआरिब और ज़मीन के उन तमाम हिस्सों पर जिनमें फ़रहत पहुंचाने वाले बाग़ थे, छा गया और उन सबको डुबा करके बर्बाद कर डाला और जब पानी धीरे-धीरे सूख गया तो उस पूरे इलाक़े में बाग़ों की जन्नत की जगह पहाड़ों के दोनों किनारों से वादी के दोनों तरफ़ झाऊ के पेड़ों के झुंड और जंगली बेरों के झुंड और उन पीलू के पेड़ों ने ले ली, जिन का फल बद मज़ा, और कसेलापन लिए हुए होता है।

और ख़ुदा के इस अज़ाब को अह्ले मआ़रिब और क़ौमे सबा की कोई ताक़त न रोक सकी और बांध बांधने में इंजिनियरिंग और मैथेमेटिक्स के फ़न की जिस महारत का जो सबूत उन्होंने दिया था वह उसके टूटने के वक़्त सब बेकार होकर रह गया और अह्ले सबाके लिए इसके अलावा कोई रास्ता बाक़ी न रहा कि अपने प्यारे वतन और बड़े शहर मआरिब और उसके पड़ोस को छोड़कर बिखर जाएं।

क़ुरआन ने इसी सबक़ भरे वाक़िए को बयान करके खुली निगाह वाले और जागते दिल रखने वाले इंसान को नसीहत का यह सबक सुनाया है—

तर्जुमा—*'फिर उन्होंने (क़ौमे सबा ने) उन पैग़म्बरों की नसीहतों से मुंह*

Copyright OfflineDeeniApp

फेर लिया, पस हमने उन पर बाध तोड़ने का सैलाब भेज दिया और उनके दो (उम्दा) बाग़ों के बदले दो ऐसे बाग़ उगा दिए, जो बद मज़ा फलों, झाऊ और कुछ बेरी के पेड़ों के झुंड थे, यह हमने उनकी नाशुक्रगुज़ारी की सज़ा दी और हम नाशुक्र क़ौम ही को सज़ा दिया करते हैं। (34 : 16 - 17)

ग़ौर कीजिए यह सैलाब ज़ाहिरी अस्बाब से किस तरह आया? क्या इसलिए कि 'मआरिब का बांध' पुराना टूट-फूट का शिकार हो गया था? नहीं, क्योंकि अगर ऐसा होता तो जिस क़िस्म के इंजिनियरिंग के माहिरों ने उसको बनवाया था, सबा में उसकी उस वक़्त भी कमी न थी और वे इसके अलावा देश के अलग-अलग हिस्सों में सैंकड़ों बांध बनाते रहते थे, फिर क्या वे उसकी टूट फूट और पुरानेपन का इतना इंतिज़ाम भी नहीं कर सकते थे कि अगर उसको अपनी तबई उम्र पर टूटना ही है तो पानी के ज़ोर को इस तरह कम कर दिया जाए या इसके लिए तामीर में ऐसे इज़ाफ़े कर दिए जाएं कि जिससे यह अचानक टूटकर इस भारी मुसीबत की वजह न बन सकता। फिर यह सैलाब क्यों आया? क्या इसलिए कि इस हक़ीक़त के जान लेने के बावजूद कि यह बांध बहुत जल्द टूट-फूट कर इस भारी तबाही की वजह बनने वाला है, उन्होंने काहिली और सुस्ती से इसकी परवाह नहीं की, तो तारीख की रोशनी में यह भी ग़लत है, इसलिए कि सबा हुकूमत के बारे में जो वक़्त की तारीख़ी गवाहियां मिली हैं, वे यह ज़ाहिर करती हैं कि वे इस बांध की मज़बूती, और हर क़िस्म के हिफ़ाज़ती मामलों के बारे में बहुत मुतमइन थे और बराबर उससे सिंचाई का काम ले रहे थे।

सच तो यह है कि पुरानी और नई तारीख़ें इस हौलनाक तारीख़ी वाक़िए की वजहों के बारे में बिल्कुल ही ख़ामोश हैं और इसलिए ख़ामोश हैं कि सबा पर यह अज़ाब, शक नहीं कि अचानक और उम्मीद के बिल्कुल ख़िलाफ़ आया, जिससे वे ख़ुद भी हैरान व सरासीमा हो कर रह गए और वे इसके सिवा और कुछ न समझ सके कि यह जो कुछ हुआ, अचानक ग़ैबी हाथ से हुआ, क्योंकि बांध की मज़बूती और इंतिज़ाम में देखने में कोई ख़राबी नहीं थी, फिर यकायक बांध का टूट जाना और पानी का भारी बाढ़ की शक्ल में फैल कर, तमाम जन्नतनिशां इलाक़े को तबाह व बर्बाद न कर देना अल्लाह के अज़ाब

Copyright OfflineDeeniApp

के अलावा और क्या हो सकता है। उन्होंने जब जायज़ और पाक खुशऐशी को अय्याशी और बद-अतवारी में बदल दिया, अल्लाह की दी हुई नेमतों का शुक्र अदा करने के वजाए घमंड और ग़ुरूर के साथ नेमतों की नाक़द्री की, नबियों और पैग़म्बरों के बार-बार रुश्द व हिदायत पहुंचाने के बावजूद शिर्क और कुफ़्र पर इसरार किया तो अचानक अल्लाह का अज़ाब उनको आकर तबाह व बर्बाद न करता तो और क्या होता, जैसा कि ऊपर की आयतों में अल्लाह का इर्शाद है।

दूसरी सज़ा

मआरिब के 'पानी के बांध' के टूट जाने पर इन बस्तियों के बाशिंदे बिखर कर दूसरे इलाक़ों में चले गए और कुछ यमन के ही दूसरे इलाक़ों में जा बसे, मगर अल्लाह के अज़ाब की तक्मील अभी बाक़ी थी, इसलिए कि सबा ने सिर्फ़ ग़रूर, सरकशी और कुफ़्र और शिर्क ही के ज़रिए अल्लाह की नेमतों को नहीं ठुकराया था, बल्कि उनको यमन से शाम तक राहत पहुंचाने वाली आबादियों और करवांसरायों की वजह से वह सफ़र भी नापसंद था जिसमें उनको यह महसूस नहीं होता था कि सफ़र की परेशानियां क्या होती हैं और पानी की तक्लीफ़ और खाने-पीने की तक्लीफ़ किस चीज़ का नाम है और क़दम-क़दम पर मीलों तक दोनों तरफ़ ख़ुश्बुओं और फलों के बाग़ों की वजह से गर्मी और तपन की पीड़ा को भी नहीं जानते थे।

उन्होंने इन नेमतों पर अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए बनी इसराईल की तरह नाक-भौं चढ़ाकर यह कहना शुरू कर दिया कि यह भी कोई ज़िंदगी है कि इसांन सफ़र के इरादे से घर से निकले तो यह भी न मालूम हो कि सफ़र की हालत मे है या अपने घर में। वे भी क्या ख़ुशनसीब इंसान हैं जो भारी हिम्मत के साथ सफ़र की हर क़िस्म की तक्लीफ़ उठाते, पानी और खाने-पीने के लिए तक्लीफ़ें सहते और राहत व आराम के सामानों के न मिल पाने की वजह से सफ़र की लज़्ज़त का मज़ा चखते हैं। ऐ काश! इमारा सफ़र भी ऐसा हो जाए कि हम यह महसूस करने लगें कि वतन से किसी दूर की जगह का सफ़र करने निकले हैं और मंज़िल की दूरी की तक्लीफ़ सहते हुए

Maktabah Copyright OfflineDeeniApp

सफ़र और ग़ैर-सफ़र में फ़र्क़ कर सकें।

बदबख़्त और नाशुक्रे इंसानों की यह नाशुक्री थी, जिसकी तमन्नाओं और आरज़ूओं से बेचैन होकर ख़ुदा के अज़ाब को दावत दे रहे थे और उसके बुरे अंजाम से ग़ाफ़िल हो चुके थे।

सबा ने जब इस तरह नेमत की नाशुक्री को आख़िर तक पहुंचा दिया तो अब अल्लाह तआ़ला ने भी उनको दूसरी सज़ा यह दी कि यमन से शाम तक उनकी तमाम आबादियों को वीरान कर दिया, जो नज़दीक-नज़दीक बराबर छोटे-छोटे कस्बों, गांवों, करवां सरायों और तिजारती मंडियों की शक्ल में आबाद थीं और उनके राहत और आराम में किफ़ालत करती थीं और सफ़र की हर क़िस्म की परेशानियों से उनको बचाए रखती थीं और इस तरह पूरे इलाक़े में ख़ाक उड़ने लगी और यमन से शाम तक नव आबादियों का यह सिलसिला वीराने में तब्दील होकर रह गया।

चुनांचे कुरआन मजीद की ये आयतें इसी सच्चाई का एलान करती हैं—

तर्जुमा—*'हमने उनके (मुल्क) और बरकत वाली आबादियों (शाम) के दर्मियान बहुत सी खुली आबादियां क़ायम कर दी थीं और उनमें सफ़र की मंज़िलें (कारवां सराए) मुक़र्रर की थीं और कह दिया था, चलो इन आबादियों के दर्मियान दिन-रात बिना किसी डर और ख़तरे के, मगर उन्होंने कहा, ऐ हमारे परवरदिगार! हमारे सफ़रों (मंज़िलों) के दर्मियान दूरी कर दे और यह कह कर उन्होंने ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। बस हमने उनको कहानी बना दिया और उनको पारा-पारा कर दिया। बेशक इस (वाक़िए) में इबरत (सबक़) की निशानियां हैं सब्र करने वालों और शुक्र गुज़ारों के लिए!'*

(सबा 18 : 19)

तारीख़दां कहते हैं कि सबा के मुक़ाबले में बहुत दिनों से रूमियों की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह वे भी हिन्दुस्तान और अफ़रीक़ा के साथ अरबों की तरह सीधे-सीधे तिजारत करके ज़्यादा से ज़्यादा फ़ायदा उठाएं, मगर अरब किसी तरह इसका मौक़ा नहीं देते थे और तिजारती साहिलों पर क़ब्ज़ा जमाए हुए थे, लेकिन पहली सदी ईसा पूर्व में रूमियों ने एक के बाद एक, मिस्र व शाम पर क़ब्ज़ा कर लिया और अब उनको मौक़ा मिला कि वे

Copyright OfflineDeeniApp

अपने मंसूबे को पूरा करें, लेकिन तिजारती मर्क़ज़ों के लिए जो शाहराह 'इमामे मुबीन' अरबों ने बना रखी थी, वह ख़ुश्की का रास्ता था और गुज़रने वालों के लिए अरबों से वास्ता पड़ना लाज़िमी था और रूमी इन पहाड़ी राहों को पार करने में वैसे भी पेरशानी महसूस करते थे, इसलिए उन्होंने अरबों के डर से बचे रहने के लिए यह किया कि हिन्दुस्तान और अफ़रीका की तिजारत के ख़ुश्की के रास्ते को समुद्री रास्ते में तब्दील कर दिया और लाल सागर में नावों के ज़रिए तमाम माल मिस्र और शाम के बन्दरगाह पर उतारने लगे। नतीजा यह निकला कि तिजारत के इस नए तरीक़े ने यमन से शाम तक सबा की तमाम नव-आबादियों को बर्बाद कर दिया और वहां कुछ ही दिनों में ख़ाक उड़ने लगी और सबा का यह ख़ानदान बिखर कर रह गया। किसी ने शाम की राह ली तो किसी ने ओमान की और किसी ने इराक़ का रुख़ किया तो किसी ने हिजाज़ की ओर, कोई नज्द पहुंचा तो किसी ने बहरैन की राह अख़्तियार की और अह्लेसबा की हुकूमत का शीराज़ा इस तरह बिखर गया कि वे सच में एक कहानी बन कर रह गए और 'फ़-जअलना हुम अहादीस' और 'मज़्ज़क़्नाहुम कुल-ल मुमज़्ज़क़' का सही नक़्शा आखों के सामने आ गया, गोया–

देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो
मेरी सुनो जो गोशे नसीहत नयोश है।

सैले इरम का फैलाव

यह बात भी खुल कर बताने की है कि सैले इरम का यह सानहा और हादसा सारे यमन पर पेश नहीं आया, बल्कि यमन की राजधानी मआरिब और उसके आस-पास के इलाक़ों में सैंकड़ों मील तक इसकी तबाही मचाने वाला असर पड़ा और उस वक़्त सिर्फ़ वही क़बीले वतन छोड़ने पर मजबूर हुए जो इन जगहों पर आबाद थे, अलबत्ता जब दूसरा अज़ाब आया तो पूरे यमन पर असर पड़ा और सबा के बाक़ी क़बीले भी बिखर गए और सबा की हुकूमत का ख़त्मा हो गया।

Copyright OfflineDeeniApp

सबा की मज़हबी हालत

क़ुरआन ने सूरः सबा में सबा की मज़हबी हालत पर जो रोशनी डाली है, उससे यह मालूम होता है कि सबा के ऊंचे तबक़े का मज़हब सूरज परस्ती (सितारा परस्ती) रहा है या सच्ची यहूदियत (यहूदी धर्म यानी मूसा ﷺ का धर्म यानी यहूदी धर्म) जबकि दूसरे तबक़े में सनमपरस्ती क़ौमी मज़हब रहा या ईसाई धर्म, कभी-कभी उनमें नज़र आ जाता है।

कुछ तफ़्सीरी नुक्ते

1. मआरिब और यमन का यह इलाक़ा जिस की तफ़्सील ऊपर गुज़र चुकी है, दुनिया में फ़िरदौस (जन्नत) की नज़ीर (मिसाल) बन गया था और उनके मुल्क की यह सूरते हाल अल्लाह तआ़ला के ख़ास करम पर ही बनी थी इसीलिए क़ुरआन ने इसको अल्लाह की निशानी कहा है—

तर्जुमा—*बिला शुबहा अहले सबा के लिए उनके वतन में अल्लाह की क़ुदरत की अजीब व ग़रीब निशानी थी, दो बाग़ों का सिलसिला—दाहने और बाएं'।*

तर्जुमा—*'शहर है पाक और परवरदिगार है बख़्शने वाला'*, और उसके बाद है—

तर्जुमा—*'पस उन्होंने अल्लाह से मुंह फेरा'*

इन दोनों जुम्लों से यह मालूम होता है कि सबा पहले मुसलमान थे, मगर धीरे-धीरे उन्होंने कुफ़्र अख़्तियार किया, जैसा कि इस आयत से भी ज़ाहिर होता है। 'ज़ालि-क जज़ैनाहुम' (यह है जिसका बदला हमने उन्हें दिया।) (34 : 19)

हज़रत सुलैमान ﷺ के क़िस्से में यह बयान किया जा चुका है कि सबा ने 950 ई० पू० में इस्लाम क़ुबूल किया। सदियों तक उन्होंने इस अमानत को सीने से लगाए रखा, लेकिन पिछली क़ौमों की तरह उन्होंने मुंह फेरना शुरू कर दिया, तब अल्लाह के पैग़म्बरों ने खुद आकर या अपने नायबों के ज़रिए उनको हिदायत की तरफ़ बुलाया, मगर उन्होंने भी बनी इसराईल की तरह अल्लाह

Copyright OfflineDeeniApp

की नेमतों को ठुकराया, तब हज़रत ईसा ﷺ से एक सदी पहले अल्लाह की ओर से सैले इरम की तबाही का अज़ाब आया और उसने सबा के ख़ानदान के टुकड़े-टुकड़े कर दिए।

नतीजे और सबक़

अल्लाह ने क़ुरआन मजीद में वाज़ व नसीहत के चार तरीक़े बयान फ़रमाए हैं—

1. *तज़्क़ीर बिआलाइल्लाह-* (अल्लाह की नेमतों से याद देहानी) यानी अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों पर जिन नेमतों की अरज़ानी फ़रमाई है उनको याद करके अल्लाह के हुक्मों की तरफ़ मुतवज्जह करना। सूरः आराफ़ में इर्शाद है—

तर्जुमा—*'पस अल्लाह की नेमतों को याद करो और ज़मीन में फ़साद करते मत फिरो।'* (9 : 94)

2. *तज़्क़ीर बिअय्यामिल्लाह-* अल्लाह के दिनों या ज़मानों से याद देहानी, यानी उन पिछली क़ौमों के हालात बयान करके नसीहत व इबरत दिलाना, जिन्होंने अल्लाह की इताअ़त व फ़रमांबरदारी की वजह से कामियाबी और दोनों दुनिया की फ़लाह हासिल की और या सरकशी और ढिठाई इंतिहा पर पहुंच कर हलाकत व तबाही मोल ली और अल्लाह के अज़ाब को अपने लिए ज़रूरी कर दिया या दूसरे लफ़्ज़ों में क़ौमों की तरक़्क़ी व पस्ती को पेश करके इबरत का सामान मुहय्या करना। सूरः इब्राहीम में है—

तर्जुमा—*'और ऐ पैग़म्बर! इनको नसीहत कीजिए क़ौमों के ऊरूज व ज़वाल (तरक़्क़ी व पस्ती) को याद दिला कर।'* (15 : 5)

3. *तज़्क़ीर बिमा बादल मौत-* यानी बरज़ख़ और क़ियामत के हालात सुना कर इबरत दिलाना, सूरः कह्फ़ में है—

तर्जुमा—*'पस क़ुरआन के ज़रिए नसीहत करो उस शख़्स को जो अल्लाह की धमकी यानी मौत के बाद के अज़ाब से डरता है'* (50-45)

पस क़ौमे सबा का यह वाक़िया 'तज़्किरा बि अय्यामिल्लाह' से ताल्लुक़ रखता है और हमको यह सबक़ देता है कि जब कोई क़ौम ऐश व राहत और

Copyright OfflineDeeniApp